परिमार्जित संस्करण

# बुद्ध की तलाश में चीनी बौद्ध-यात्री

# फाह्यान

## की भारत यात्रा

लेखक : फाह्यान

अनुवाद : जगन्मोहन वर्म्मा

संपादक : शांति स्वरूप बौद्ध


प्राक्कथन

**डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह**


सम्यक प्रकाशन

# बुद्ध की तलाश में चीनी बौद्ध-यात्री

# फाह्यान

## की भारत यात्रा

(ईसवी 399-414)

(परिमार्जित संस्करण)


मूल लेखक

**भिक्खु फाह्यान**

अनुवादक

**जगन्मोहन वर्म्मा**

संपादक

**बौद्धाचार्य शान्ति स्वरूप बौद्ध**



**सम्यक प्रकाशन**

प्रथम सम्यक संस्करण : 2017 (बुद्धाब्द 2562)
द्वितीय सम्यक संस्करण : 2019 (बुद्धाब्द 2564)
तृतीय सम्यक संस्करण : 2022 (बुद्धाब्द 2567)

ISBN : 978-93-89285-07-9

प्रकाशक : सम्यक प्रकाशन
32/3, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली–110063
दूरभाष : 9810249452, 9818390161
Email: hellosamyak1965@gmail.com
Web : www.samyakprakashan.in

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

मूल्य : 250 रुपए

अनुवादक : चीनी बौद्ध-यात्री फाह्यान की भारत यात्रा
मूल लेखक : भिक्खु फाह्यान
अनुवादक : जगन्मोहन वर्म्मा
संपादक : शान्ति स्वरूप बौद्ध
आवरण : शान्त कला निकेतन
शब्दांकन : संदीप आर्ट एण्ड ग्राफिक्स

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट प्रिन्टर्स, नई दिल्ली

## समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है पुस्तक के मूल लेखक एवं

**प्रसिद्ध चीनी बौद्ध-यात्री पूज्य भिक्खु फाह्यान जी** के चरणों में जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर भारत स्थित बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा की और इस यात्रा से संबंधित अपने अनुभवों को चीनी भाषा में लिपिबद्ध करके ऐसा प्रबंध कर दिया कि जब भारत से बौद्ध विलुप्त हो जाए तो इस जैसी पुस्तकों के माध्यम से उसकी पुर्नस्थापना आसानी से हो सकेगी।

## आभार

इस पुस्तक के मूल अनुवादक
श्रद्धेय जगन्मोहन वर्म्मा जी
के प्रति आभार व्यक्त करते हुए
यह पुस्तक हम अपने पाठकों
के हाथों में सौंप रहे हैं।

किया है। भारत की प्राचीनतम भाषा पालि और संस्कृत से अनुवाद करने के साथ इन भाषाओं में स्वतंत्र ग्रंथ लेखन का कार्य भी कराया गया है।

इसलिए हमारे पास यह प्रामाणिक अनुभव है कि अनुवाद का कार्य करते समय एवं उनका संपादन करते/करवाते समय किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं। जबकि चीनी भाषा दुनिया की सबसे कठिन भाषाओं में शुमार मानी जाती है। चीनी भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद का जटिल कार्य संभव बनाकर माननीय जगन्मोहन वर्म्मा जी ने जिस कालजयी रचना का सृजन किया है, यह कार्य हर दृष्टि से सराहनीय है और अभिनंदनीय है।

हाल ही में हमने इस पुस्तक का एक रिप्रिंट देखा जिसे दिल्ली के ही एक प्रकाशक ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक को देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ और दुख भी हुआ। इस दुख का कारण कापी राइट का कारण नहीं था, बल्कि यह था कि इस पुस्तक का प्रकाशन प्रथम का करीब सौ वर्ष पूर्व सन् 1918 में हुआ था। उन दिनों बौद्ध धर्म से संबंधित साहित्य-शब्द और बौद्ध विद्या के विद्वान बहुत कम थे। इसलिए बौद्ध धर्म और दर्शन का भारत की जनता ही नहीं वरन् विद्वानों को भी खास ज्ञान न था। इस प्रकार के अभाव में बौद्धों की शब्दावली से बौद्ध विद्वान तक अनभिज्ञ थे। गाहे-ब-गाहे उनकी रचनाओं में अथवा अनुवादों में ऐसे शब्द अनायास ही आ धमकते थे जो बौद्ध मान्यताओं, अवधारणाओं से मेल नहीं खाते। महत्त्वपूर्ण ग्रंथ होने के बावजूद भी इस ग्रंथ में ऐसे असंगत शब्दों की भरमार है जो बौद्ध मान्यताओं से टकराते हैं। जबकि इस ग्रंथ का अधिकांश भाग बौद्ध इतिहास और पुरातत्व से संबंधित है। यह भी देखने में आया कि अनेक स्थानों पर बौद्ध पारिभाषिक शब्दों की सर्वथा अनुचित व्याख्याएं प्रयुक्त हो गई हैं। इन सब बातों के अतिरिक्त इस बात की भी अनदेखी नहीं की जा सकती की आज से सौ वर्ष पूर्व की वर्णन शैली और भाषा वर्तमान परिवेश में सम्यक परिमार्जन की मांग करती है। इस पुस्तक का रिप्रिंट प्रकाशित करने वाले यदि ये सावधानियां नहीं बरतते हैं तो यह तो प्रकाशन-धर्मिता की घोर उपेक्षा जान पड़ता है जो साहित्यिक अपराध की श्रेणी में भी आता है।



आज भारत का का सामान्य पाठक यह माने बैठा है कि भारत के इतिहास का बौद्ध धर्म के साथ कोई रिश्ता-नाता नहीं है। इस मिथ्या धारणा को आज चीनी यात्रियों के यात्रा विवरण बहुत मजबूती और प्रमाणिकता के साथ धराशायी करते हैं। तमाम चीनी यात्रियों के यात्रा विवरण पूरी ताकत के साथ यह तथ्य स्थापित करते हैं कि भारत वर्ष का गौरवपूर्ण अतीत बौद्धदर्शन और बौद्धधर्म के अलावा कुछ भी नहीं है। इस तथ्य से भारतवर्ष के उन तथाकथित महान इतिहासकारों का झूठ भी पकड़ में जाता है जो गला फाड़-फाड़कर भारत के इतिहास को षड्यंत्रपूर्ण तरीके से बुद्ध और बौद्ध धर्म से बचकर लिखते आए हैं। इस विषय में हम चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान के अयोध्या वर्णन का संज्ञान ले सकते हैं। ह्वेनसांग के समय तक बौद्ध धर्म ध्वस्त किया जा चुका था। मगर फिर भी अयोध्या के वर्णन से ईमानदार इतिहासकारों और साहित्यकारों द्वारा सच्चाई जानने के बाद तो दिल दहले बिना नहीं रह सकता।

फाह्यान के अयोध्या के यात्रा विवरण में जो लिखा है, उसे बहुत गंभीरतापूर्वक पढ़ने की जरूरत है।

प्रसिद्ध चीनी बौद्ध यात्री सुएनच्वांग भी बुद्ध दर्शन की खोज में भारत आया था। उसने अयोध्या के बारे में कुछ अधिक विवरण दिया है। सुयेनच्वांग हर्षवर्धन नामक 14वें अध्याय में वे बहुत विस्तारपूर्वक लिख गए हैं। हमारे पाठकों को इस अध्याय का भी बहुत लगन के साथ अध्ययन करना चाहिए।

संस्कृत भाषा को संसार की सबसे प्राचीन यानी पालि-प्रकृत भाषा से भी प्राचीन भाषा बताने वाले भाषाविदों के लिए खुशखबरी है कि किसी भी चीनी यात्री को चौथी शताब्दी से सातवीं शताब्दी तक, जिस दौरान करीब सौ चीनी यात्री भारत यात्रा पर आए थे, संस्कृत भाषा में कोई भी शिलालेख या धम्मस्तंभ लेख उन्हें नहीं मिला था। इस पुस्तक में कुछ संस्कृत ग्रंथों के नामों का वर्णन जरूर आया है ये वे ग्रंथ हैं जो बौद्ध धर्म के विध्वंस के पश्चात त्रिपिटक को Replace करने के लिए लिखे गए थे। इस वर्णन के पश्चात सुएनच्वांग को डाकुओं द्वारा घेरने और उनकी बलि चढ़ाने का प्रयास करते और फिर उनसे मुक्त होने का रोचक वर्णन दिया गया है।

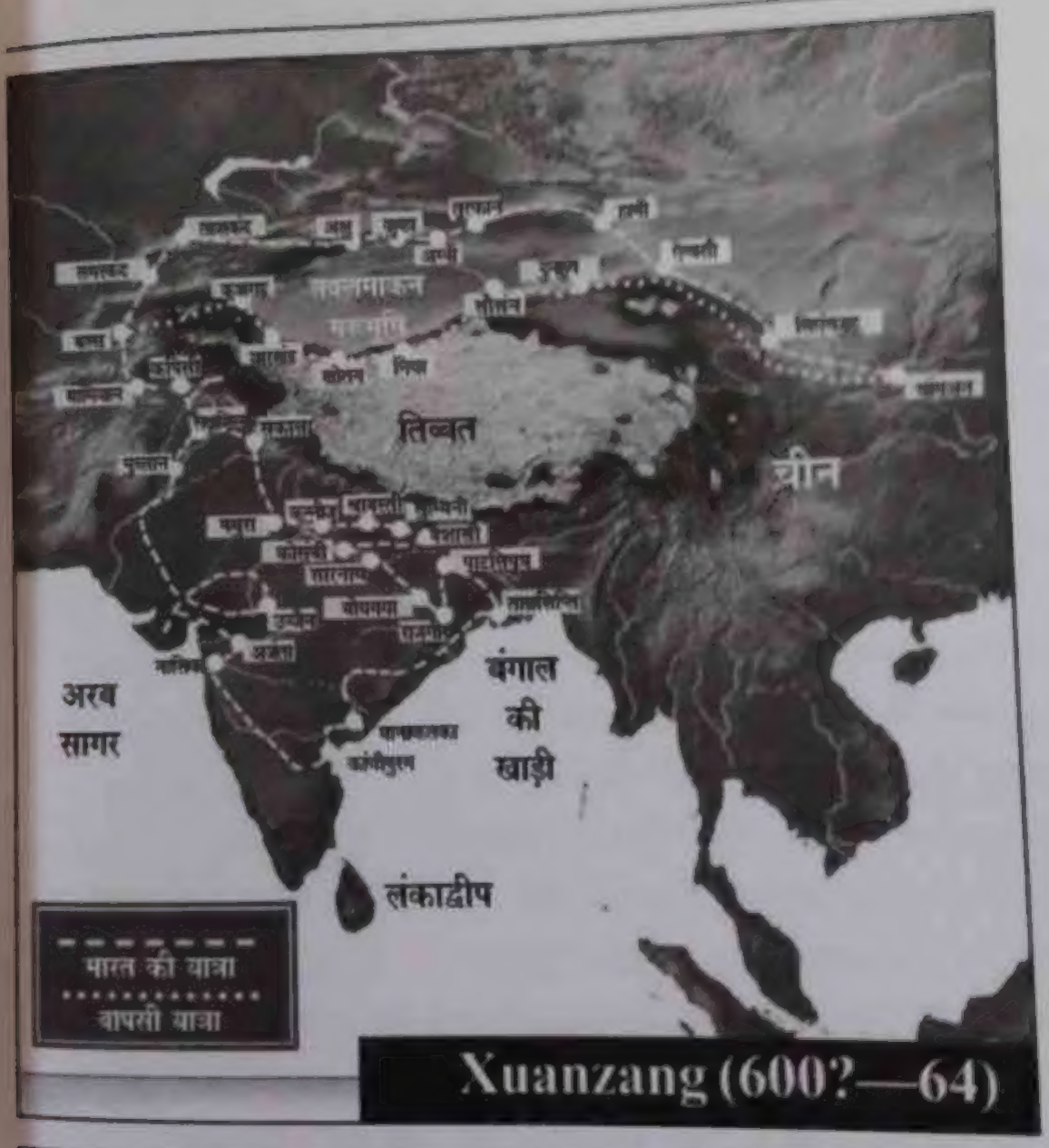


Xuanzang (600?—64)

'चीनी बौद्ध यात्री सुएनच्वांग की भारत यात्रा' से यहां-वहां ब्राह्मणी ग्रंथों और पात्रों का वर्णन आया है। इससे हमारे विज्ञ पाठकों को भ्रमित होने की जरूरत नहीं है। कारण यह है कि ये वर्णन अनुवादक महोदय ने अपने मत को व्यक्त करते वक्त लिख मारे हैं। पौराणिक संदर्भों को इस प्रकार रखा जाता है ताकि उन्हें बुद्ध से पूर्व का सिद्ध किया जा सके। यह इस देश की असली विरासत को हड़पने का कुत्सित प्रयास भर है। जिसे अब भारत के लोग आहिस्ता-आहिस्ता ही सही, मगर खूब अच्छी तरह समझने लगे हैं।

विद्वान लेखक की इस विलक्षण पुस्तक को तथा उनके हिन्दी अनुवाद को आज के समय में भी प्रासंगिक बनाए रखने के दायित्वबोध के कारण हमें विवश होकर इसे संपादित रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लेना पड़ा है। यह संपादन कार्य कैसा बन पड़ा है, इसका निर्णय तो विषय के पारंगत विद्वान और हमारे सुधी पाठक ही कर पाएंगे। इसी आशा और अपेक्षा के साथ यह पुस्तक संपादित रूप में आपके हाथों में प्रस्तुत है।

इस पुस्तक के द्वितीय संशोधित संस्करण के प्रकाशन के समय वर्तमान जगत के मूर्धन्य पुराविद और भाषा विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह जी की ओर से एक शोधपरक व सारगर्भित प्राक्कथन प्राप्त हुआ, उनके इस विशेष अवदान के लिए हम उनके प्रति मनपूर्वक आभार व्यक्त करते हैं।

आशा है कि हमारे सुधी पाठकगण इस संशोधित संस्करण का पहले से अधिक स्वागत करेंगे और नए-नए विषयों पर प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए हमें प्रोत्साहित करेंगे।

**॥ भवतु सब्बमंगलं ॥**

**–शांति स्वरूप बौद्ध**

16.07.2019

[illegible]

प्राक्कथन :

# पुस्तक के बारे में

फाह्यान ने चंद्रगुप्त द्वितीय के राज्य-काल में भारत की यात्रा की थी। अपनी यात्रा में उन्होंने तकरीबन 30 देशों का भ्रमण किया। वे चीनी यात्री थे। उनका जन्म चीन के उयंग नामक स्थान पर हुआ था तथा उनके बचपन का नाम कुङ था। बौद्ध ग्रंथों के गहन अध्ययन एवं बौद्ध-स्थलों को देखने की लालसा से वे चीन से चलकर भारत पहुंचे थे। वे स्थल मार्ग से भारत आए और समुद्री मार्ग से वापस गए।

फाह्यान भारत के बारे में जो समझे तथा देखे, वह उनके यात्रा-विवरण में दर्ज है। यात्रा-विवरण के बारे में जो विवाद है, वह यह है कि उन्होंने यह यात्रा-विवरण अपनी कलम से लिखे या नहीं। जो भी हो, इतना तो तय है कि फाह्यान का यात्रा-विवरण भारत के इतिहास, विशेषकर बौद्ध भारत के इतिहास के लिए बेहद जरूरी सामग्री उपलबध कराता है।

फाह्यान का यात्रा विवरण मूलतः चीनी भाषा में है। इसका बेहतरीन अंग्रेजी अनुवाद जेम्स लेगी महोदय ने किया है। जेम्स लेगी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में चीनी भाषा और साहित्य के पहले प्रोफेसर थे। ऐसी हालत में यह उम्मीद की जानी चाहिए कि एक चीनी भाषा और साहित्य के प्रोफेसर ने चीनी भाषा में लिखे गए यात्रा-विवरण का अनुवाद अच्छा किया होगा। जेम्स लेगी ने अपने अनूदित ग्रंथ के अंत में यात्रा-विवरण के मूलपाठ भी दिए हैं।

बात 1918 की है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से फाह्यान का हिंदी में यात्रा-विवरण प्रकाशित हुआ। इसके अनुवादक जगन्मोहन वर्म्मा थे। जगन्मोहन वर्म्मा बस्ती जिले के रहने वाले थे। उन्हें अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू की अच्छी जानकारी थी। बाद में उन्होंने पालि और प्राकृत का भी अध्ययन किया। कुछ दिनों तक वर्म्मा जी कालाकांकर रियासत में रहे और हिंदुस्तान के संपादन विभाग में काम किया। बाद में वे काशी आए तथा नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़ गए। यहीं वे 'हिंदी शब्द सागर' के सहायक संपादक नियुक्त हुए और अंत में काशी में ही चल बसे।

जगन्मोहन वर्म्मा चीनी भाषा से वाकिफ नहीं थे। संयोग से एक चीनी श्रमण जिनका नाम थाङ-हुई था, काशी आए और वर्म्मा जी के सान्निध्य में

# प्रकाशकीय (द्वितीय संस्करण का)

कभी-कभी कोई मामूली-सी बात बहुत महान घटना को जन्म देने वाली सिद्ध हो जाती है। मेरी दृष्टि में इस अति महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की रचना का कारण भी एक छोटी-सी ही घटना रही है। हुआ यूं कि एक बार कुशीनगर में बर्मी बुद्ध विहार के अध्यक्ष बर्मी मूल के पूज्य भंते चंद्रमणि महास्थेरो जी के पास बाइ-हुइ नाम का एक चीनी उपासक आया। वह असंख्य चीनी और तिब्बती यात्रियों की भांति ही भारत में रहकर संस्कृत भाषा का ज्ञान अर्जित करने आया था। भंतेजी ने इसी चीनी शोधार्थी को अपने पूर्व परिचित सम्यक संस्कृत विद्वान जगन्मोहन वर्म्मा जी के पास भेजा। अनुमान है कि इन दिनों जगन्मोहन वर्म्मा जी वाराणसी में अध्यापन कार्य कर रहे थे।

शोधवृत्ति के धनी माननीय जगन्मोहन वर्म्मा जी अपने चीनी शिष्य को संस्कृत भाषा का पाठ पढ़ाते-पढ़ाते स्वस्फूर्त भावना से चीनी भाषा में पारंगत हो गए। इनकी ज्ञान-साधना की महानता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने चीनी भाषा को इतनी दक्षतापूर्वक साध लिया कि वे कम समय में ही चीनी भाषा से इस ग्रंथ का अनुवाद करने में पूर्णता सफल रहे। इतना ही नहीं उन्होंने इस ग्रंथ के अलावा 'चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनयांग की भारत यात्रा' नाम से एक दूसरा अनुवाद भी प्रकाशित कराया था। हम सम्यक प्रकाशन के ऐसे संचालक हैं, जिनका नाम आंबेडकरी-बौद्ध आंदोलन से संबंधित सभी प्रकाशकों की तुलना में सबसे अधिक अनुवाद कराने वाले संस्थान के रूप में अग्रणी है। हमने न केवल पालि भाषा, संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, बर्मी आदि भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करवाकर प्रकाशित किए हैं। इसके अतिरिक्त हमने हिंदी भाषा से मराठी, गुजराती, पंजाबी, तेलगू, बांगला, असमिया-अरुणाचली, शिंगफो आदि भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं—अंग्रेजी, सिंहली, नेपाली और बर्मी भाषाओं में भी एक सौ के करीब बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद प्रकाशित

संस्कृत का अध्ययन करने लगे। वे वर्मा जी के पास अध्ययन के सिलसिले में
साल भर से अधिक रहे। वर्मा जी ने उसी चीनी छात्र से चीनी भाषा सीखी
जो उनके पास संस्कृत सीखने के लिए आए थे। जब जगन्मोहन वर्म्मा चीनी
भाषा के जानकार हुए, तब चीनी यात्रियों के यात्रा-विवरणों का हिंदी भाषा में
अनुवाद करने की बात उनके मन में आई। परिणामतः एक दिन वे फाह्यान के
यात्रा-विवरण को हिंदी में बखूबी अनुवाद करने में सफल हुए। यही अनुवाद
1918 में नागरी प्रचारिणी सभा से छपा।

जगन्मोहन वर्म्मा मौलिक अनुवाद थे। उन्होंने जेम्स लेगी जी के अंग्रेजी
अनुवाद का अंधानुकरण नहीं किया, बल्कि यात्रा-विवरण के मूलपाठ से भी
मिलान कर उसका हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत किया। मिसाल के तौर पर, जेम्स
लेगी ने अपने अंग्रेजी अनुवाद में आले से शांचे की दूरी तीन योजन बताई
है, जबकि फाह्यान ने मूलपाठ में यह दूरी दस योजन बताई है। वर्म्मा जी ने
जेम्स लेगी की ऐसी अशुद्धियों को मूलपाठ से मिलान कर अपने हिंदी अनुवाद
में संशोधित रूप में प्रस्तुत किया। अनेक जगहों पर अपनी मौलिक टिप्पणियां
भी दीं। मगर इतना जरूर है कि वर्म्मा जी भी हिंदी अनुवाद में कई जगह हिंदू
मानसिकता के शिकार हो गए हैं। मिसाल के तौर पर, वर्मा जी ने जेम्स लेगी
के Make offerings का हिंदी अनुवाद पूजा किया है, जबकि बौद्ध धम्म के
अनुसार इसे श्रद्धाभाव संप्रेषण होना चाहिए। कारण कि पूजा मूलतः हिंदू धर्म
र्म के लिए रूढ़ है।

खुशी की बात है कि फाह्यान के इस यात्रा-विवरण का संपादन शांति
स्वरूप बौद्ध ने किया है। वे बौद्ध साहित्य के गंभीर अध्येता और बौद्ध परंपरा
के विद्वान भी हैं। पुस्तक के संपादन में उनकी नजर ऐसे स्थलों पर गई है, जहां
यात्रा-विवरण का हिंदूकरण हुआ है। हमें आशा है कि बौद्ध नजरिए से संपादित
किया गया यह यात्रा-विवरण पाठकों-अध्येताओं के लिए उपयोगी साबित होगा।

**–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह**
प्रोफेसर, हिंदी विभाग (स्नातकोत्तर केंद्र)
एस.पी. जैन कॉलेज, सासाराम
(बिहार) 82111

# मूल भूमिका

पिछले छह वर्षों की बात है कि एक चीनी श्रमण जिसका नाम वाङ-हुई था, काशी में संस्कृत पढ़ने आया था। श्रद्धेय श्रीचंद्रमणि भिक्खु ने मेरे पास उसे संस्कृत पढ़ने के लिए भेजा। वह मेरे पास साल भर से अधिक रहा। उसे संस्कृत पढ़ाते हुए मैंने चीनी भाषा का अभ्यास करना प्रारंभ किया। पहले तो कुछ उच्चारण करके अभ्यास किया पर जब मैंने देखा कि चीनी भाषा में वर्णक्रम नहीं है, जिससे शब्दों का ठीक उच्चारण हो सके, किंतु प्रत्येक सत्व और भाव के लिए पृथक-पृथक संकेत नियत हैं, तो मैंने उच्चारण को छोड़ दिया और संकेतों का ही अभ्यास करना प्रारंभ किया। इस प्रकार थोड़े समय में जितना अभ्यास कर सका मैंने संकेतों का अभ्यास किया।

चीनी भाषा यद्यपि हमारे पूर्वजों को सुगम रही हो क्योंकि हम देखते हैं कि भारतवर्ष के अनेक बौद्धाचार्यों ने जैसे आचार्य कश्यप मातंग, धर्मरक्षक, कुमार जीव, बुद्धभद्र इत्यादि ने भारतवर्ष से चीन देश में जाकर वहां की भाषा ही का ज्ञान नहीं प्राप्त किया था, किंतु अनेक धर्म-ग्रंथों का अनुवाद भी वहां की भाषा में किया था जिनका मान अब तक वहां के भिक्खुसंघ में है; तो भी वह हमारे लिए एक अद्‌भुत भाषा है। वहां के शब्द प्रायः सबके सब एकाच हैं, पर लिपि से उनके उच्चारण का कुछ भी न तो संबंध ही है और न लिपि से उनके उच्चारण का ज्ञान ही हो सकता है। उनकी लिपि चैत्रिक है। प्रत्येक भाव और सत्व के लिए पृथक-पृथक संकेत है। ये संकेत चित्रलिपि के विकारभूत हैं। एक ही भाव के लिए चाहे शब्द में भेद भले ही पड़े पर संकेत में भेद नहीं है।

इन कठिनाइयों पर भी मुझसे जहां तक हो सका मैंने अभ्यास किया और इच्छा थी कि यदि चीनी भाषा का कोई कोश मिल जाता तो और अभ्यास बढ़ा लेता। पर दुर्भाग्यवश कोई ऐसा कोश नहीं मिल सका।

जिस समय वाङ-हुई मेरे पास थे उस समय मैंने यह निश्चय किया था कि चीनी यात्रियों के यात्रा विवरणों का हिंदी भाषा में अनुवाद करूं और यदि कोई प्रकाशक मिले तो उनका अनुवाद अंग्रेजी में भी करूं। पर उस समय कोई प्रकाशक न मिला और मेरा यह निश्चय मेरे मन ही में रह गया। श्रमण वाङ-हुई भी मेरे पास से चले गए।

[illegible] प्रयागवासी सभा ने माननीय मुंशी देवीप्रसाद जी मुंसिफ जोधपुर की [illegible] से ऐतिहासिक ग्रंथमाला निकालने का विचार किया और फाहियान का [illegible] अनुवाद प्रकाशित करने का निश्चय किया। इसके अनुवाद करने का भार [illegible] मुझे दिया गया। सयोग से जो प्रति मुझे मिली उसमें लेगी महोदय का अनुवाद [illegible] और अत में मूल भी था। मूल को देख मेरा पूर्व संकल्प फिर जाग्रत हो आया [illegible] और वैसे मूल से अनुवाद प्रारंभ किया। यद्यपि मैं अंग्रेजी का अनुवाद करना [illegible] से बीच बाच में कहीं कहीं छोड़ा डाल देता पर मैंने मूल से ही अनुवाद करना उचित [illegible] समझा। ऐसा करने में यद्यपि मुझे श्रम अधिक पड़ा तथापि इसमें और अंग्रेजी के अनुवाद में जो भेद है उसे वे ही पाठक अनुमान कर सकेंगे जिन्होंने अंग्रेजी के अनुवाद को व तदाश्रित भाषानुवादों को देखा होगा।

इस अनुवाद में मैंने लेगी महोदय और बील के अंग्रेजी अनुवादों से तथा [illegible] महाशय के बंगला अनुवाद से सहायता ली है जिसके लिए मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

इस अनुवाद में अंग्रेजी अनुवाद से बहुत अंतर दिख पड़ेगा, क्योंकि [illegible] अनुवाद को चीनी भाषा के मूल के अनुसार ही जहां तक हो सका है करने [illegible] की चेष्टा की है। अनेक स्थलों पर विरोध का हेतु भी टिप्पणी में दे दिया है। इसमें संदेह नहीं कि यदि मैं यह अनुवाद उस समय करता जब श्रमण वाड्मय [illegible] की यथा उपस्थिति थे तो इसमें मुझे बड़ी सुगमता होती और अनुवाद भी अच्छा होता। पर फिर भी मैंने अनुवाद को यथातथ्य करने में कुछ कमी नहीं की है। अनुवाद के प्रारंभ में एक उपक्रम है जिससे पाठकों को इसका अनुमान हो जाएगा कि फाहियान किस मार्ग से भारतवर्ष आया, उसमें यूरोपीय विद्वानों का क्या मत है और मेरा मत से उस क्या उत्तर है। अंत में अनुवाद में आए हुए उपयोगी शब्दों की अकारादि क्रम से एक सूची भी लगा दी है जिसमें बौद्ध धर्म संबंधी कोशों तथा अन्य ग्रंथों की यथोचित व्याख्या व विवरण दे दिया गया है।

इतने पर भी यदि कुछ त्रुटि रह गई हो, तो पाठकों से प्रार्थना है कि वे उसको सूचना मुझे देने की कृपा करें जिससे उसका सुधार दूसरे संस्करण में कर दूँ।

[illegible]

[illegible]

—सत्यकेतु

[illegible]

सन् 1935

पुरुष चीनी बौद्ध यात्री 'फाहियान' भारत पहुंचने के रास्ते में
हिमालय की दुर्गम घाटियों से गुजरते हुए

# विषय सूची


समर्पण ...
आभार ...
प्रकाशकीय ...
पुस्तक के बारे में ...
कुछ पृष्ठभूमि ...
उपक्रम ...

1 पाषाण ... 83
2 अनशन और रूप ... 85
3 खतन ... 86
4 मीरन और जीहन ... 88
5 कीला व कैकय ... 89
6 तन वा हाद ... 90
7 नदी पार करना ... 91
8 उद्यान उत्सव ... 93
9 सुहाना उत्सव ... 95
10 अधार ... 95
11 नक्षत्रिका ... 97
12 कुमार ... 97
13 ग्राम व नगरहार ... 100
14 देवकन्या का स्वप्न जागे और कपड़ा उत्सव ... 102
15 सौर व पंजाब ... 103
16 सहार ... 103
17 स्वप्नाय ... 104
18 अलिन्दक ... 105
19 ग्रामों व ग्राम ... 106
20 कलाकार ... 110
21 देवता उद्यानपाल और उद्यानों व उद्यानोत्सव ... 16

22 कोशी-उत्सव ... 83
23 गयागाम और गयासुर ... 86
24 महापरिनिर्वाण स्थान ... 88
25 वैशाली ... 89
26 आनंद का पाणिग्रहण स्थान ... 90
27 पाटलिपुत्र ... 91
28 राजगृह ... 93
29 गृध्रकूट पर्वत ... 95
30 सप्तपर्णी गुफा ... 95
31 गया ... 97
32 सम्राट अशोक ... 97
33 कुक्कुटपाद ... 100
34 वाराणसी ... 95
35 दीक्षाएं ... 96
36 पाटलिपुत्र में खलल और विश्वप्रत्यूषन ... 103
37 यात्रा और राष्ट्रीयमार्ग ... 104
विहार यात्रा ... 105
38 विहार पर्व ... 106
39 एक अद्भुत का दर्शन ... 110
40 यात्रा का अंत ...
उपसंहार ...
परिशिष्ट ...


# उपक्रम

ईसा के जन्म से कई शताब्दी पहले ही से चीन देश में भारत के धर्म, नीति, साधना आदि की ख्याति फैल गई थी। यह ख्याति मध्यएशिया पार्थी या यूनानी किसके द्वारा पहले हुआ था यह अब तक नहीं पता है। सु मा चीन' नामक लेखक ने सबसे पहले ईसा के जन्म से एक शताब्दी पूर्व अपने इतिहास में भारतीय के बुद्धों का उल्लेख किया है। इस समय चीन देश में बौद्ध धर्म का अधिक प्रचार नहीं था। इससे स्पष्ट नहीं कि सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के लिए प्रचारकों, शिक्षकों को पश्चिम एशिया में धर्म प्रचारार्थ भेजा था और वे लोग प्रचार कार्य में बहुत कुछ सफल मनोरथ भी हुए थे।

बौद्ध धर्म की उदार नीति की कथा चीन देश में जितना फैलती गई और ईसा के जन्म से 67 वर्ष पश्चात चीन के सम्राट मिंगटी ने भारतवर्ष से बौद्ध आचार्यों को बुलाने के लिए अपने दूत भेजे। इन कथाओं पर लोग

---

1 सम्राट अशोक ने अपने राज्य काल में लोककल्याण की दान भावना के प्रभावित होकर अपने देश के समीपवर्ती देशों में धर्म प्रचारक दल भेजे थे। इन देशों के प्रमुख भिक्षुओं के नाम तथा उनके द्वारा जो देश धर्म प्रचार के लिए निर्धारित हुए प्रसिद्ध ग्रंथ 'महावंश' और उसके मूल के बौद्ध ग्रंथ 'दीपवंश' में इस प्रकार दर्शाए गए हैं। 1 मध्यांतिक को कश्मीर तथा गांधार देश, 2 महारक्षित को यवन देश, 3 मांझिम को हिमालय क्षेत्र, 4 धर्मरक्षित को अपरान्तक भूखण्ड, 5 महाधर्मरक्षित को महाराष्ट्र, 6 महादेव को महिष मण्डल, मैसूर, 7 रक्षित को वनवासी, 8 सोण तथा उत्तर को स्वर्ण भूमि क्षेत्र, 9 महेंद्र व संघमित्रा लंकाद्वीप। इन दोनों को पश्चिम एशिया में धर्मप्रचारार्थ भेजा गया और ये लोग प्रचार कार्य में बहुत कुछ सफल भी हुए थे। सम्पादक

2 चीनी गाथा में उल्लेख है कि सम्राट मिंगटी ने सन् 61 ई. में स्वप्न देखा कि एक स्वर्ण कलेवरधारी पुरुष आकाश में उड़ते हुए महल में आ रहा है। चीनियों ने इस स्वप्न का फल पूछा तो बताया गया कि पश्चिम में बुद्ध नामक एक देवता है। इस भारतीय देवता ने स्वप्न में सम्राट से एक विहार और कई राजकर्मचारियों को उसके लेने और पहुंचाने भेजा। वे लोग भारत आए और वे ग्रंथ तथा दो श्रमणों को लेकर चीनी राजकुमार से बौद्ध धर्म स्वीकार करवाया। दो श्रमणों ने उसके लिए एक महाविहार बनवा दिया और अपने साथ लाए ग्रंथों का अनुवाद कार्य प्रारंभ कर दिया। यह मंदिर 'श्वेत अश्व विहार' कहलाया।

[illegible] कर लिया कि मैं अपने पिता को [illegible] [illegible] [illegible] का अंतिम संस्कार कर फिर अपने विहार को लौट गया।

एक समय की बात है कि [illegible] 10 श्रामणेरों (श्रामणेर) के साथ कुछ 'विहार' के खेत में धान काटता था। इसी बीच कुछ चोर खेत में पहुंचे और काट [illegible] खेत में ही डटा रहा। [illegible] जितना ही चाहते हो तो [illegible] हो सके उतना ले जाओ। पर पहले जन्म में दान न देने का ही यह फल है कि तुम इस जन्म में दरिद्र हो गए। अब इस जन्म में तुम दूसरों की चोरी करते फिरते हो, अगले जन्म में इससे अधिक दुख पाओगे [illegible] मांगकर दुख भोगता है।" यह कह कर [illegible] अपने साथियों के साथ [illegible] विहार में चला आया। उनकी बातों का चोरों पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे सबके सब खेत में ही छोड़ गए और उन्होंने धान को हाथ से भी न छुआ। [illegible] के [illegible] भिक्षु [illegible] प्रशंसा करने लगे।

'श्रामणेर' अवस्था समाप्त कर [illegible] ने 'उपसम्पदा' (भिक्षु बनने का संस्कार) ग्रहण की। उस समय उनका नाम 'फाह्यान' पड़ा। चीनी भाषा में 'फा' का अर्थ 'धर्म', 'विधि' और 'हियान' का अर्थ 'आचार्य', 'रक्षक' होता है। अतः 'फाह्यान' का अर्थ हमारी भाषा में 'धर्मगुरु' होता है। धर्म और दर्शन की शिक्षा ग्रहण कर जब 'फाह्यान' 'त्रिपिटक' ग्रंथों का अध्ययन

---

1. [illegible]

2. [illegible]

[illegible] उपा संघन, देवेंन, सांघसाय और सार्गकिग से भेंट हुई। वे [illegible]

---

1. अन्त के पश्चिमी ओर खनसुः के पुर्तोय नाम मिसरुन, उस समय वंश [illegible] के नाम से प्रख्यात थे।
2. यह पश्चिमोत्तर चीन का दूसरा राजा था। उसकी [illegible] प्रान्त में थी। वह सीनपं जाति का था और उसका [illegible] उस वंश का पहला शासक आंजन था और चीन [illegible] में उसे निमंत्रित किया था। अजिन के पदनिर्वाण पर [illegible] स्थान पर पश्चिमी चीन का शासक हुआ और सन् 994 ई. में [illegible]
3. फाहान ने 'जनपद' का नाम अपनी यात्रा में तीन प्रकार से गिना है—1. शासक के नाम पर, 2. नदी के नाम पर, 3. प्रशासनिक नाम।
4. इसी आधार पर भिक्षु वर्षा ऋतु में तीन मास एक ही स्थान पर रहते हैं।
5. चीनी परम्परा का विश्वास है कि नवलक्ष दक्षिण विहार के राजाभिषेक पर उस [illegible] ई. में पैदा हुआ। उस समय उसका भाई सं-न् फू पाप का आचार्य था [illegible] पश्चिम विहार का तीसरा राजा था। एक अन्य अनुश्रुतिका का मत है कि [illegible] जीवन के पश्चवर्षांश में बौद्ध धर्म का आसक्त था
6. एक स्थान खन-तु देश के जनपदों में से सीनन इस Mai[illegible] Station और यहां [illegible] से [illegible] मील एक देश से दूसरे देश [illegible]



[illegible] दूसरा है [illegible] ने धर्मभूमि पार करने के लिए यात्री [illegible] अन्न दिया। सुना है [illegible] ने [illegible] करते हैं, पर [illegible] है वहां जाकर उनसे कोई बचकर नहीं आता। न ऊपर कोई चिह्न [illegible]? और न नीचे [illegible] चिह्न [illegible] उन्हें आगे और जाने का मार्ग नहीं सूझता, बहुत ध्यान देने पर भी कोई [illegible]

## 2

## शेनशेन और कुग

सप्ताह दिन में लगभग 1,500 ली चलकर 'शेनशेन'[1] जनपद में पहुंचे। यह पहाड़ी प्रदेश है। भूमि यहां की पथरीली [illegible] है। साधारण निवासी मोटे वस्त्र पहनते हैं जैसे हमारे [illegible] कोट पश्मीना और कोई कंचल पहनते हैं, मात्र इतना ही अंतर है। इस देश के राजा का धर्म हमारा ही है। यहां लगभग चार हजार [illegible] है। सबके सब हीनयान बौद्ध [illegible] भोग क्या भिक्षु क्या गृहस्थ [illegible] पालन करते हैं, अंतर इतना ही है कि एक सामान्य [illegible] में पश्चिम जिन-जिन देशों में गए सर्वत्र [illegible]

---

[illegible] साथ लेकर व्यक्ति को कर दिया [illegible]

2. यह उस समय तुनहुंग का शासक था। उसने लियांग के राजा न उस सन् 400 ई. में तुनहुंग के शासक के पद पर नियुक्त किया था। वह बड़ा निर्दय दयालु और कुशल प्रशासक था [illegible] का भी पता लगाया था। इसका पर्यनिर्वाण सन् 41[illegible]
3. खोतनी भाषा के मूल में वालु को नदी लिखा है [illegible]
4. यह जनपद 'लोब' व 'लोपनार' झील के दक्षिण किनारे पर था।

बालू के नीचे दब गए हों। इन्हीं जनपदों के नगरों और बुद्ध विहारों के खंडहरों का पता रूसी और अन्य यूरोपीय यात्रियों को मरुभूमि में मिला है, जहां की खुदाई से अनेक खरोष्ठी और ब्राह्मी आदि लिपियों में लिखी हुई अनेक प्राचीन पुस्तकों की प्रतियां उपलब्ध हुई हैं। परंतु जब 'फाह्यान' ने यह लिखा है कि हम 'ऊए' से दक्षिण-पश्चिम चलकर 'खुतन' में आए तो 'ऊए' 'खुतन' से उत्तर-पूर्व रहा होगा। 'ऊए' वालों की सभ्यता के विषय में 'फाह्यान' ने लिखा है कि "ऊए के अंदर, बाहर से आकर बसने वालों ने सज्जनता और उदारता को छोड़कर विदेशियों के साथ क्षुद्रता का आचरण किया।" इसे जब 'सांगइयान' और 'हुईसांग' के 'तुर्किस्तान' के वर्णन से, जिसे उन्होंने इन शब्दों में किया है कि "इस देश के निवासियों के आचार व्यवहार असभ्य हैं" मिलाया जाए तो यह कहना पड़ेगा कि 'ऊए' कहीं 'तुर्किस्तान' के निकट ही तो नहीं था।

'फाह्यान' आदि 'ऊए' के 'उद्देशिक' कुंगसन के यहां ठहरे। उसने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। वहां वे करीब दो ढाई महीने तक रहे। 'पावयुन' आदि जिनका साथ 'तुनह्वांग' नगर में छूट गया था, वे भी यहां आ गए, पर इस देश के निवासियों के अशिष्टाचार और दुर्व्यवहार से पीड़ित हो 'चेयेन', 'हेकीन' और 'हेवांइ' तो 'कावचांग' वापिस लौट गए और शेष 'फाह्यान' आदि 'फूकुगसन' की कृपा से दक्षिण-पश्चिम की ओर चले। आगे के देश उन्हें निर्जन मिले और राह में अनेक नदियों को पार करना पड़ा, भांति-भांति के कष्ट उठाने पड़े। 'फाह्यान' ने लिखा है कि "ऐसे दुख किसी ने कभी न उठाए होंगे।" सभी कठिनाइयों को झेलते-झेलते 5 महीने स्थित चलकर सब यात्री 'खुतन' में पहुंच गए।

'खुतन' नगर 'खुतन' नामक नदी के किनारे स्थित है। वहां बौद्ध-धर्म का उस समय अच्छा-खासा प्रचार था। इसमें विभिन्न बुद्ध विहार और संघाराम भी थे, निवासी बड़े धर्मभीरु थे, घर-घर स्तूप थे, श्रमणों का बड़ा आदर था। 'फाह्यान' मित्रा सहित 'गोमती' नामक एक प्रसिद्ध विहार में ठहरा। 'हेकिंग', 'तावचिंग', 'हिता' तो वहां से 'फाह्यान' आदि का साथ छोड़ 'कीया' (कैकय) देश की तरफ चले गए। 'फाह्यान' आदि वहां भगवान की रथयात्रा देखने के लिए तीन मास तक के लिए ठहर गए। रथयात्रा



चतुर्थ मास की प्रथम तिथि से आरंभ हुई और चौदहवीं को समाप्त हुई। रथयात्रा देखकर 'सांगशाओं' ने एक 'तातार' के साथ 'कूफन' देश को, जिसे अब 'काबुल' कहते हैं, चला गया और 'फाह्यान' आदि 25 दिन चलकर 'जीहो' में आए। यात्रा में यह नहीं लिखा है कि 'खुतन' से किस ओर चले, केवल इतना लिखा है कि 'फाह्यान' आदि 'जीहो' की तरफ चले। मार्ग में 25 दिन चलकर उस जनपद में पहुंचे। इस जनपद का पता अब तक हमारे यूरोपीय विद्वानों को नहीं लगा है, कोई इसे 'यारकंद' और कोई इसे 'माशकुर्गल' बताते हैं। यहां का पता जो कुछ यात्रा विवरण से चल सकता है, वह यह है कि 'फाह्यान' आदि यहां 15 दिन रहे, फिर 'जीहो' से दक्षिण चार दिन चले और 'सुंगलिंग पर्वत' पारकर 'यूहे' जनपद में पहुंचे। 'यूहे' का भी पता हमारे सुविज्ञ विद्वानों को अब तक नहीं चला है। केवल वाटर साहब बहादुर ने इतनी अटकल लगाई है कि यह वर्तमान 'अक्साश' होगा। 'सुंगलिंग पर्वत' के बारे में इतना भी नहीं लिखा गया है कि इसका कुछ पता चला है अथवा नहीं। लेगी महोदय ने इतना और कर दिखाया है कि 'सुंगलिंग शब्द का अनुवाद अध्याय के आदि में 'Onion Mountains' (प्याज पर्वत) मोटे भव्य अक्षरों में छाप दिया है। अब विचारणीय बात यह है कि ये दोनों जनपद 'जीहो' और 'यूहे' कौन से हैं और कहां हैं? क्या आजकल हम उनको निर्दिष्ट कर सकते हैं अथवा नहीं? पहले हमें यह देखना चाहिए कि यात्रा विवरण में इन दोनों जनपदों का किस स्थान में होना संभव है। 'खुतन' से यात्री लोग किस दिशा में चले, 'फाह्यान' के

---

1. *संभवतया फाह्यान ने इस वर्ष अपना वर्षावास छठे महीने में प्रारंभ किया था। चौथे मास का शुक्ल पक्ष तो रथयात्रा में ही व्यतीत हो गया था। यदि पंचम मास की कृष्ण प्रतिपदा से वर्षावास प्रारंभ करना तो केवल एक ही मास रह गया था। इस मध्य फाह्यान आदि को 'खुतन' से 'जीहो' पहुंचने में 25 दिन लगे। 'जीहो' में वे 15 दिन तक रहे फिर 4 दिन दक्षिण चलकर 'सुंगलिंग पहाड़' मिला और उसे पारकर 'यूहे' जनपद गए। इसमें फाह्यान को 25+15+4 दिन लगे। अब यदि पंचम मास के मध्य कृष्ण प्रतिपदा में वर्षावास आरंभ करना चाहता तो उसे 'जीहो' में वर्षावास पड़ता, सो भी यदि वह ठीक चतुर्थ मास की कृष्ण प्रतिपदा को खुतन से रवाना होता। पर इसमें संदेह नहीं कि वह चौथे मास के द्वितीय पक्ष के भी अधिक दिन व्यतीत हो गए थे और पंचम मास का मध्यकाल मार्ग में ही व्यतीत हो गया। निदान आपत्ति धर्म के अनुसार उसने अपना वर्षावास षष्ठ मास के मध्य में 'यूहे' में आरंभ किया।*

[illegible]

[illegible]

स प्राङ्मुखो राजगृहादभिनिर्याय वीर्यवान् ।
ततः सुदामा द्युतिमान्सतां वीक्ष्य तां नदीम् ॥

ह्लादिनीं दुष्पारां च प्रत्यक् स्रोतस्तरङ्गिणीम् ।
शतद्रुमतरच्छीमान्नदीमिक्ष्वाकुनन्दनः ॥

ऐलधानं नदीं तीर्त्वा प्राप्य चापरपर्वतान् ।
शिलामाकर्षतो तीर्त्वा आगनेयं शल्यकर्षणम् ॥

सत्यसंधः शुचिर्भूत्वा प्रेक्षमाणः शिलावहाम् ।
अभ्यागत्य महाशैलान्वनं चैत्ररथं प्रति ॥

सरस्वतीं च गंगां च युग्मेन प्रतिपद्य च ।
उत्तरान्वीरमत्स्यानां भारुण्डं प्राविशद्वनम् ॥

वागनीं च कुलिंगाख्यां ह्लादिनीं पर्वतावृताम् ।
यमुनां प्राप्य सतीर्णो बलमाश्वासयत्तदा ॥

राजपुत्रो महारण्यमनभीक्ष्णोपसेवितम् ।
भद्रो भद्रेण यानेन मारुतः स्वामिवात्यगात् ॥

भागीरथीं दुष्प्रतरां सोंऽशुधाने महानदीम् ।
उपायाद्राघवस्तूर्णं प्राग्वटे विश्रुते पुरे ॥

---

1 वाल्मीकीय रामायण आदि ब्राह्मणों ग्रंथों के वर्णन और संदर्भ अनुवादक महोदय की ओर से जोड़े गए हैं—सं

[illegible] महीने के पहले पक्ष में हम लोग 'इरा' प्रदेश में पहुंचे। [illegible] नदियों से जल पहुंचता है। सारी [illegible] पर नहीं बहती है। वहां कोई ऐसा नगर नहीं [illegible] हो, जहां आतिथ्य के निमित्त स्थायी सेना है। [illegible] स्थान पर [illegible] रहती है। [illegible] प्रदेश में [illegible] है [illegible] आदिवासी लोग पर्वत के ऊपर चले जाते हैं और [illegible] अपने अपने गांवों में चले जाते हैं। [illegible] नहीं है सभी असभ्य हैं। ये न तो तारों को [illegible] दिन निश्चित है। सभी महीने [illegible] [illegible] की सब [illegible] इस जनपद के दक्षिण में 'तिलों' [illegible] में 'लिला' पूर्व में [illegible] पाया है। प्रायः [illegible] जनपद के लोग [illegible] [illegible] राजा के पास उपहार लेकर आता है तो 40 [illegible] [illegible] बिछाई जाती है और ऊपर चांदनी व शामियाना [illegible] [illegible] सिंहासन पर राजकीय वस्त्राभूषण धारण [illegible] सिंहासन [illegible] पर स्थापित रहता है। जब कोई देश के [illegible] प्रणाम करके उनसे [illegible] लिया। सभा में [illegible] स्वाधि बनाता है, फिर अभ्यागत [illegible] [illegible] जाने पर सभा [illegible] [illegible] का प्रतिपालन करते हैं। कोई राजा आदि [illegible] राजा के [illegible] स्त्रियां भी राजकीय [illegible] पहनती हैं [illegible] पर [illegible] हैं। [illegible] लोग होते हैं, स्त्रियां इसके अतिरिक्त [illegible] भर [illegible] मस्तक पर धारण करती हैं। [illegible] और अनेक रंगों में रंगी होती हैं, [illegible] अंतःपुर की स्त्रियां [illegible] हैं। [illegible] स्वर्ण आसन [illegible] पर [illegible] और [illegible] सिंह की चार [illegible] इसके अलावा [illegible] स्त्रियां और राजा के अंतःपुर [illegible]

स्त्रियों का [illegible] इस [illegible] में [illegible] है। [illegible] पर सींग धारण करती हैं। [illegible] करते हैं। [illegible] में नहीं [illegible] के [illegible] लोग जीवित प्राणी को मारकर उसका मांस [illegible] हैं। [illegible] अनेक पशु [illegible] जाते हैं, [illegible] का मांस [illegible] हैं। [illegible] लोगों की राजधानी 20 हजार [illegible] पर है।

"ग्यारहवें महीने के पहले सप्ताह में हम लोग 'पामर' [illegible] की सीमा के प्रदेश में पहुंचे। 17 दिन [illegible] एक पहाड़ी और [illegible] देश में आए। इसका आचार [illegible] सभ्य नहीं था। वहां कोई [illegible] का सम्मान नहीं करता। राजा भी बाहर निकलने पर व अंतःपुर में रहने पर [illegible] परिवार को [illegible] साथ नहीं रखता। इस देश में एक नदी है। [illegible] इतनी गहरी नहीं है पर [illegible] नदी आदि की चाल बदलती गई है और [illegible] गए हैं। [illegible] है और [illegible] पहुंचाता है। ग्रीष्मकाल में [illegible] में तुषार (बर्फ) गिरता है। इसके परिणामस्वरूप [illegible] मुसाफिरों का सामना करना पड़ता है। [illegible] का तुषार इतना [illegible] [illegible] कि [illegible] स्थान से [illegible] मार्ग [illegible] है। [illegible] होने में [illegible] नहीं लगता। यदि [illegible] लोग [illegible] को [illegible] देते हैं, तो उन्हें [illegible] में कोई कठिनाई नहीं पड़ती।

"ग्यारहवें महीने के मध्य भाग में [illegible] जनपद में पहुंचे। यह प्रदेश 'सुगानग' पर्वतमाला की सीमा पर है। देश की भूमि [illegible] है। [illegible] के रहने वाले [illegible] गरीब हैं। मार्ग ऊंचा नीचा बड़ा ही भयानक और [illegible] है। घोड़ा सवारी लेकर इस मार्ग पर बड़ी कठिनाई से आ जा सकता है। 'पकालाइ' से उद्यान प्रदेश तक सेतु[1] बना है। सेतु लोहे की जंजीरों का है। पर्वत की घाटी को पार करने के समय इन्हीं जंजीरों के सहारे पार होना पड़ता है। ये जंजीरें अधर में लगी हैं। नीचे देखने से [illegible] की [illegible] दिखाई

---

1 फाह्यान ने जिस सेतु का उल्लेख किया है या तो यही है अथवा कोई दूसरा होगा, जो इस नदी पर रहा होगा।

इससे पूर्णतया साफ हो जाता है कि 'सिंधु नदी' के दक्षिण के प्रदेशों में (उसके दक्षिण दिशा में फिरने तक) जो 'कराकारम' और 'हिंदुकुश' के इस पार पड़ते थे, पश्चिम में 'दरद' व 'तूल' और पूर्व में 'कीचा' का प्रदेश था। इनके अंतर्गत इधर-उधर अनेक और प्रदेश पड़ते थे, जिनका उल्लेख 'फाह्यान' ने नहीं किया है। उनका विशेष वर्णन 'सांग इयानादि' के यात्रा विवरण में है। इसीलिए 'यूहे' से 'फाह्यान' पूर्व की तरफ 'कराकारम' के किनारे से 'कीचा' को गया और फिर 'कीचा' से दरद होता हुआ 'उद्यान' में आया।

'कीचा' में पहुंचकर 'फाह्यान' को 'हेकिंग' और उसके दो अन्य साथी, जो 'खुतन' से पहले यहां चले आए थे, मिले। यहां उस समय पंच परिषद का उत्सव पड़ा था। यह उत्सव पांचवें वर्ष पश्चात पड़ा करता था। इसका पूर्ण वर्णन पांचवें अध्याय में सांगोपांग मिलता है। 'फाह्यान' ने इस देश के विषय में मात्र इतना ही लिखा है, "यह देश पहाड़ी है और ठंडा है, सुनते हैं यहां गेहूं के अतिरिक्त और कोई अन्न नहीं होता। (इस) पर्वत के सामान्य लोग मोटा-झोटा वस्त्र पहनते हैं। यह जनपद 'सुगलिंग' पर्वतमाला के मध्य में है। इस पर्वतमाला से आगे बढ़ने पर वनस्पति, वृक्ष और फल सब प्रकार के मिलने गए। केवल बांस, बिल्व और ईख ये ही तीन हमारे देश के हैं।" उस देश में भगवान बुद्ध की पीकदान और दांत पूज्य पदार्थ थे। श्रमणों के आचार-व्यवहार आश्चर्यजनक और इतने विधिनिषेधात्मक थे कि कहे नहीं जा सकते।

'कीचा' से यात्रियों ने पश्चिम की तरफ एक मास तक चलकर 'सुंगलिंग पर्वतमाला' पार की। यहां यह जानना हितकर व अति आवश्यक है कि 'सुंगलिंग पर्वत' से यात्रियों का अभिप्राय उन सारी पर्वतमालाओं के जाल व विस्तार से है, जो 'सुंगलिंग' से दक्षिण 'पामीर' तक फैली हुई हैं और वहां 'थियनसान' से मिली हुई हैं। चूंकि पहले भी वे 'जीहो' और 'यूहे' के मध्य इसी के एक अंश को पारकर चुके थे, पर फिर भी इस और हिस्से को पार करना पड़ा। 'फाह्यान' ने लिखा है, "सुंगलिंग पर्वतमाला ग्रीष्म से हेमन्त तक तुषारावृत (बर्फ से ढकी) रहती है। उस पर विषधर नाग हैं। वे क्रोधित होने पर विषयुक्त वायु छोड़ते हैं, तुषार बरसाते हैं, अंधड़ चलाते हैं और पत्थर बरसाते हैं। यहां इन आपत्तियों से बचकर दस हजार में एक

stood on the glittering expanse of snow marking the top of the pass and looked down the precipitous slopes leading some 6,000 feet below to the head of Yasing valley, I felt sorry that there was no likelihood of a monument ever rising for the brave Corean general who had succeeded in moving thousand of men across the inhospitable pamir and over such passes.

यह अपार हर्ष की बात है कि मुझे यहां चीनी लेखकों की सत्यता प्रमाणित करने का गुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। मध्य एशिया का इतिहास और भूगोल के विषय में ये ही हमारे अगुआ और मार्गदर्शक हैं। मुझे यहां इन कारणों का पूरी भांति लिखने का अवकाश नहीं है कि क्यों सन् 749 ई. में चीनी सेना 'कासगर' से 'पामीर' होती हुई 'यासीन' और 'गिलगिट' आई। 'यासीन' और 'गिलगिट' उस समय तिब्बत के अधिकार में थे। चीनियों की सेना 'बरोगिल' और 'दरकोट' के दर्रों को पार कर आई थी। ये चीनियों की उस विशाल सेना के आने के मार्ग को जानने का बड़ा इच्छुक था। इस सेना ने पामीर और हिन्दूकुश की प्राकृतिक रुकावटों को पार किया था। 'दरकोट' दर्रा समुद्र की सतह से 15,400 फुट ऊंचा है। मैं 17 मई को वहां पहुंचा। पीछे तक बर्फ की नदी चमक रही थी। उसका रास्ता उतर में बड़े-बड़े बर्फ के ढोकों से होता था। मैं बड़ी कठिनाई से पिघलती बर्फ में होकर ऊपर गया। 9 घंटे लगे। मेरे मार्गदर्शकों ने इसे पार करना संभव नहीं बताया था। मैंने जब इन चमकते हुए हिम-खंडों के ऊपर से नीचे देखा तो 'यासीन की घाटी' 7,000 फुट की गहराई में दिखाई पड़ी। खेद है कि 'कोरिया' के इस वीर सेनापति का यहां कोई स्मारक बिल्कुल नहीं है, जो अपने कौशल से सहस्रों मनुष्यों की सेना लिए यहां पहुंचा था। इससे ज्ञात होता है कि उद्यान से इधर-उधर दुष्कर पर्वत के दर्रे और घाटियां थीं। ऐसी ही और घाटी रही होगी जिस पर से इस समय दरद देश से उद्यान आने के लिए झूले का पुल बना रहा हो। पर मात्र इतने से उसे 'सिंधु नदी' मानना ठीक प्रतीत नहीं होता। यह भी संभव है कि कोई और नदी हो जो दो पर्वत के मध्य होकर 'उद्यान' और दरद के बीच बहती हो और उसके दोनों ओर दो उच्च पर्वत रहे हों। इसकी सत्यता दोनों यात्रियों के विवरणों से प्रमाणित होती है। भरत जी को उद्यान पहुंचने में 'भागीरथी' नामक नदी उतरनी पड़ी थी, जिस महाकवि ने "दुष्प्रतरां" लिखा है। यह

but it was on far more interesting ground that I was enable to verify the accuracy of those Chinese annalists who are our chief guides in the early history and geography of Central Asia. Reasons, which cannot be set forth here in detail had years before led me to assume that the route by which in 749 A.D a Chinese army coming from Kashgar and across Pamirs had successfully invaded the territories of Yasin and Gilgit then held by Tibetans, led over the Baroghil and Darkot passes. I was naturally very anxious to trace on the actual ground the route of this remarkable exploit, the only recorded instance of an organised force of relatively large size having surmounted these passes, the formidable natural barriers which the Pamirs and Hindukush present to military action. The ascent of the Darkot Pass, circ. 15,400 feet above the sea which I undertook with this object on May 17, proved a very terrifying affair, for the miles of magnificent glacier over which the ascent led from the north were still covered by deep masses of snow, and only after nine hours of toil in soft snow, hiding much crevassed ice did we reach the top of the pass. Even my hardy Masta and Wakhi guides had held it to be inaccessible at this early season. The observation, gathered there, and subsequently on the marshes across Baroghil to the Oxus, fully bore out the exactness of the topographical indications furnished by the official account of Koo tsem che's expedition. As I

नदी 'अंशधान' पर्वत के निकट थी। यहां डॉ. ओफ्रेक महोदय का मत भी विचारणीय है। वह लिखते हैं कि 'हियनतू' शब्द का अर्थ 'रस्सी का झूला' है। इस यात्रा में 'हियन' और 'तू' नामक दोनों संकेत दो बार आए हैं। एक अध्याय 7 में और दूसरे अध्याय 14 में। अध्याय 15 में 'तू' शब्द अकेला आता है और यहां नदी-वाचक है। इसके अलावा और भी कई जगह पर यह शब्द नदी-वाचक आया है। अतः 'हियन' का अर्थ सिवाय झूला या पुल के और दूसरा नहीं प्रतीत होता। सिंधु नदी के लिए वे ही संकेत प्रयुक्त हो सकते हैं, जो भारत के लिए आए हों। शब्द के उच्चारण-साम्य से यह भ्रम अनुवादकों को हुआ होगा।

यहां नदी पार करने पर अनेक भिक्खु मिले और उन भिक्खुओं ने 'फाह्यान' से सवाल किया कि बतलाओ बौद्ध-धम्म कैसे यहां से पूर्व की ओर गया। इस पर 'फाह्यान' ने जवाब दिया कि "हमने उस ओर वालों से पूछा था। वे कहते थे कि बाप-दादाओं से सुनते आये हैं कि 'मैत्रेय बोधिसत्व' की प्रतिमा स्थापन कर भारत के भिक्खु 'सूत्र' और 'विनय' भिक्खु नियम लेकर नदी पार गए। मूर्ति की स्थापना तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण काल से 300 वर्ष पश्चात् हुई। उस समय 'हान देश' में 'चाउ' वंशी महाराज पिंग का शासन था। इस वाक्य से प्रमाणित है कि हमारे धर्म का प्रचार इस मूर्ति के स्थापन से प्रारंभ हुआ है। भगवान मैत्रेय धर्मराज हैं। उसी शाक्य वंशावतंस ने त्रिरत्न की घोषणा की है और यहां आकर पार के लोगों को धर्म का उपदेश दिया है।"

फाह्यान 'उद्यान' जनपद पहुंचा। यह 'उद्यान' जनपद 'उर्द्ध-स्वात' के दून में था। वहां उस समय अनेक संघाराम (बुद्ध विहार) थे, जिनमें बहुतों का पता डॉ. स्टीन महोदय ने सन् 1898 में चलाया। डॉ. स्टीन महोदय ने 'मगाली' के पास एक बड़े नगर का खंडहर भी खुदवाया था और उनका दृढ़ विश्वास था कि 'उद्यान' की प्राचीन राजधानी यही थी। वहा के देशवासियो से ज्ञात हुआ कि यहां भगवान बुद्ध के पद-चिह्न (बुद्धपाद) की प्रतिमा है, यहां एक चट्टान भी थी, जिस पर भगवान बुद्ध ने आकर अपने वस्त्र भी सुखाए थे।

यहां 'फाह्यान' के साथ 'हेकिंग', 'हेता' और 'तावचिंग' तो 'नागर जनपद' में भगवान बुद्ध की छाया का दर्शन करने चले गए पर वहा से



आकर 'फाह्यान' और शेष लोगों ने वहां [illegible] वीत जाने पर 'फाह्यान' आदि दक्षिण की [illegible]

'सूहोतो प्रदेश' का नाम प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में [illegible] 'फाह्यान' ने इस जनपद के विषय में एक [illegible] है। वह राजा शिबि[1] की कथा से, जो बौद्ध साहित्य में [illegible] मिलती-जुलती है। भट्ट कनक उनका है कि 'फाह्यान' ने [illegible] परीक्षा करने वाला लिखा है, पर [illegible] लिखा है। उनमें शक्र देवेन्द्र और [illegible] थे। शेष ज्यों का त्यों है।

यह 'सूहोतो' प्रदेश वही है जहां आजकल 'चारसद्दा' [illegible] पर उस समय एक बौद्ध स्तूप था जिस पर [illegible] वहां बौद्ध धर्म का अच्छा खासा प्रचार प्रसार था। [illegible] अब तक 'गिरार' में है।

यहां से एक दिन फाह्यानादि 'सूहोतो' से पूर्व ही ओर चल कर 'नगर' जनपद में गए। इस जनपद के बारे में केवल एक जातक कथा का उल्लेख किया गया है, जिसमें भगवान बुद्ध के एक जन्म में भिक्षा का संकलन करने की कथा है। उस जगह उन दिनों एक स्तूप था [illegible] बौद्ध धर्म के 'हीनयान पथ' के मानने वाले थे। स्तूप के [illegible] अभी तक नहीं चला है।

'गांधार' से चलकर फाह्यानादि पूर्व की ओर [illegible], वहां से चलकर 'तक्षशिला' पहुंचे। 'तक्षशिला' को बौद्ध लोग [illegible] है। 'फाह्यान' ने 'तक्षशिला' के यह नाम पड़ने का यह कारण दिया है कि भगवान बुद्ध ने अपने एक जन्म में अपना सिर एक मनुष्य को दान कर दिया था। यहां एक स्तूप था। यहां से दो दिन पूर्व की ओर चलकर एक ओर स्तूप मिला, जहां भगवान बुद्ध ने एक जातक कथा के अनुसार, किसी जन्म में अपना शरीर भूखी बाघिन को खिलाया था।

फाह्यानादि फिर वहां से दक्षिण की तरफ चले और तीन दिन 'पुरुषपुर' पहुंचे, जिसे आजकल 'पशावर' कहते हैं। यहां पर 'फाह्यान' का आना हुआ

1. शिबि (पालि साहित्य) राष्ट्र का वर्णन 'सिबि जातक' (499) में आया है।

पहुंचे इसका कुछ भी पता हमारे यात्री के यात्रा विवरण से नहीं चलता। 'मथुरा' में आकर उन्होंने विश्राम किया या नहीं इसका भी कुछ उल्लेख यात्रा में नहीं है और न कुछ 'मथुरा' का हाल ही लिखा है। हां, इतना मात्र जरूर मिलता है कि "यहां से दक्षिण-पूर्व दिशा में 80 योजन चले। एक जनपद में पहुंचे, जिसका नाम 'मथुरा' है। पुना (यमुना) नदी के किनारे किनारे चले। दाहिने, बाएं 20 बुद्ध विहार थे, जिनमें तीन हजार से अधिक भिक्खु थे। बौद्ध-धम्म का अच्छा प्रचार अब तक है।" यात्रा विवरण में एक और वाक्य है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि 'गोबी की मरुभूमि' से इधर के देश या तो भारतवर्ष के अंतर्गत समझे जाते थे अथवा बुद्ध धम्म का प्रचार और भारतीय आचार-विचार देखकर हमारे यात्री ने उन्हें भारतवर्ष के देश लिख डाला है। वह वाक्य यह है, "मरुभूमि से पश्चिम भारत के सभी जनपदों में जनपदों के अधिपति बौद्ध-धर्मानुयायी मिले।"

'फाह्यान' ने इस (मथुरा) दक्षिण के देश को मध्य देश[1] पालि लिखा है। उसने वहां की प्रजा को बड़ा ही शुद्धाचारी और धर्मनिष्ठ लिखा है। 'फाह्यान' के शब्द इस प्रकार हैं–

"प्रजा प्रभूत और सुखी है। व्यवहार की लिखा-पढ़ी और पंचायत कुछ नहीं है। वे राजा की भूमि जोतते हैं और उसका अंश देते हैं। जहां चाहे जाएं, जहां चाहे रहें। राजा न प्राण दंड देता है, न शारीरिक दंड देता है। अपराधी को अवस्थानुसार उत्तम साहस व मध्यम साहस का अर्थदंड दिया जाता है। बार-बार दस्यु कर्म करने पर दक्षिण कर्त्तव्य किया जाता है। राजा के प्रतिहार और सहचर वेतनभोगी होते हैं। साथ ही देश में चांडाल के अतिरिक्त कोई निवासी न जीवहिंसा करता है, न मद्य पीता है और न लहसुन, प्याज खाता है। दस्यु को चांडाल कहते हैं। वे नगर के बाहर निवास करते हैं और नगर में जो बैठते हैं तो सूचना के लिए लकड़ी बजाते चलते हैं, जिससे कि लोग जान जाएं और बचकर चलें, कहीं उनसे स्पर्श न हो जाए। जनपद में सूअर और मुर्गी नहीं पालते, न ही जीवित पालतू पशु बेचते हैं, न कहीं सूने और मद्य की दुकानें हैं। क्रय-विक्रय में कौड़ियों का व्यवहार है। केवल चांडाल मछली मारते, मृगया करते और मांस बेचते हैं।"

1. पालि भाषा में और बर्मा आदि देशों में भारत (जम्बुद्वीप) के लिए 'माज्झिमदेस' शब्द का प्रयोग किया गया है।



ऐसे देश से होकर दक्षिण-पूर्व 'मथुरा' से 18 योजन चलकर वे 'सकाश्य' नगर (वर्तमान संकिसा) में पहुंचे। सकाश्य नगर फर्रुखाबाद के जिले में शमसाबाद के परगने में है। इसे अब 'सकासिया' कहते हैं। यहां अब तक विभिन्न विहारों और स्तूपों के चिह्न मिलते हैं। यहां दो अशोक धम्म स्तंभों के भी चिह्न हैं जिनमें से एक पर हाथी की मूर्ति अभी भी विद्यमान है। दूसरे स्तंभ का कहीं अतापता नहीं है। पर हाथी युक्त धम्म स्तंभ की मूर्ति वहां ही मिली थी।

कहते हैं कि भगवान बुद्ध जब इस लोक से त्रयस्त्रिंश लोक में जननी माता (महामाया) को, जो उस स्वर्ग में देवयोनि में जनमी थीं, अभिधर्म का उपदेश करने गए थे और वहां वर्षावास पूरा करके इस लोक में अवतरित हुए थे, तो वहां से यहीं पर उतरे थे। जिस स्थान पर उतरे थे वहां सीढ़ियां बनी थीं, जिस पर महाराज अशोक द्वारा निर्मित विहार और दो पाषाण स्तंभ थे। वहां पर एक तीर्थ भी था जहां भगवान बुद्ध ने स्नान किया था। उनके चंक्रमणस्थान पर तथा जहां केशादि कर्तन किए थे और बैठे थे स्तूप थे। 'फाह्यान' ने इस स्थान के संबंध में एक और स्थान का उल्लेख इन शब्दों में किया है कि "यहां से पश्चिमोत्तर पचास योजन पर एक विहार है, जिसे 'आळवक' विहार कहते हैं। 'आळवक' नामक एक दुष्ट वृक्ष था। भगवान बुद्ध ने उसे धर्मोपदेश दिया था। तदुपरांत लोगों ने उस स्थान पर विहार का निर्माण करवाया था। जब एक अर्हत को इस विहार की दान देने के लिए उसके हाथ पर पानी छोड़ने लगे तो पानी की कुछ बूंदें गिरी थीं। पृथ्वी पर उस जगह वे अब तक हैं, कितने ही बार पोंछा जाता है पर मिटती नहीं।" ये बातें 'फाह्यान' ने लोगों से सुनकर लिखी हैं। वास्तव में वह उस स्थान पर गया नहीं था। वहां एक नाग का विहार भी था।

'फाह्यान' ने इसी 'नाग विहार' में विहार किया था। नाग विहार सकाश्य नगर में उसी स्थान के आसपास था, जहां भगवान बुद्ध त्रयस्त्रिंश लोक से शक्र और ब्रह्मा के साथ अवतरित हुए थे। 'नाग विहार' के संबंध में 'फाह्यान' ने लिखा है कि "इस स्थान के समीप एक 'श्वेत कर्ण नाग' है।

1. यह स्थान वर्तमान में फर्रुखाबाद जिले में पड़ता है।
2. टहलने अथवा चहल कदमी करने का स्थान जिसका आकार हाथ भर चौड़ा और 8 हाथ लंबा होता है–(संदर्भ निदान कथा)

वही भिक्खुओं का दानपति है। जनपद में उसी से पुष्कल अन्न होता है, समयोचित वृष्टि होती है और ईतियां (बाधाएं) नहीं पड़तीं। इस उपकार के बदले में भिक्खुओं ने नाग के लिए विहार बना दिया है, उसके बैठने के लिए आसन कल्पित है, भोग लगता है और पूजा होती है। भिक्खुसंघ से हमेशा तीन लोग नाग विहार में जाते, और भोजन करते हैं। वर्षा बीतने पर नागराज कलेवर बदलता है। एक छोटा-सा संपोला बन जाता है जिसके कानों के पास सफेद बुंदकियां होती हैं। भिक्खुसंघ उसे पहचानते हैं। तांबे के कलश में दुग्ध भरते हैं और नाग को उसमें डालकर सब ऊंच-नीच के पास ले जाते हैं। यह कृत्य अकथनीय होता है। ऐसी यात्रा वर्ष में एक बार होती है।" यह अद्भुत बात कुछ बुद्ध की छाया से कम आश्चर्यजनक नहीं है। कुछ भी हो उस समय के लोग एकदम सीधे थे और सरलता से बातों पर भरोसा कर लेते थे। विदेशियों के यात्रा विवरणों में ऐसी बातों की कमी नहीं। स्वयं 'बर्नियर' और 'बर्नियर' की यात्राओं का जिन लोगों ने देखा है वे इसे भली-भांति जानते हैं। पंडे-पुरोहितों और पुजारियों का यह साधारण हथकंडा है कि वे अपने यात्रियों से ऐसी रोचक और डरावनी कथाएं प्रायः कहा करते हैं, जिससे वे उनके श्रद्धालु भक्त हो जाएं। एक बार की बात है कि मैं अपने एक मित्र के साथ 'काशी' में 'करवट' का दर्शन करने गया। मार्ग से ही दो दिन 'काशी' के छोकरों ने पीछा किया और वे उन्हें उस जगह पर ले गए। मेरे मित्र थे बड़े श्रद्धालु पर साथ ही कुछ कृपण भी थे। वहां पहुंचकर और दर्शन करके उन्होंने दो पैसे चढ़ाए। इसी बीच में एक और मनुष्य ने जो प्रायः उन्हीं का कोई सिद्धसाधक था पंद्रह रुपए लाकर उस स्थान के पुजारी के चरणों पर रख दिए और कहा कि महाराज मेरे मनोरथ सफल हो गए, यह मेरी पूजा है, ग्रहण कीजिए। पंडाजी ने झट अपने पास से चार पैसे निकालकर दिए और कपूर मंगाया। कपूर को जलाकर एक गहरे कुएं में छोड़ दिया। फिर हम लोगों को दर्शन करा कहा कि यहां चढ़ाने और प्रार्थना करने से सभी मनोरथ सफल होते हैं। यह कह वे रुपए उन्होंने उसी कुएं में छोड़ दिए। अब तो मेरे मित्र से न रहा गया, वे एक अठन्नी निकालकर डालने लगे। पंडा जी ने कहा भाई जैसा मनोरथ हो वैसा ही अपने वित्त के अनुकूल भीतर चढ़ाना। फिर तो मेरे मित्र ने अठन्नी अपनी गोद में रख ली और दो रुपए निकालकर ...

[illegible]

रामचंद्र की दतुवन के साथ इस कथा का वर्णन करते हैं।[1] 'हुएन-च्वांग' के यात्रा विवरण में ऐसी ही एक कथा 'विशाखा' नामक स्थान के विषय में मिलती है। विशाखा और शांखें मिलते-जुलते शब्द भी हैं।

'साकेत' से दक्षिण आठ योजन चलकर दोनों यात्री 'श्रावस्ती' पहुंचे। 'श्रावस्ती' उस समय उजाड़ पड़ी थी, केवल 20 घर लगभग वहां आबाद थे। वहां विभिन्न स्तूप और विहार भी मिले। विश्व प्रसिद्ध जेतवन विहार के खंडहरों को यात्रियों ने देखा और वे अनेक भिक्खुओं से मिले, जिनसे उन्हें ज्ञात हुआ कि कभी उस जेतवन विहार के आसपास 98 विहार थे। यहां पर 'फाह्यान' ने भगवान बुद्ध के 96 मिथ्या दृष्टि वाले आचार्यों के साथ शास्त्रार्थ और धर्मचर्चा की कथा लिखी है। उन मिथ्या दृष्टियों के विषय में 'फाह्यान' लिखता है कि "मध्य देश में 96 मिथ्या दृष्टि वाले आचार्यों का प्रचार है। सभी लोक और परलोक को मानते हैं। उनके साधुसंघ हैं, वे भिक्खा मांगते हैं, केवल भिक्खापात्र नहीं रखते। सभी भिन्न-भिन्न प्रकार से धर्मानुष्ठान करते हैं। मार्गों पर धर्मशालाएं स्थापित हैं। वहां आने-जाने वाले को आवास, खाट, बिस्तर, खाना-पीना मिलता है। तभी सब लोग यहां आते-जाते हैं और वास करते हैं। सुनते हैं कि काल में कुछ अंतर है।"

96 पाखंडी कौन थे? इसका स्पष्ट पता नहीं चलता। पाखंड शब्द का प्रयोग धार्मिक संप्रदाय के अर्थ में 'कौटिल्य' के 'अर्थशास्त्र' और सम्राट अशोक के शिलालेख तक में है। 96 पाखंडों के इस देश में एक कहावत बहुत दिनों से चली आती है। सुंदरदास जी ने 'सर्वांगयोग ग्रंथ' में लिखा है—

इन बिन और उपाय है सो सब मिथ्या जान।
छह दर्शन अरु छयान्नवे पाखंड कहूं बखानि।
केचित कर्म स्थापहिं जैना।
केश लुंचाइ करहिं अति फैना॥
केचित मुद्रा पहिरै कानं।
कापालिका भ्रष्ट मत जानं॥
केचित नास्तिक वाद प्रचंडा।
तेतो करहिं बहुत पाषंडा॥

1. ऐसा बुद्ध के विरुद्ध प्रतिक्रांति करने वाले का प्रचार मात्र है।

केचित देवी शक्ति मनावें।
जीव हनन करि ताहि चढ़ावें॥
केचित मलिन मंत्र आरावें।
वसीकरन उच्चाटन सावें॥
केचित मुये मसान जगावें।
वमन मोहन अधिक चलावें॥
केचित तर्कहि शास्तर पाठी।
कोशल विद्या पकरहिं काठी॥
केचित वाद विविध मत जानें।
पढ़ि व्याकरण चातुरी ठानें॥
केचित कर धरि भिक्खा पावें।
हाथ पोंछि जंगल को धावें॥
केचित घर घर मांगहि टूका।
बासी कूसी रूखा सूका॥
केचित धोवन धावन पीवें।
रहें मलीन कहा क्यों जीवें॥
केचित मता अघोरी लीया।
अंगीकृत दोऊ का कीया॥
केचित अभष भषत न सकाहीं।
मदिरा मांत मास पुनि खाहीं॥
केचित बपुरे दूधाहारी।
षांड षोपरा दाख छोहारी॥
केचित ककंट बीनहिं पंथा।
निर्गुन रूप देखावहिं कंथा॥
केचित मृग छाला बाघंबर।
करते फिरहिं बहुत आडंबर॥
केचित मेघाडंबर बैठे।
शीतकाल जलसाइं पैठे॥
केचित धूम पान करि भूले।
औंधे होइ वृच्छ सों झूले॥

के मध्य में था। 'वाणगंगा' 'नेपाल की नदाई' से निकलकर 'गोरखपुर' के पास 'राप्ति नदी' से मिलती है। अभी थोड़े ही दिन की बात है कि बस्ती जिले में 'पिपरहवा' के समीप एक प्राचीन स्तूप था और उसे खुदाई पीपी महोदय ने, जो वहां के जमींदार हैं, करवाई थी। उसमें से एक मजबूत (डिब्बी सदृश्य) के भीतर भगवान बुद्ध का धातु रूप मिला था। उस पर अंकित लेख से यह प्रमाणित होता था कि, वह स्तूप शाक्यों ने भगवान बुद्ध की उस धातु पर बनाया था जो उन्हें कपिलवस्तु के कुशीनगर में भगवान बुद्ध की चिता की भस्म का अंश स्वरूप मिला था। इस स्तूप का निर्माण 'कपिलवस्तु' जनपद के मध्य करवाया गया था। यद्यपि यह कथन (लोकोक्ति) अति प्रसिद्ध है कि सम्राट अशोक ने आठों धम्म स्तूप को तुड़वाकर भारतवर्ष में 84,000 स्तूप बनवाने चाहे थे और सब धम्म स्तूपों को ध्वंस करके 'रामस्तूप' को जो 'रामग्राम' में था ध्वंस करवाना चाहता था, पर किसी कारणवश उसे वह ध्वंस न करा सका और सात धम्म स्तूपों के कुछ कुछ धातुओं को लेकर उसने भारतवर्ष के विभिन्न धम्म स्तूप बनवाए। इस कथा पर लोगों का विश्वास भी बड़ा है पर यों तो यथा है कि वह यही धम्म स्तूप है जिसे सम्राट अशोक ने नहीं तुड़वाया था और जिस यात्रियों ने 'रामस्तूप' लिखा, अथवा यदि वह यह नहीं तो वह और स्तूप था, जो उसने सात क्या केवल छठी धम्म स्तूपों को तुड़वाया और जब सातवें स्तूप पर जो 'रामस्तूप' था, पहुंचा तो उसे अनेक अड़चन उठानी पड़ीं और उन्होंने उसे तथा शाक्यों के धम्म स्तूप को नहीं तुड़वाया। 'पिपरहवा' 'लौरिया' से आठ मील की दूरी पर है।

---

1 'फाह्यान' विदेशी थे, वे यहां की सामाजिक, धार्मिक, सरचना से पूर्णत: परिचित नहीं थे। उन्हें लोगों ने जैसा बता दिया, वैसा ही उन्होंने लिख लिया। अब यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध की अस्थि धातु (अस्थियां) प्राप्त करने के लिए किसी धम्म स्तूप को खुदवाया नहीं था। अपितु महावंस नामक ग्रंथ के अनुसार उन्होंने सात स्तूपों से कुछ कुछ धातुएं निकालकर उन्हें 84,000 भागों में बांटकर उन पर 84 हजार धम्म स्तूप, एक साथ बनवाए थे। जिन सात धम्म स्तूपों से भगवान के शरीर धातु प्राप्त किए गए थे, वे हैं राजगृह का धम्म स्तूप, कपिलवस्तु का (शाक्य प्रदेश में) धम्म स्तूप, अल्लकप्प का धम्म स्तूप, रामगाम का धम्म स्तूप, पावा का धम्म स्तूप, वैशाली का धम्म स्तूप, वेठदीप का धम्म स्तूप।

'रामग्राम' से होकर 4 योजन पर 'फाह्यान' और 'तार्तीनाग' [illegible] स्थान मिला जहां से 'कुमार सिद्धार्थ' ने 'कपिलवस्तु' में घर [illegible] वक्त अपने अश्व (घोड़े) को जिसका नाम 'कंथक' था, [illegible] 'कपिलवस्तु' को लौटाया था। वहां पर एक धम्म स्तूप था। इस स्थान [illegible] भी पता अब तक नहीं चला है।

वहां से 4 योजन और पूर्व में जाकर 'अंगार धम्म स्तूप' मिला। [illegible] 'अंगार धम्म स्तूप' बौद्ध-धम्म के ग्रंथों के अनुसार 'पिप्पली वन' के मौर्यों [illegible] बनवाया धम्म स्तूप था। 'कुशीनगर' में भगवान बुद्ध की धातुओं का बंटवारा हो जाने के बाद वे पहुंचे थे, तो 'द्रोण भिक्खु' ने उन्हें भस्म के बिखरे [illegible] जाने पर पात्र में चिता के अंगारों (कोयलों) को निकालकर दे दिया था [illegible] जाकर उन लोगों ने धम्म स्तूप बनवाकर रखा। इस स्तूप का भी पता अब तक नहीं लगा है। संभव है कि सम्राट अशोक के तुड़वाए हुए सातों स्तूपों की गणना में यह भी रहा हो। यदि यह बात ठीक है तब तो 'रामग्राम' [illegible] 'कपिलवस्तु' के ये धम्म स्तूप बचे रहे थे। 'अंगार धम्म स्तूप' नवम् स्तूप [illegible]

अंगार धम्म स्तूप से 12 योजन पूर्व जाकर कुशीनगर मिला। [illegible] भगवान बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए थे। यहां ही 'सुभद्र' नामक परिव्राजक को उन्होंने परिनिर्वाण शैय्या पर लेटते समय उपदेश दिया [illegible] और वह अर्हत हो गया था। यहां 'फाह्यान' को विभिन्न धम्म स्तूप [illegible] संघाराम मिले। नगर उस वक्त तक वीरान पड़ा था। केवल कुछ [illegible] श्रमणों के घर ही थे। इस वाक्य से यह ध्वनित होता है कि श्रमण [illegible] गृहस्थ थे। यह जगह 'गोरखपुर' कसबे के निकट है। वहां अब भी [illegible] धम्म स्तूप है और संघाराम के चिह्न भी मिलते हैं। समीप ही भगवान बुद्ध की एक बड़ी लम्बी (20 फुट की लेटी हुई) मूर्ति है जो उत्तर को सिर [illegible] [illegible] लेटी हुई अवस्था में है। वहां आसपास में अनेक [illegible] स्तूप के अवशेष चिह्न और मूर्तियां भी देखने को मिलती हैं।

कुशीनगर से दक्षिण-पश्चिम दिशा में 12 योजन चलकर यात्रियों को [illegible] [illegible] जहां से भगवान बुद्ध ने लिच्छिवी लोगों को 'कुशीनगर' [illegible] महापरिनिर्वाण अवस्था में आने समय लौटाया था। यहां एक डाल थी [illegible] [illegible] में 'फाह्यान' ने लिखा है कि लिच्छिवी लोगों ने भगवान बुद्ध [illegible]

1. नेपाल में गृहस्थ अब तक श्रमण हैं। वे बाण्य कहलाते हैं।

परिनिर्वाण स्थल पर [illegible] ने भगवान बुद्ध के [illegible] एक बड़ा [illegible] बुद्ध ने अपना भिक्षापात्र प्रदान [illegible] जगह पर एक धम्म स्तम्भ बना [illegible]

इस स्थान और धम्म स्तम्भ का [illegible] सम्राट अशोक ने वहां कोई धम्म स्तूप [illegible] है। डॉ. [illegible] जी का यह अनुमान [illegible]

लिच्छिवी लोगों के [illegible] और उसके साथी 'वैशाली' [illegible] जंगल में भगवान बुद्ध के रहने का [illegible] उसे अच्छी दशा में मिला। नगर से [illegible] उत्तर-पश्चिम 'धनुर्बाण त्याग' धम्म स्तूप [illegible] के पश्चिम में जहां भगवान बुद्ध ने [illegible] खड़े होकर कहा था कि "यह मेरा अंतिम [illegible] स्तूप था। 'धनुर्बाण त्याग' धम्म स्तूप [illegible] आनंद से कहा था कि मैं अब से तीन [illegible] प्राप्त होऊंगा। उस स्थान से [illegible] की गई धम्मसंगीति का स्थान था जहां भगवान बुद्ध के [illegible] वर्ष पश्चात त्रिपिटक साहित्य को फिर से [illegible]

'वैशाली' नगर का खंडहर वर्तमान में [illegible] जिले के 'हाजीपुर' विभाग में [illegible] अशोक का एक धम्म स्तम्भ भी है। [illegible] 1580 फुट लम्बा और 750 फुट [illegible]

'वैशाली' से पूर्व में 4 योजन पर [illegible] आनंद ने परिनिर्वाण लाभ किया था। [illegible] शरीर को साधना बल द्वारा भस्म किया था। [illegible] हो गए, जिसका एक हिस्सा तो [illegible] में धम्म स्तूप बनवाया और दूसरा [illegible] ले गया और उस पर उन्होंने आलीशान धम्म स्तूप [illegible]

स्थान सम्भवतया वही स्थान है जहां 'सोनपुर की गुफाएं' स्थित हैं। यहां पर [illegible] नदी और गडक नदी आदि नदियां आपस में मिली हैं।

यहां 'फाह्यान' और उसका साथी गंगा नदी के पार हुए और एक योजन दक्षिण चलकर 'पाटलिपुत्र' नगर में पहुंचे। पाटलिपुत्र का नगर पटना के निकट था। यहां 'फाह्यान' ने सम्राट अशोक के राजभवन को देखा। वह लिखता है कि "नगर में सम्राट अशोक का प्रासाद (महल) और संस्थागार (सभाभवन) है। सभी असुरों के द्वारा बनाए गए हैं। पाषाण चुनकर दीवार और द्वार बनाए गए हैं। जिन पर सुंदर खुदाई और पच्चीकारी की गई है। वैसा इस लोक के लोग नहीं बना सकते हैं। ये अब तक वैसे के वैसे ही हैं।" यहां उसने सम्राट अशोक के एक भाई की कथा भी लिखी है, जो अहत हो गया था और 'गृध्रकूट पर्वत' पर निवास करता था जिसके लिए राजा ने असुरों से नगर में पर्वत और गुफा (बराबर गुफा—सं.) बनवाई थी। साथ ही उसने राध नामक एक ब्राह्मण बौद्ध का माहात्म्य (महिमा) और चरित भी लिखा है। 'फाह्यान' ने यहां एक ऐसे संघाराम का भी वर्णन किया है जहां 'मंजुश्री' नामक एक ब्राह्मण आचार्य निवास करता था उसके पास दूर-दूर के लोग विद्याभ्यास के लिए आते थे। यह संघाराम सम्राट अशोक के धम्म स्तूप के निकट ही था। इस देश के वैभव का वर्णन 'फाह्यान' ने इस प्रकार किया है, "मध्य देश में इस जनपद का यह सबसे बड़ा नगर है। यहां के निवासी सम्पन्न और समृद्धशाली हैं। दान और सत्य में स्पर्धालु हैं।" 'फाह्यान' ने यह भी लिखा है कि यहां बड़ी धूमधाम से रथयात्रा आयोजित होती थी। यह रथयात्रा विश्व प्रसिद्ध थी। सम्राट अशोक के पहले स्तूप के विषय में जो उसने 'पाटलिपुत्र' में बनवाया था, 'फाह्यान' ने लिखा है कि "पहला महा धम्म स्तूप जो उसने बनवाया नगर की दक्षिण दिशा में 3 ली से अधिक दूरी पर है। इस धम्म स्तूप के सामने भगवान बुद्ध के पद चिह्न [illegible] स्थापित हैं। धम्म स्तूप के दक्षिण में पत्थर का एक धम्म स्तंभ है। यह [illegible] पंद्रह हाथ और ऊंचाई में 30 हाथ से अधिक है। [illegible] खोदा हुआ है, "अशोक राजा ने जंबूदीप चारों ओर के [illegible] को दान कर दिया। फिर धन देकर खरीद लिया। यह संस्कार [illegible] किया।" स्तूप के उत्तर में 400 कदम पर सम्राट अशोक ने [illegible] एक नगर बसाया था। 'नेले' नगर में पत्थर का एक धम्म



स्तंभ है, जो 30 हाथ से भी अधिक ऊंचा है, उसके ऊपर सिंह प्रतिमा निर्मित है। धम्म स्तंभ पर नगर बसने का हेतु, वर्ष, तिथि और मास खुदा हुआ है।

'पाटलिपुत्र' का खंडहर (भग्नावशेष) वर्तमान पटना के निकट महाशय रतनटाटा के उद्योग से खुदाई करने पर निकला है। अभी कुछ अशोकमात्र का आविर्भाव हुआ है, शेष मिट्टी के नीचे ही दबा पड़ा है। सम्राट अशोक के राजभवन के कुछ अंशों को जो निकले, देखकर स्पूनर महोदय का यह विचार है कि उसकी बनावट ईरान के महलों के ढंग की थी और इसी आधार पर मौर्यों को भी ईरानी कहने में उन्होंने कुछ संकोच नहीं किया है। इतना यहां कहने की आवश्यकता है कि सम्राट अशोक ने अपने महलों को बनाने हेतु दूर-दूर के देशों से कारीगरों को बुलवाकर काम लिया था। उसमें ईरान के और यूनान तक के कारीगर अपनी कला का प्रदर्शन करने में लगे थे और विभिन्न प्राचीन वस्तुओं के नमूनों को लेकर उसका निर्माण कराया गया था। इसी से यात्रियों ने उसे असुरों का बनाया लिखा है। 'पाटलिपुत्र' नगर का उल्लेख पुराणों में नहीं है। इसे मगध के महाराज अजातशत्रु ने गंगा और सोन नदी के संगम पर बसाया था। पहले वहां लिच्छिवी लोगों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए अजातशत्रु ने एक दुर्ग बनवाया था। दुर्ग उसके राज्यकाल में ही पूरा बन गया था या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता पर नगर की पूर्ति उसके पुत्र उदयभद्द के काल में हुई। महाराज नंद के समय में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। नंद को ध्वंस कर चाणक्य[1] के उद्योग से चंद्रगुप्त मगध का अधिपति हुआ और उसने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनाया। तब से निरंतर पाटलिपुत्र की अभिवृद्धि होती गई। चंद्रगुप्त के पोते सम्राट अशोक के काल में वहां अनेक भवन आदि और विशेषतया बुद्ध विहार और धम्म स्तूप बने। 'नेले' नगर का पता अब तक नहीं चला है। अधिक मुमकिन जान पड़ता है कि सम्राट अशोक ने इस नगर को उस समय बसाया हो जब वह बौद्ध धम्म की दीक्षा लेकर गृहत्यागी बनकर अलग रहने लगा था। यह एक छोटा-सा ग्राम था। इसके समीप के धम्म स्तूप पर क्या खुदा था, ठीक उस गांव के बसाने का कारण और तिथि लिखी थी या नहीं, इसके बारे में हम कुछ भी नहीं कह सकते। मुमकिन है कि उस धम्म स्तूप पर अशोक के धर्माभिलेख रहे होंगे, जिसे 'फाह्यान' ने इस नगर के बसने का हेतु और

1. बहुत से इतिहासकारों ने चाणक्य को काल्पनिक एवं आरोपित (थोपा गया) पात्र माना है।

तिथि समझ लिया होगा। सम्राट अशोक के भाई का उल्लेख जो 'फाह्यान' ने किया है, वह महेंद्र' ही प्रतीत होता है और अधिक सटीक जान पड़ता है कि उसी के संबंध से अशोक की बौद्ध-धम्म पर प्रेम और श्रद्धा प्रकट हुई हो। उस समय 'फाह्यान' ने जो देश में औषधालयों और धर्मशालाओं का उल्लेख किया है वे संभवतया वे ही धर्मशालाएं और चिकित्सालय थे, जिन्हें सम्राट अशोक ने सारे राज्य में स्थापित किया था और जिनका वर्णन सम्राट अशोक के दूसरे अनुशासन में है। उस समय उन चिकित्सालयों का व्यय राज्य की ओर से नहीं मिलता था किन्तु श्रद्धालु सेठ और धनिक लोग ही उनके व्यय के लिए प्रबंध करते थे। जगह-जगह पर सड़कों और मार्गों का उल्लेख जो 'फाह्यान' के यात्रा विवरण में पाया जाता है प्रायः उन्हीं राजमार्गों का निर्देशक जान पड़ता है, जिन्हें सम्राट अशोक ने अपने काल में राज्यभर में बनवाया था और जिनका उल्लेख मगधराज सम्राट अशोक के धर्माभिलेखों में भी आया है।

'पाटलिपुत्र' से 'फाह्यान' और 'तावचिंग' दक्षिण-पूर्व की तरफ चले। 9 योजन चलने पर उन्हें एक पर्वत मिला। उस पर्वत की गुफा में देवराज शक्र ने भगवान भगवान बुद्ध के निकट आकर बयालीस प्रश्न भूमि पर रेखा खींच-खींच कर किए थे। 'फाह्यान' ने लिखा है कि ये लकीर[2] अब तक पत्थर पर बनी हुई हैं और यहां पर एक संघाराम भी मौजूद है। 'सुएनच्वांग' ने इस गुफा का नाम 'इंद्रशील' गुफा लिखा है। यह स्थान बोधगया से 36 मील की दूरी पर 'पचाना नदी' के तट पर है। नदी के किनारे 'गिरियक गांव' के पास एक पर्वत की दो चोटियां हैं, जो नदी पर लटकी हुई हैं। इनमें जो अधिक उत्तर ओर की चोटी है उसका माथा चौकोर है। उस पर अनेक खंडहर भी दिखाई पड़ते हैं। देवराज शक्र के उन बयालीस सवालों का विवरण कल्पसूत्र में था जिसका अनुवाद 'कश्यप मातंग' ने चीन देश में जाकर 61 ई. में चीनी भाषा में किया था। सुत्तपिटक में भी अनेक स्थानों पर देवराज शक्र के सवालों के जवाब जो भगवान बुद्ध ने दिए थे, मिलते हैं। पर मुख्य ग्रंथ जिसमें इन बयालीस सवालों के जवाब का वर्णन

1 सिरोलकाई मूल के बौद्ध ग्रंथ दीपवंस, महावंस और दिव्यावदान ग्रंथों के अनुसार महेन्द्र (माहेन्द्र) सम्राट अशोक का पुत्र था, भाई नहीं।

2 यह संभव नहीं है कि जमीन पर लिखने मात्र से ये रेखाएं शताब्दियों तक कायम रहें। हमें तो यही लगता है कि कुछ श्रद्धालु जनों ने स्मारक के रूप में इन रेखाओं को पत्थर पर खुदवा दिया होगा।



उपलब्ध है और जिसका अनुवाद 'कश्यप मातंग' ने चीनी भाषा में किया था, अब तक वह पालि व संस्कृत भाषा में नहीं मिलता।

'इंद्रशील गुफा' से दक्षिण पश्चिम में एक योजन चलकर वे एक ग्राम में पहुंचे, जिसका नाम 'नाल' (नालक) लिखा है। यह सारिपुत्त का जन्म स्थान था और यहीं उनका परिनिर्वाण भी प्राप्त हुआ था।

सारिपुत्त का परिनिर्वाण भगवान बुद्ध के जीवनकाल में ही हो चुका था। कहते हैं कि जब भगवान बुद्ध से सारिपुत्त को यह पता चला कि लोकनाथ का महापरिनिर्वाण होने को है तो सारिपुत्त ने निवेदन किया कि मैं यह घटना अपनी आंखों से न देखूं। यह बात उसने भगवान बुद्ध से तीन बार कही और भगवान बुद्ध की सहमति लेकर उनकी सौ बार परिक्रमा कर तथा तीन बार उनके चरण कमलों पर अपना मस्तक धर वह राजगृह की ओर परिनिर्वाण प्राप्त करने के लिए चला। नालंदा में अपने घर पहुंचने पर उसे परिनिर्वाण प्राप्त हुआ। सारिपुत्त का जन्मस्थान[1] 'उपतिष्य' नामक ग्राम पालि ग्रंथों में लिखा है। मुमकिन है कि नाल इसके पास ही का कोई ग्राम रहा हो अथवा 'नाल' ग्राम ही, उपतिष्य ग्राम हो। अथवा नाल वह ग्राम हो जहां सारिपुत्त और मौद्गल्यायन अपने आचार्य के पास विद्याध्ययन करते रहे हों। नाल ग्राम को 'फाह्यान' ने 'गिरियक' व 'इंद्रशील पर्वत' से दक्षिण पश्चिम में एक योजन पर लिखा है, और 'सुएनच्वांग' ने भगवान बुद्ध के बोधिवृक्ष से 3 योजन पर। लंका वालों ने पालि ग्रंथों में बोधगया से नालंदा एक योजन पर लिखा है। हालांकि इन सभी पर विचार करते हुए नालंदा के स्थान को निश्चय करने में बड़ी कठिनाई होती है, फिर भी नालंदा का ठीक पता बहुत दिन हुए जनरल कनिंगम साहब ने पक्का कर दिया है। उसका खंडहर 'बड़गांव' (नालंदा) नामक स्थान के पास वर्तमान में है। यह 2,600 फुट लंबाई और 400 फुट चौड़ाई में है। पूर्वकाल में वहां एक महाविहार [illegible] जहां देश-देशांतर के विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे। 'फाह्यान' ने वहां केवल एक धम्म स्तूप का उल्लेख किया है, जो सारिपुत्त के परिनिर्वाण के स्थान पर बना हुआ था। 'सुएनच्वांग' का कथन है कि 'नालंदा' में एक बहुत बड़ा महाविद्यालय था। वहां उसने 'शीलभद्र आचार्य' से योग शास्त्र पढ़ा था।

1 सारिपुत्र का जन्म 'उपतिष्य' नाम के गांव में हुआ था [illegible] और फिर नालक कहा जाने लगा। वर्तमान में इसका नाम है [illegible]

[illegible] [illegible] का अध्ययन कर अपनी [illegible] ज्ञान का [illegible] किया था। [illegible] आचार्य आम्र और [illegible] का अध्ययन भी किया था। यह नालन्दा का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय [illegible] है [illegible] जिसका खण्डहर अब भी मिलते हैं।

[illegible] में पश्चिम दिशा में एक योजन चलकर [illegible] [illegible] में पहुँचे। 'फाह्यान' ने इसे 'अजातशत्रु' का बसाया लिखा है [illegible] [illegible] लिखा है कि इस नगर को [illegible] [illegible] [illegible] था। यहाँ 'अजातशत्रु' ने इसे अपनी राजधानी बनाकर [illegible] [illegible] [illegible] 'बिम्बिसार' द्वारा [illegible] प्राचीन [illegible] [illegible] इस [illegible] थे और नगर के बाहर पश्चिम द्वार में [illegible] [illegible] स्तूप था, जिसे महाराजा 'अजातशत्रु' ने भगवान [illegible] [illegible] पर बनवाया था जो इस 'कुशीनगर' में [illegible] [illegible] है कि यह स्तूप इस समय [illegible] [illegible] [illegible] निकाल दी। इस गिराकर भगवान बुद्ध की [illegible] [illegible] दिया होगा। नगर के दक्षिण द्वार से निकलकर दक्षिण के [illegible] पाँच पर्वत के बीच का दुर्ग मिला। यह दुर्ग बिल्कुल [illegible] [illegible] है। इसी दुर्ग के मध्य में प्राचीन 'राजगृह' का नगर बसा [illegible] 'बिम्बिसार' की पहले यही राजधानी हुआ करती थी। [illegible] [illegible] थे। 'फाह्यान' का लिखना है कि नगर पूर्व पश्चिम [illegible] [illegible] और उत्तर दक्षिण में सात आठ ली लम्बा चौड़ा था। यहाँ [illegible] [illegible] का उल्लेख 'फाह्यान' ने किया है, जिनमें [illegible] [illegible] है। यह विहार नगर के उत्तर पूर्व कोण में 'अम्बपाली' के [illegible] [illegible] 'जीवक' का बनवाया हुआ था। यह यहाँ पर इस समय [illegible] था। नगर वासियों को यह स्थान वीरान मिला। इस समय [illegible] [illegible] था। 'अजातशत्रु' अपने पिता के खिलाफ होकर प्राचीन [illegible] [illegible] राजगृह में रहता था, और जब वह अपने पिता को [illegible] [illegible] पर बैठा, तो नवीन राजगृह को उसने अपनी राजधानी [illegible] बिम्बिसार के परिनिर्वाण पर यही सही प्राचीन राजधानी और [illegible] [illegible] हो गई और नवीन राजगृह की शोभा में वृद्धि होने लगी।

1 [illegible] [illegible] मालवती का पुत्र था। अम्बपाली के पुत्र का [illegible] [illegible] था, जो भिक्षु बन गया था [illegible]।

[illegible]

[illegible] मिलती। यह लिखता है कि [illegible] था। 'देवदत्त' ने [illegible] [illegible] [illegible] 30 [illegible] [illegible]

1 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जहां बुद्ध लोग बोधिज्ञान प्राप्त करते हैं, भगवान बुद्ध आगे चले। देवताओं द्वारा मार्ग बतलाने पर वे वहां से पश्चिम और पीपल के पेड़ (बोधिवृक्ष) की ओर चले थे। मार्ग में 30 कदम जाकर उन्हें किसी कुश उखाड़ने वाले (सोत्थिय नामक घसियारा) ने कुश के आठ पूले दिए थे। 'फाह्यान' ने लिखा है कि यह भी एक 'देवता' था। फिर आगे 15 पग जाने पर 'फाह्यान' का कहना है, "500 हरे पक्षी (तोते) उड़ते हुए आए, बोधिसत्व के तीन चक्कर लगाए, और चले गए।" हरे पक्षी से संभवतया उसका अभिप्राय तोता से जान पड़ता है क्योंकि वहां तोते अक्सर धांग (पंक्ति) बांधकर उड़ते हैं। फिर बोधिवृक्ष मिला। 'फाह्यान' ने उसे 'पत्र' वृक्ष लिखा है। संभवतया यह 'चलपत्र' होगा। संस्कृत भाषा में 'चलपत्र' पीपल के वृक्ष को कहते हैं। यहीं पर 'मार' ने उनके 'बोधिज्ञान' के प्राप्त करने में अवरोध डालना चाहा था पर वह असफल होकर भागा था और यहीं उन्हें बोधिज्ञान लाभ हुआ था। इन स्थलों पर बहुत से स्तूप बने थे और मूर्तियां स्थापित थीं। 'फाह्यान' का कहना है कि "वे अब तक हैं।" बोधिज्ञान लाभ करने के स्थान पर उसे तीन संघाराम मिले और सब में भिक्खु मौजूद थे। भगवान बुद्ध के विभिन्न लीलास्थलों पर जैसे 'चंक्रमण स्थान', ध्यानस्थानादि पर धम्म स्तूप बने थे। भिक्खुओं के बारे में 'फाह्यान' का कथन है, "भिक्खुसंघ सभी जरूरी पदार्थ [illegible] किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती। विनय का यथार्थ पालन करते हैं। बैठने उठने और संघ में जाने के आचार व्यवहार उसी विनय (नियम) के अनुसार हैं जैसे भगवान बुद्ध के समय में थे। भिक्खुसंघ हजार वर्ष से अब तक चला आ रहा है।" वहां दक्षिण में तीन ली पर 'कुक्कुट पाद' व 'गरुड़पाद पर्वत' पड़ा। यहां 'महाकश्यप' का स्थान था। 'फाह्यान' ने लिखा है कि 'महाकश्यप' अब तक इस पर्वत पर निवास करते हैं। वे पर्वत की दरार में प्रवेश कर गए हैं। प्रवेश के स्थान में मनुष्य की समाई (प्रवेश) नहीं है। नीचे उतरकर दूर किनारे पर एक बिल (गुफा) है। कश्यप संदेह उसमें (रहते) हैं। वहां की मिट्टी के विषय में 'फाह्यान' लिखते हैं कि 'बिल पर 'महाकश्यप' ने हाथ धोए थे। आसपास के लोगों के सिर में घाव लगता है तो वहां की मिट्टी लगाकर वे चंगे हो जाते हैं।' यह बात उसने सुनी सुनाई लिखी है जो वहां के भिक्खुओं ने कही होगी। पर्वत में उसने अनेक अर्हतों का रहना लिखा है। उसका कथन है कि "आसपास के सारे जनपद के



बौद्ध लोग यहां आकर साल-दर साल 'महाकश्यप' की पूजा करते हैं। धर्म के श्रद्धालुओं के पास रात्रि में अर्हत आते हैं, बातचीत करते हैं, शंकाओं का समाधान करते हैं और अंतर्धान हो जाते हैं।" यह बात वैसी ही है, जैसे अब तक लोग 'झूसी' और 'गिरनार' आदि के सिद्ध के विषय में कहा करते हैं व 'हरिद्वार' आदि के महात्माओं के बारे में मन गढ़ते गढ़ते हैं, पर आज तक वे किसी को नहीं मिले। लोग सीधे-सादे लोगों को इस प्रकार की बातों में फांसकर अपना स्वार्थ साधा करते हैं व आतंक और महत्त्व जमाते हैं। यदि तनिक भी यह कह दो कि यह बात संभव नहीं है व मिथ्या है, फिर क्या है, आप नास्तिक हैं, विधर्मी हैं, यह कलियुग है इन बातों से ही तो यह दुर्दशा है, इत्यादि अनेक प्रकार के आरोपों की बौछारें होने लगती हैं। खेद का विषय है कि ऐसी बातें कहने वाले अपने आचरण की तरफ जरा भी दृष्टिपात नहीं करते हैं कि वे कितने कलुषित और वंचकता (धोखेबाजी, धूर्तता) से भरे हैं जिनसे बेचारे यात्रियों के आचरण और उनकी बातों को न मानने वालों की चाल-ढाल कहीं पवित्र और सरल है। हाय! ऐसे ही लोगों की चाल से पवित्र तीर्थों की महिमा दिनों दिन कम होती जा रही है। ये लोग सुंदर फूल के कांटे की तरह हो रहे हैं जिनके आतंक से कोई अपने पवित्र तीर्थ स्थानों और प्राचीन स्थलों को जाकर आनंदपूर्वक उनका दर्शन भी नहीं कर सकता।

ये सभी स्थल 'बोधगया' के आसपास के हैं जिनके खंडहर अब तक बोधगया में विद्यमान हैं। 'हर्ष पर्वत' और 'शोभानाथ' के मध्य, तथा 'कुर्कीहार' से सात मील उत्तर-पूर्व में बौद्धों के अनेक खंडहरों के चिह्न मौजूद हैं। जेठियां, कोंच, डोंगरा पहाड़ी में भी अनेक खंडहर मिलते हैं। 'गुनेरी' में बुद्ध की अनेक मूर्तियां हैं और यहीं पर एक संघाराम के चिह्न मिलते हैं। इनके अलावा अन्यत्र भी संघारामों, गुफाओं और बुद्ध विहारों के चिह्न मिलते हैं।

'गुरुप्पा' व 'गरुड़पाद' से 'फाह्यान' 'पाटलिपुत्र' की ओर फिरा और 'गंगा नदी' के किनारे पश्चिम-उत्तर दिशा में 10 योजन पर उसे 'अनालय' नामक बुद्ध विहार मिला। यह अनालय 'बलिया' के आसपास में था। 'बलिया' के गजटियर ने लिखा है कि 'फाह्यान' ने जिसे 'अनालय' व 'आरण्य' और सुएनच्वांग ने जिसे 'अविद्धकरण' लिखा है वह स्थान बलिया नगर के निकट था और अब वह 'ओयना' कहलाता है। यहां खंडहर है, पर 'कारलायल' महोदय ने इसे 'गड़हा' परगना में 'नारायणपुर' मानने पर बल दिया है।

[illegible] पश्चिम की ओर है। इसके आगे [illegible] कोशाम्बी की ओर प्रस्थान में रुचा होता तो अपने [illegible] प्रयाग का उल्लेख करता क्योंकि 'सारनाथ' से 'कोशाम्बी' उसे पहले अवश्य मार्ग में पड़ता।

दक्षिण के वर्णन तो उसने अश्रुतपूर्वक (बिना सुने) ही किया है। [illegible] बुद्ध के पश्चात् 'वैहार' का वर्णन तो 'न भूतो न भविष्यति' है। यह [illegible] में अतिशयोक्ति पूर्ण प्रतीत होता है। यह उस वर्णन से कुछ कम नहीं है [illegible] के उत्तरीय-पथस्थ मान पूर्व पहले 'बगाल' और 'कामरूप' से लेकर [illegible] वह के बुद्ध-कल्प के विषय में किया करते थे। ऐसा अनुमान होता है कि [illegible] को बाद उसने दक्षिण के किसी यात्री से सुनकर लिखा है और [illegible] सम्बन्ध सम्भव नहीं कह होगा, कोई महाभूत था जिसने 'अजंता' [illegible] दक्षिण के किसी अन्य प्राचीन बुद्धविहार को देखा था व उसके वर्णन [illegible] सुन के सुनकर मोटे-माटे विदेशी भिक्षु के लिए वर्णन किया था।

फाहान 'वाराणसी' से पूर्व की ओर लौटकर 'पाटलिपुत्र' [illegible] अब इस बात में भी यही स्पष्ट प्रामाणित होता है कि 'फाहान' [illegible] नहीं गया था और उसने जो कुछ वहां के विषय में [illegible] किया है वह सुनी-सुनाई बात है।

फाहान के भारतवर्ष आने का मुख्य उद्देश्य बौद्ध ग्रन्थों को प्राप्त [illegible] करना (उनकी प्रतिलिपि तैयार) करके उन्हें स्वदेश ले जाना है। [illegible] अपने उद्देश्य में वे मध्य देश तक पहुंचे थे। 'पाटलिपुत्र' में पहुंचकर [illegible] ग्रन्थों की खोज करना आरम्भ किया। जहां उसने देखा सभी जगह [illegible] उसे आचार्य लोग सम्प्रदाय से देते चले आते थे। यह [illegible] लिखता है कि "इतनी दूर चलकर मध्य देश (भारत) आया। यहां महासांघिक के भण्डार में एक निकाय का 'विनय' मिला अर्थात् महासांघिक [illegible] का बनाया 'फाहान ने अट्ठारह निकायों का उल्लेख किया है। इसे [illegible] अन्य अनुवादकों ने 'सम्प्रदायः' लिखा है। बौद्धों में निकाय [illegible] है? इस सम्बन्ध में यहां की शासाएं। जिस प्रकार हर्यक शासन [illegible] में प्रकार पृथक् पृथक् है और जितनी शाखाओं में साहित्य [illegible] भी प्रकार से भेद है, यदि मौद्गल्य और ब्राह्मण एक है तो उनमें [illegible] भेद है? ये सभी बौद्ध के निकाय थे। निकाय दर्शन भेद नहीं [illegible]

[illegible] 1. 'महासांघिक' निकाय [illegible]
2. 'आर्यस्थविर' निकाय [illegible]
3. 'आर्यसम्मति' निकाय [illegible]
4. 'आर्यसर्वास्तिवाद्' निकाय [illegible]

3 आचार्य निकाय ही [illegible] निकाय कहता है। इनके विषय में भी [illegible] पाठभेद और विभिन्नता पड़ी है। इन चारों निकायों में **विनयपिटक के सूत्र** पाठभेद (संख्या) की संख्या में निम्नलिखित थी

| | |
|---|---|
| 1 आर्य सांघिक निकाय | 1,00,000 |
| 2 आर्यस्थविर निकाय | 1,00,000 |
| 3 आर्यसम्मति निकाय | 2,00,000 |
| 4 आर्यसर्वास्तिवाद् निकाय | ज्ञात नहीं। |

'पटना' में रहकर 'फाहान ने विनयपिटक' को [illegible] और यहीं संस्कृत से उसे यहां निम्नलिखित पांच ग्रंथ मिले

1. **'महासांघिक निकाय'** का विनय पिटक
2. एक और अज्ञात निकाय का विनय (नाम नहीं दिया है)
3. **'सर्वास्तिवाद् निकाय'** का विनय पिटक
4. **संयुक्त धर्म हृदय**
5. एक और अज्ञात निकाय का **सूत्र पिटक**
6. परिनिर्वाण उपदेश सूत्र
7. महासांघिक निकाय का **"औपपत्ति पिटक"**

'पटना' में रहकर 'फाहान' ने जो [illegible] ग्रंथों की नकलें तैयार कीं [illegible] तीन वर्ष तक रहकर उन्हें संस्कृत में पढ़ा और अभ्यास किया और 'विनय पिटक' की प्रतिलिपि तैयार कर ली।

उसमें 5,000 भिक्खु रहते हैं। यहां भगवान बुद्ध का एक मंडप भी है उस पर सोने-चांदी और पच्चीकारी का काम है, सर्वत्र रत्न लगे हैं। मध्य में हरित नीलमणि (लाजवर्त) की एक प्रतिमा है जो 20 हाथ ऊंची, सर्वांग सप्तरत्न से देदीप्यमान प्रशांत भावयुक्त—वाणी से वर्णनातीत है, दाहिने हाथ में एक अमूल्य मुक्ता-मणि है।"

इसी बुद्धविहार में एक बार 'फाह्यान' को जब वह अत्यंत शोकग्रस्त हुआ, क्योंकि वहां वह नितांत अज्ञात और अपरिचित था, किसी की बात को नहीं समझ पाता था, सभी अपरिचित थे, एक चीनी व्यापारी मिला जो रेशमी पंखा (बेना) चढ़ा रहा था। 'फाह्यान' लिखता है कि उसे देख "विवशतः आंसू भर आए और नेत्रों से टप-टप गिरने लगे।" यहां उसने एक अर्हत का अंतिम दाह-संस्कार देखा। वह अर्हत नगर के दक्षिण में 7 ली पर 'महाविहार' में निवास करता था। यहां उसने एक अन्य भारतीय बौद्ध विद्वान को कथा वाचन करते सुना था कि भगवान बुद्ध का भिक्खापात्र पहले वैशाली में था, अब वह गांधार में है, इतने वर्ष में अमुक स्थान पर जाएगा फिर वहां से अमुक देश में इत्यादि। उसके व्याख्यान को 'फाह्यान' ने कोई सूत्र ग्रंथ समझा था और वह उसे तत्काल लिखने को तैयार भी हो गया था, परंतु जब उस पंडित ने कहा कि यह कोई सूत्र नहीं, बल्कि मेरी व्याख्या है तो वह चुप रह गया और उसे लिखा नहीं। वह वर्षों की संख्या भी भूल गया।

'फाह्यान' 'सिंहल देश' में दो वर्ष रहा। वहां उसे खोजने पर निम्नलिखित चार पुस्तकों की प्रतियां मिलीं—

1. **'महीशासक निकाय'**—का विनयपिटक
2. **दीर्घागम (दीघनिकाय)**
3. **संयुक्तागम (संयुत्तनिकाय)**
4. **संयुक्तसंचय पिटक—(संभवतया खुद्दक पाठ)**

इन पुस्तकों को लेकर 'फाह्यान' एक व्यापारी की नौका पर सवार हुआ वायु सानुकूल मिली पर, दुर्योगवश तीन दिन चलकर तूफान आया, नौका में पानी भरने लगा, कहीं नौका में छेद हो गया था पर पता नहीं चलता था। सभी लोग घबरा उठे। व्यापारी भाग-भागकर छोटी नाव में, जो उस बड़ी



नौका के साथ लगी थी, भरने लगे। जो लोग उसमें पहले पहुंच गए, उसे डर से कहीं अधिक लोग भर गए तो उस नाव के भी डूबने की आशंका होगी, उन्होंने रस्सी को काट दिया और छोटी नौका बड़ी नौका से पृथक हो गई। सभी यात्री घबरा गए, बुद्धि ठिकाने न रह गई। भारी भारी गठरी उठाकर समुद्र में फेंकने लगे, 'फाह्यान' ने भी अपना गगरा, लोटा और अन्य असबाब (सामान) समुद्र में फेंक दिया। वह बहुत भयभीत हुआ, मन ही मन डरता था कि कहीं लोग उसे वह गठरी भी समुद्र में फेंकने को मजबूर न करें। जिसमें उसके सारे श्रम के फलस्वरूप विनयपिटक और अन्य सूत्रों की प्रतियां बंधी हैं अथवा कोई बलपूर्वक छीनकर कहीं समुद्र में उन्हें फेंक न दे। 'फाह्यान' लिखता है कि "हृदय में अवलोकितेश्वर का ध्यान किया, हीन देश के भिक्खुसंघ को प्राण अर्पण किए—मैंने धर्म को ढूंढ़ने के लिए सुदूर की यात्रा की है (मुझे) अपना तेज और प्रताप देकर, लौटाकर अपने स्थान पर पहुंचाओ।"

तूफान 13 दिन तक रहा। सबमें लगातार घबराहट रही। तेरहवें दिन नाव संयोग से एक द्वीप के किनारे लगी, बड़ा थमने पर नौका के छेद की जांच हुई, छेद का पता लगा और उसका बंद किया गया। ठीक-ठाक हो जाने पर नौका आगे बढ़ी। समुद्र की कठिनाइयों का वर्णन 'फाह्यान' ने इन शब्दों में किया है, "समुद्र के मध्य बहुत सारे समुद्री डाकू रहते हैं उनसे मिले बगैर बचकर नहीं जा सकते। यह समुद्र (अति) विस्मृत है, कोई ओर-छोर नहीं, पूर्व-पश्चिम का ज्ञान नहीं, केवल सूर्य, चंद्रमा और तारों के अवलोकन से ठीक मार्ग पर चलते हैं, आधी पानी में वायु ही के ले जाने से जाते हैं, निश्चित मार्ग नहीं, रात की अंधियारी में केवल ऊंची लहरें परस्पर थपेड़े खाती दिखाई पड़ती हैं, अग्निवर्ण ज्वाला निकलती है। साथ ही साथ जल पर बड़े-बड़े कछुए और अन्य समुद्र के जीव-जंतु (निकलते व दिखाई पड़ते हैं)। व्यापारी भयभीत, नहीं जानते कि कहां जा रहे हैं—समुद्र गंभीर थाह नहीं—लंगर डालने और ठहरने का ठौर नहीं, परंतु जब आसमान खुल गया तो पूर्व-पश्चिम सूझने लगा, फिर लौटे, ठीक रहे, पर चले, कहीं गुप्त चट्टान पड़ी तो बचने का मार्ग नहीं।"

ऐसे भयानक समुद्र में अपने प्राण हथेली पर रखकर 'फाह्यान' नाव के ठीक हो जाने पर चढ़कर 90 दिन से अधिक बीतने पर जावा द्वीप में पहुंचा। जावा द्वीप में 'फाह्यान' 5 महीने रुक गया। उस जनपद में बौद्ध धम्म

एक तो अंत के खंड में पृ. 22 पर उसकी यात्रा का प्रतीक देकर किंगलिंग (यह नानकिंग का दूसरा नाम है) में आचार्य बुद्धभद्र के साथ रहकर उसका अनुवाद करने का वर्णन है। फिर दूसरे खंड (पृ. 15) में "बौद्ध जनपदों का विवरण" लिखा है और टीका में यह लिखा है कि यह श्रमण 'फाह्यान' का ग्रंथ है। फिर पृ. 13 में "फाह्यान का विवरण" दो जिल्दों में और पुनः "फाह्यान की यात्रा का विवरण, एक जिल्द में" लिखा है। लेगी महोदय लिखते हैं कि "ये तीनों संभवतया एक ही पुस्तक की पृथक-पृथक प्रतियों का ही उल्लेख हो सकता है।" प्रथम और अंत के दोनों एक ही सूची के अलग-अलग खंड हैं। आगे लेगी महोदय ने अपनी प्रति की प्राचीनता सिद्ध करने के लिए विभिन्न सूचियों को उद्धृत किया है।

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट है कि वह पुस्तक जिसमें 'फाह्यान' का आचार्य बुद्धभद्र के साथ किंगलिंग में अनुवाद करने का वर्णन है, संभवतया यह नहीं है। यह भी मुमकिन है कि वह इसी का उत्तरार्द्ध रहा हो अथवा कोई वृहत् ग्रंथ हो, हम बिना देखे निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कह सकते, पर इसमें तो आचार्य बुद्धभद्र के साथ नानकिंग (किंगलिंग) में अनुवाद का कुछ भी उल्लेख नहीं है। हम तो वर्तमान प्रति के आधार पर ही विचार करना है।

आधुनिक रीति से सोच-विचार करने पर तो हम यह कह सकते हैं कि यह 'फाह्यान' का लिखा नहीं है। पर जब हम पूर्व के अथवा प्राचीन लिखे अन्य ग्रंथों पर दृष्टिपात करते हैं तो हम यह कहने पर विवश हो जाते हैं कि प्राचीन काल में समस्त पूर्वी देशों में लिखने की यही परिपाटी प्रचलित थी। भारतवर्ष के अति प्राचीन ग्रंथों को जाने दीजिए, 'कौटिल्य' के 'अर्थशास्त्र' और 'राजशेखर' के 'काव्यमीमांसा' को ही लीजिए जिनका उन्हीं के हाथों का होना निर्विवाद लोग मानते हैं, पर उनकी रचना को देखकर कोई यह कह नहीं सकता कि ये ग्रंथ 'कौटिल्य' व 'राजशेखर' के लिखे हुए हैं। इसी प्रकार यद्यपि रचना से यह मालूम पड़ता है कि यह ग्रंथ 'फाह्यान' का लिखा नहीं है तो भी यह मानते हुए कि प्राचीनकाल में लेखकों की यही परिपाटी थी, यह मानने में कुछ भी संकोच नहीं है कि बालीसवें अध्याय के अंत तक सारा ग्रंथ 'फाह्यान' ने चीन देश में पहुंचकर लिखा कि "पढ़ने वाले जानें कि उसने क्या-क्या सुना और देखा।"



यद्यपि 'फाह्यान' धार्मिक यात्रा करने और बौद्ध धर्मग्रंथों का संग्रह करने के उद्देश्य से आया था और इसीलिए उसने इतने कष्ट उठाए, पर फिर भी उसने अपने समय के आचार-व्यवहार को जो उसने भिक्खुसंघ में देखा था और देशवासियों की अवस्था का अच्छा चित्र खींचा है। विदेशी यात्रियों के लेखों से किसी देश के इतिहास की सत्यता की जांचना अच्छी बात है, यही कारण है कि श्रावस्ती, कुशीनगर और लुंबिनी आदि के स्थानों का निर्णय हो जाने पर भी स्मिथ महोदय सरीखे ऐतिहासिकों को जो वर्षों फैजाबाद, बस्ती और गोरखपुर में कलक्ट्री और कमिश्नरी आदि पदों पर रह चुके थे, प्रायः स्वयं भ्रम में पड़ना और अन्यों को शंका में डालना पड़ा है। उन्हें फुहर महोदय सदृश सत्यवादी विद्वान तक पर जाल करने का कलंक लगाना पड़ा है।

यहां हम 'फाह्यान' के मार्ग का पुनः दिग्दर्शन करा देना उचित समझते हैं जिससे इस बात के पढ़ने वालों को साधारण रीति से ज्ञान हो जाए कि उसने कहां से अपनी यात्रा का आरंभ किया और किन-किन जनपदों से होकर वह भारतवर्ष में आया तथा किस मार्ग से होकर चीन को लौट गया।

'फाह्यान' 'चांगान' से 400 इ. में विनयपिटक की खोज में भारतवर्ष की ओर चला। वह 'लंग' से होकर 'कीनक्वी' में आया और वहां उसने वर्षावास किया। वहां से 'यंगालो पर्वत' पारकर 'चांगयी' में आया। वहां उस समय उपद्रव मचा हुआ था। वहीं वर्ष भर रुक गया। विप्लव शांत हो जाने पर 'तुनह्वांग' में आया और वहां के शासक की सहायता से 'गोबी' पारकर 17 दिन में 'शेनशेन' में आया। 'शेनशेन' प्रदेश से पंद्रह दिन में 'ऊए' पहुंचा। 'शेनशेन' 'लोवनगर' के आसपास और 'ऊए' तुरकिस्त के किनारे था। ये दोनों प्रदेश अब 'गोबी' के मरुस्थल के नीचे हैं, और 'लोवनगर' के आसपास सौ-दो सौ मील के भीतर थे। अधिक सटीक है कि वे नगर जहां पर कई बार यात्रा करने से यूरोपीय और रूसी यात्रियों को मूल्यवान प्राचीन प्रतियां मिली हैं इन्हीं जनपदों के रहे हों, जो पीछे मरुभूमि की बालुका (रेत) में दबकर सदा के लिए संसार से मिट गए।

'ऊए' से 'फाह्यान' 'खुतन' आया और वहां की रथयात्रा देख 25 दिन में 'जीहो' और 'जीहो' से 4 दिन में 'सुगलिंग' पहुंच पर्वत पारकर 'यूह्वे' पहुंचा। 'जीहो' और 'यूह्वे' का पता यद्यपि यूरोपीय विद्वानों को अब तक

'पशावर' से 'नगार' गया और 'नगार' से 'होकम' के किनारे से जाल से 'पाना' होकर फिर एक झूले से पुल से पार करके 'पाना' आया।

'पाना' से दक्षिण पूर्व चलकर 'मथुरा' आया फिर यमुना के किनारे किनारे चलकर 18 योजन पर 'सांकाश्य' नगर मिला। सांकाश्य नगर में वर्षावास व्यतीत कर 'कान्यकुब्ज' नगर आया और 'कान्यकुब्ज' से गंगा नदी पार करके 'आलं' गांव में जो 'कान्यकुब्ज' से पश्चिम में तीन योजन पर था, गया।

आलं से दस योजन पर 'सांकेत' दक्षिण पूर्व में पड़ा। यह 'सांकेत' नाम विवरण मिलाने से 'सुप्तनच्चाग' का 'विसाखा' मालूम पड़ता है। संभवतः यह 'साकेत' का ही विकृत नाम हो, ऐसा अनुमान होता है।

'सांकेत' से आठ योजन पर 'कोशल जनपद' की राजधानी श्रावस्ती में गया। 'श्रावस्ती' से 'कपिलवस्तु' की ओर गया और 'लोनाकन' के दर्शन किए। 'लुंबिनी' भगवान बुद्ध का जन्म स्थान है और नेपाल में बस्ती में 'भगवानपुर' के पास है।

'लुंबिनी' से 'रामस्तूप' होते हुए 'कुशीनगर' व 'कसया' गया और वहां से 'वैशाली' पहुंचा। 'वैशाली' से 'पाटलिपुत्र' और वहां से 'राजगृह' गया और 'गृध्रकूट पर्वत' और 'सप्तपर्णी गुफा' होता हुआ 'बोधगया' में पहुंचा।

'बोधगया' से 'गरुड़पाद पर्वत' का दर्शन कर 'अनालय' से अस्सी से जो 'बोलिया' के पास था, होता हुआ 'वाराणसी' आया। 'वाराणसी' में 'ऋषिपत्तन' मृगदाव के 'धर्मचक्र प्रवर्तन' स्तूप (धम्मक स्तूप) का दर्शन कर 'पाटलिपुत्र' लौट गया और वहां तीन वर्ष रहकर उसने अनेक पुस्तकों का संग्रह किया और संस्कृत विद्या का अध्ययन किया।

'पाटलिपुत्र' से 'फाह्यान' अठारह योजन चलकर 'चंपा' गया। 'चंपा' अब 'भागलपुर' जिले में है, जो 'चंपा नगरी' कहलाती है। 'चंपा' से वह 'ताम्रलिप्ति' गया जिसे अब 'तमलुक' कहते हैं। वहां दो वर्ष रहे और वहां पोथी तथा चित्रों की प्रतिलिपि तैयार करके ली।

'तमलुक' से 'फाह्यान' एक व्यापारी नौका पर सवार होकर सिंहल में गया और वहां दो वर्ष तक रहा और अनेक ग्रंथों की प्रतिलिपि की।

'सिंहल से फाह्यान' 'जावा दीप' गया। वहां पांच महीने तक ठहरा रहा। फिर एक अन्य नौका पर चढ़कर 'चीन' को चला। तीन महीने के आसपास तूफान में भटकती हुई नाव 'चांगक्कांग' के किनारे लगी। वहां के शासक 'लए' ने 'फाह्यान' का स्वागत किया और वह उसे अपने शासक स्थान 'सिंगचाव' में ले गया। 'सिंगचाव' में 'फाह्यान' ने एक वर्ष व्यतीत कर, फिर दक्षिण को चलकर 'नानकिंग' गया और वहां अपने अभीष्ट ग्रंथों का अनुवाद करने लगा।

इस यात्रा में 'फाह्यान' के शब्दों में ही, "वह 6 वर्षों में 'मध्य देश' (भारत) पहुंचा, 6 वर्ष वहां घूमा-फिरा, लौटकर 3 वर्ष में 'सिंगचाव' पहुंचा, 36 से कोई ही कम जनपदों में भ्रमण किया" सब मिलाकर उसको पंद्रह वर्ष लगे।

'फाह्यान' के स्वभाव और प्रकृति के विषय में उपसंहार के लेखक के जो कोई उसका मित्र व अनुयायी मालूम पड़ता है, ये शब्द मात्र पर्याप्त हैं कि "वह नम्र और सुशील था। जबसे इस बड़े धर्म का पूर्व के देश में प्रचार हुआ कोई भी निरपेक्ष, धर्म का जिज्ञासु आचार्य सा नहीं हुआ। अतः मैं तो जान गया कि सत्य के प्रभाव को कोई रोक नहीं सकता, चाहे वह जितना बड़ा हो, वह (भवसागर को) पार ही कर जाता है। मानसिक बल जो काम चाहे, उसे पूरा करने में चूकता नहीं। ऐसे कार्यों का संपादन, आवश्यक को भूलने और भूले हुए को स्मरण करने से होता है।"

यागशान में चलकर लग में होकर वे 'नीनकी' के जनपद में पहुंचे। वर्षा के लिए वहां वर्षा बिताकर वे नवनन[1] के जनपद में गए और वहां से पर्वत पारकर 'यागयी' के नाके पर पहुंचे। यागयी में अशांति फैली हुई थी। मार्ग में होकर जाना संभव न था। यागयी के अधिपति ने चली आनेवालों की ओर ध्यान कर रक्षा और दानपति बना।

यहां चयन, देर्कीन, सागसाथ और सागकिंग से भट्ट हुई। ये लोग उस यहां जा रहे थे। उनके साथ वहां वर्षा बिताकर उनके साथ साथ नवनन

---

1 शनन के पांचमी और कानसू के पूर्वीय भाग मिलकर, उस समय जो पड़ते थे, के नाम से प्रख्यात थे।

2 यह पांचमांय चीन का इसग राजा था। उसकी राजधानी कानन देश के चालक पात में थी। वह सीनपे जाति का था और इसका वंश फयेंफू कहलाता था। उस वंश का पहला शासक क्राजिन था और चीन के महाराज ने सन् [illegible] में उसे नियत किया था। क्राजिन के पंगनयाण पर हानकी 188 ई. में उसके स्थान पर पांचमी चीन का शासक हुआ और सन् 198 ई. में वहां का राजा बन बैठा।

3 फाहान ने 'जनपद' का नाम अपनी यात्रा में तीन प्रकार से रखा है। 1 शासक के नाम पर, 2 नदी के नाम पर, 3 प्रचलित नाम।

4 वर्षा ऋतु के भिक्षु वर्षा ऋतु में तीन मास एक ही स्थान पर रहते हैं।

5 चीनी महाशय का विचार है कि नवनन दक्षिण लिवांग के राजा [illegible] ने सन् 402 ई. में किया था। इस समय उसका भाई [illegible] नवनन पहाड़ का तीसरा राजा था। पर अन्य लेखकों का मत है कि नवनन के पांचमांश में शासा प्रदेश का आरंभ था।

6 यह स्थान इस समय देश के कानसू प्रांत में है। [illegible] Station और चीनी महाशय ने Imperium लिखा है। [illegible] जाता है जहां से फिर लोग एक देश से दूसरे देश में व्यापार के लिए जाते हैं। यह यागयी के पश्चिम में चीन की अंतिम व्यापार मंडी है।

7 इन महाशय की यह यात्रा-पद्धति कानसू में इस प्रांत के [illegible] इन पहाड़ों में भी सम्मिलित है, में से एक है। चीन का महाशय है कि पांच पहाड़ों के नाम माना गया है, इन को इतना महत्व है कि [illegible] पांच देवताओं का इन माना गया है, इन को इतना महत्व है कि [illegible] दिए हैं जहां के निवासी दीन होते हैं। यहां तक कि [illegible] के जनसार उनके अपनी सिर, हाथ और पैर तक दे देते थे।

8 यह प्रदेश के कानसू प्रांत का एक विभाग। यह चीन की [illegible] का है।



गए। इसकी प्राचीर (नगर दीवार) पूर्व पश्चिम 80 ली और उत्तर दक्षिण में 40 ली लंबा-चौड़ा है। यहां कई दिन अधिक एक मास रह फाहान आदि चार जन, एक अगुआ दूत के साथ आगे चले। पावदन[1] का साथ वहीं छूट गया।

तुनहाग के शासक लेहाव[2] ने मरुभूमि[3] पार करने के लिए सामग्री का सुभीता कर दिया। सुना कि मरुभूमि में राक्षस फिरा करते हैं, गम हवा चलती है, वहां जाकर उनसे कोई बचकर नहीं आता। न ऊपर कोई चिड़िया उड़ती है और न नीचे कोई जंतु दिखाई पड़ता है। आंख उठाकर जिधर देखो कहीं चारों ओर जाने का मार्ग नहीं सूझता, बहुत ध्यान देने पर भी कोई मार्ग नहीं मिलता। हां, मुर्दों की सूखी हड्डियों के चिह्न भले ही मिलते हैं।

## 2

## शेनशेन और ऊए

सत्रह दिन में लगभग 1,500 ली चलकर 'शेनशेन'[4] जनपद में पहुंचे। यह पहाड़ी प्रदेश है। भूमि यहां की पथरीली और बंजर है, साधारण निवासी मोटे वस्त्र पहनते हैं जैसे हमारे हान देश में पहना जाता है, कोई पश्मीना और कोई कंबल पहनते हैं, मात्र इतना ही अंतर है। इस देश के राजा का धर्म हमारा ही है। यहां लगभग चार हजार से भी ज्यादा भिक्षु रहते हैं। सबके सब हीनयान बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। इस देश के सभी लोग क्या भिक्षु क्या गृहस्थ इत्यादि सब भारतीय आचार और नियम का पालन करते हैं, अंतर इतना ही है कि एक सामान्य और दूसरा विशेष। यहां से पश्चिम जिन-जिन देशों में गए सभी देशों में ऐसा ही पाया, भेद इतना ही था कि देश की भाषा न्यारी न्यारी और अनोखी थी। पर सब गृहस्थों

---

1 संभव है कि तुनहाग के शासक ने मरुभूमि में यह चलने के लिए फाहान के साथ किसी व्यक्ति को कर दिया हो। इसी को इसन इन लिखा है।

2 यह उस समय तुनहाग का शासक था। उसने लियांग के राजा न इस सन् 400 ई. में तुनहाग के शासक के पद पर नियुक्त किया था। यह बड़ा विद्वान, दयालु और कुशल प्रशासक था। बहुत बहुत यह पांचमी लियांग का संस्थापक हो गया था। इसका पंगनियाण सन् 417 ई. में हुआ था।

3. चीनी भाषा के मूल में बालू का नदी लिखा है। यह मरुभूमि गोबी की मरुभूमि थी।

4 यह जनपद 'लोब' व 'लोपनार' कुंड के दक्षिण किनारे पर था।

श्रमण विरचित भारतीय ग्रंथों और भारतीय भाषा का अध्ययन करते गए। यहां महीना भर रहे।

यहां से उत्तर-पश्चिम की ओर पंद्रह दिन चले। 'ऊए'[1] देश में पहुंचे। यहां चार हजार से अधिक श्रमण रहते हैं। सबके सब हीनयान धर्म के अनुयायी हैं। इनके आचार-नियम आसान नहीं हैं। उस पर ये दृढ़-संकल्पी हैं। चीन देश के श्रमणों में उनके पालन की क्षमता नहीं है। फुकुंग-सन[2] की उदारता से 'फाह्यान' यहां दो महीने से अधिक रह सका। यहीं उसे पाक्युन आदि आकर मिल गए। ऊए के अधिवासियों ने सुजनता, सज्जनता और उदारता त्याग कर विदेशियों से क्षुद्रता का आचरण किया। इससे 'चेयुन', 'हेकीन' और 'हवीई' काववांग[3] चले गए। उन्हें वहां जाने में सुविधा जान पड़ी। 'फाह्यान' फू (उद्देशिक) की उदारता से अन्य साथियों समेत दक्षिण-पश्चिम की ओर सीधे जाने में समर्थ हुआ। मार्ग में जनशून्य देश मिले। नदी उतरने में और मार्ग में चलने पर जो क्लेश और दुख उठाने पड़े किसी ने उठाए न होंगे। एक महीने पांच दिन में योतन (खुतन) पहुंचे।

## 3

## खुतन

यह जनपद आनंदमय और वैभवशाली है। जनसंख्या बहुत घनी और बुद्धिमान है। सभी निवासी धार्मिक वृत्ति के हैं। मिलकर सब झुंड के झुंड धार्मिक संगीत का आनंद उठाते हैं। कई अयुत श्रमण यहां निवास करते हैं। जनपद में निवासियों के घर तारों की भांति पृथक-पृथक छितरे हुए हैं। प्रत्येक घर के द्वार पर छोटे धम्म स्तूप स्थापित किए हुए हैं। छोटे से छोटा धम्म स्तूप बीस हाथ से अधिक ऊंचा होगा। चारों ओर भिक्खुओं के लिए कोटरियां बनी हैं। अतिथि भिक्खु जो आते हैं इसी में ठहराए जाते हैं। उनकी सभी आवश्यकताएं पूरी की जाती हैं।

1. इस जनपद का अब तक निश्चय नहीं हुआ है। वाटर महोदय का मत है कि यह खरगर है व 'खरशर' और 'कूखर' के मध्य कहीं रहा होगा। 'सागयां' और 'हुइसा' नाम के दो यात्री इसी देश की रानी की आज्ञा से छठी शताब्दी में भारत आए थे और 'उद्यान', 'काबुल', 'पेशावर' आदि होकर वापिस गए थे।
2. चीनी भाषा में फू को उद्देशिक भी कहते हैं।
3. आइग्रस प्रदेश। वर्तमान नुकान या सगुन प्रांत के आसपास था।



जनपद के अधिपति (राजा) ने 'फाह्यान' आदि को एक संघाराम 'गोमती विहार' में सुखपूर्वक ठहराया। उसका नाम 'गोमती संघाराम' था। वह महायान का बृहद् विहार था। उसमें तीन हजार भिक्खु रहते थे। सबके सब महायान बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। घंटा बजने पर सब भोजन के लिए इकट्ठा हो जाते थे। वहां उनका भाव अत्यंत गंभीर रहता था। पात्रों की पांती यथास्थान बैठते थे। सब धूपचाप, पात्रों में शब्द भी नहीं सुनाई पड़ते थे। ये भिक्खु भंडार में मांग रहते थे। आवश्यकता पड़ने पर हाथ से मात्र संकेत भर करते थे।

'हेकिंग', 'नावचिंग' और 'हेना'[1] पहले ही 'कीया'[2] जनपद की ओर चल गए। पर 'फाह्यान' आदि रथयात्रा देखने के लिए तीन महीने तक रुक गए। इस देश में चार[3] बड़े संघाराम हैं। छोटे छोटों की तो गिनती ही नहीं। चौथे महीने की पहली तिथि से नगर में सड़कों पर साफ सफाई होने लगती है, पानी छिड़का जाता है, गली-गली में सजावट होती है। नगर के द्वार पर एक बड़ा तंबू खड़ा कर दिया जाता है। सब प्रकार की सजावट होती है। फिर राजा और रानी अपनी परिचारिकाओं (सेविकाओं) समेत वहां पधारते हैं।

'गोमती विहार' के भिक्खु महायान के अनुयायी हैं। महाराजा इनकी प्रतिष्ठा करते हैं। उनकी रथयात्रा पहले निकलती है। नगर से तीन चार ली पर भगवान बुद्ध का रथ चार पहियों का बनाया जाता है। वह तीस हाथ ऊंचा होता है और चलता प्रासाद (महल) जान पड़ता है। सप्तरत्न के तोरण लगाए जाते हैं, रेशम की ध्वजा और चांदनी से सुसज्जित किया जाता है। भगवान बुद्ध की मूर्ति रथ में रखी जाती है। दोनों ओर दो बोधिसत्व (की प्रतिमाएं) रहते हैं। सब देवता साथ-साथ चलते हैं। सभी मूर्तियां सोने चांदी से निर्मित होती हैं। ऊपर ध्वजा फहराती है। जब रथ नगर के द्वार से सौ पग पर पहुंचता है, तो राजा अपना मुकुट उतारता है, नवीन वस्त्र धारण करता है और हाथ में फूल और धूप लिए नंगे पांव नगर में रथ की अगवानी को जाता है। परिचारक (सेवक) पंक्तिबद्ध दोनों ओर रहते हैं। राजा पचांग प्रणाम कर फूल अर्पण करता है और धूप देता है। जब रथ नगर में प्रवेश

1. यह अनोखा नाम आया है। संभव है कि यिंग के स्थान में ना हो गया हो।
2. चौथे अध्याय में देखो।
3. लेगी महोदय लिखते हैं कि चीन के संस्करण में चौदह हैं।

[illegible]

[illegible]

## 4

## सीहून और जीहून

[illegible]

1 [illegible]

2 [illegible]

[illegible]

## 5

## [illegible]

[illegible]

1 [illegible]

2 [illegible]

3 [illegible]

4 [illegible]

[illegible] के लिए उपयोगी वस्तुओं को लेना है [illegible] के साथ प्रकार-प्रकार कर भिक्खुसंघ को दान [illegible] दान पा जाते हैं तब (राजा) श्रमणों को दाम [illegible] सो ले लेता है।

[illegible] पहाड़ी और ठंडा है। सुनते हैं कि यहा गेहूं के अलावा [illegible] अन्न पैदा नहीं होता। भिक्खुसंघ को अग्रहार मिला कि [illegible] अतः अब अधिपति भिक्खुसंघ से अग्रहार पाने के [illegible] प्रार्थना करता है। इस देश में भगवान बुद्ध की [illegible] है जो पत्थर की बनी है और भगवान बुद्ध के भिक्खापात्र के [illegible] बुद्ध का एक दांत भी है। इस जनपद में लोगों ने भगवान बुद्ध के दांत के लिए बुद्धविहार बना रखा है, वहां एक हजार से अधिक [illegible] बुद्ध धर्म मानने वाले भिक्खु बसते हैं। पर्वत के पूर्व के [illegible] मोटे-मोटे वस्त्र पहनते हैं जैसे कि हमारे हान देश में पहना जाता है [illegible] पश्मीना, कोई कंबल (पहनता है)। श्रमणों का आचार [illegible] है, इतना विधि-निषेधात्मक कि वर्णनातीत। यह जनपद [illegible] पर्वतमाला के मध्य में है। इस पर्वतमाला से हम जितना ही आगे बढ़े विभिन्न प्रकार की वनस्पति, वृक्ष और फल मिलते गए, केवल बांस [illegible] और इक्षु ये ही तीन हमारे देश की तरह होते हैं, यह सुना है।

## 6

## तोले व दरद

[illegible] से पश्चिम उत्तर भारत की ओर चले। एक महीना चलकर 'सुंगलिंग' पर्वतमाला पार की। 'सुंगलिंग' पर्वतमाला ग्रीष्म ऋतु में हिमंत तक तुषारावृत [illegible] रहती है। उस पर विषधर नाग रहते हैं, वे क्रोधित होकर [illegible] छोड़ते हैं, तुषार गिराते, अंधड़ चलाते और पत्थर बरसाते [illegible] इन विपत्तियों से बचकर दस हजार में एक भी नहीं निकल पाता

[illegible] सामन्तों और प्रधान अमात्यों के पास अपनी सवारी का घोड़ा [illegible] करता है और उन्हें अनेक प्रकार के उपहार देता है।' और [illegible] महोदय ने यह किया है कि "प्रधान मंत्रियों (महामात्यों) को घोड़े पर [illegible] है।" [illegible] इन वाक्यों को संदिग्ध और अव्यक्त पाया है।

[illegible]

[illegible] अब भी पहले की भांति ही दिखाई पड़ती है।

## 7

## नदी पार करना

पर्वतमाला के किनारे दक्षिण-पश्चिम दिशा में [illegible] चलते रहे। पथ दुखदायी था, चढ़ाई-उतराई अधिक थी, [illegible] पर्वताकार पाषाण की दीवार-सा सीधा खड़ा था जिसकी [illegible] दस हजार हाथ थी। किनारे पर खड़े होने से आंख [illegible] पग धरने को जगह न थी, नीचे जल था जिसे [illegible]

1 इसे दरद कहते हैं। यह प्रदेश सिंधु नदी के [illegible]

2 1. इसका अनुवाद सिंधु किया गया है। फाह्यान ने [illegible] उल्लेख नहीं किया है। इसी से लगो महोदय ने [illegible] पृष्ठ [illegible] में लिखा है कि 'They had crossed the Indus before. They had done so, indeed, twice first from north to south at Skardo, [illegible] east of it and second as described in Ch. VII.' [illegible] पारकर चुके थे—दो बार और उतर चुके थे [illegible] जिसका वर्णन अध्याय 7 में है। [illegible] का उल्लेख है, पर वहां सिंधु का नाम नहीं है, [illegible] है कि 'हियन् तू' का अर्थ है, 'Hanging bridge' [illegible] लटका हो। यहां पर बील महोदय, और [illegible] महोदय ने [illegible]

सभी भिक्षुओं ने फाहियान से पूछा कि बौद्ध धर्म पुस्तक में कब गया बना सकते हो। फाहियान ने उत्तर दिया इस ओर चीन में पुराने थे, ने कहा थे कि बाप दादा से सुनते आए हैं कि मध्य राष्ट्रमण्डल की धरती स्थापित कर भारत के भिक्षु सूत्र और विनयपिटक लेकर यहां पार गए। यहां की स्थापना भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण काल से तीन सौ वर्ष पश्चात हुई। इस समय तक देश में चार बड़ी महासंघ सिंघ का राज्य था इस कारण से यह सिद्ध है कि हमारे धर्म का प्रसार इस धरती के स्थापन काल से प्रारंभ हुआ। भगवान मंजुश्री धर्मराज हैं, इसी आदेश दशबलधर ने बिल्कुल ही घोषणा (मनादी) की है और यहां आकर पार के लोगों को उपदेश दिया है। हमें स्पष्ट मालूम है कि अश्वत्थपुर धर्म का यह प्रचार-प्रसार किसी मनुष्य का किया नहीं है अतः 'दान' के सम्राट सिंघ का स्थान महत्वपूर्ण था।

## 8

## उद्यान जनपद

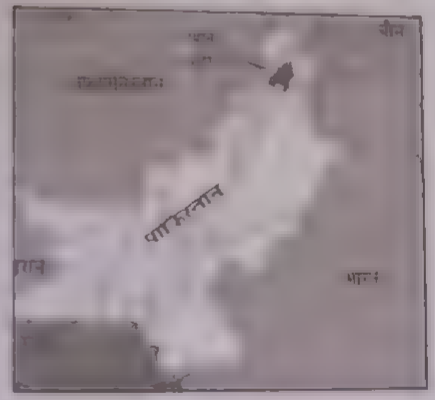


नदी पार करते ही उड्डियान[1] (उद्यान) जनपद पहुंचे। यह उद्यान जनपद मुख्यतया उत्तरीय भारत का देश है। लोग मध्य भारत की भाषा बोलते हैं। मध्य भारत कहते हैं मध्य जनपद देश को। साधारण लोगों का रहन-सहन मध्य देश[2] (भारत) के समान

---

1 लेखक महोदय ने 'ओ' और 'डा' लिखकर नीचे में लिखा है कि संस्कृत में लिखने पर 'उड्डियान' कहा जाता।

2 सिंघ का शासन काल 650-719 ई० के बीच में था। इसमें भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण काल ई० पू० 11वीं शताब्दी निश्चय किया है। पर भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण काल 480 से 470 वर्ष ई० पू० माना जाता है।

3 61 ईस्वी में सिंघ ने यह स्वप्न देखा था। देखें उपक्रम

4 यह जनपद सुवास्तु प्रदेश में है और स्वात नदी के दोनों ओर उड्डियान में है।

ही है। बौद्ध-धम्म का आधिपत्य है। श्रमणों के आवास स्थान को 'संघाराम' कहते हैं। यहां सब पांच सौ संघाराम हैं। सब हीनयानानुयायियों के हैं। आगंतुक भिक्खु उनमें आए ना दिन तक। अर्थात दिन के 12 बजे तक) उन्हें भोजन दिया जाता है। तीन दिन व्यतीत होने पर कह दिया जाता है कि आप अपना कोई और आश्रय ढूंढो।

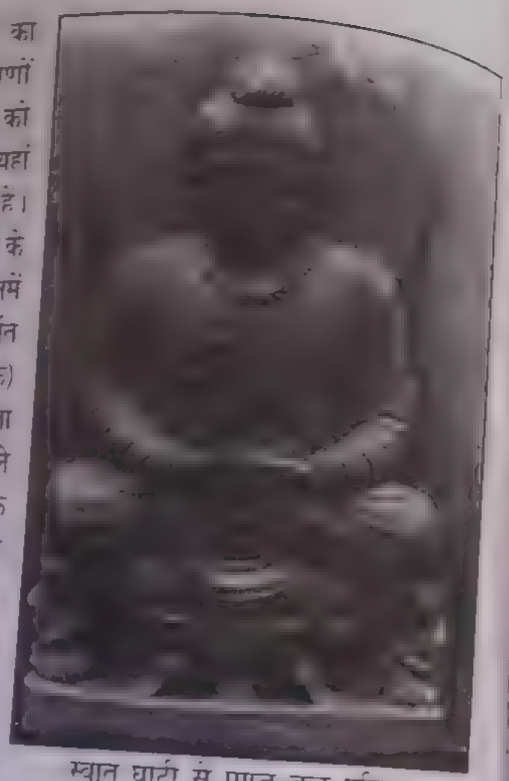

स्वात घाटी से प्राप्त बुद्ध प्रतिमा

जनश्रुति है कि जब भगवान बुद्ध का आगमन उत्तर भारत में हुआ तो पहले इस जनपद में पधारे। यहां भगवान बुद्ध के पद का चिह्न (बुद्ध पाद) बना है। वह दर्शकों की वृत्ति के अनुसार छोटा-बड़ा दिखाई पड़ता है। वह अब तक बना है और उसकी सारी बातें आज तक वैसी ही हैं। जिस शिला पर आकर यहां वस्त्र सुखाया था, वह जगह जहां पर 'नाग' को उपदेश दिया था, अब तक वैसी ही दिखाई

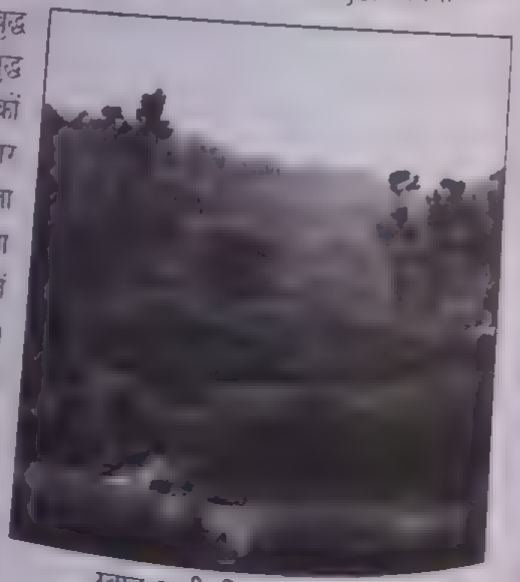

स्वात घाटी स्थित एक स्तूप



पड़ती है। शिला चौदह हाथ ऊंची, बीस हाथ चौड़ी, और एक ओर [illegible] है। 'हेकिंग', 'हेता': और 'तावचिंग' तीनों यहां से भगवान बुद्ध की [illegible] (भित्ति चित्र) का दर्शन करने नागर जनपद की तरफ चले गए [illegible] आदि 'उद्यान' नगर में रह गए और वर्षा (वर्षावास) बिताई। वहां [illegible] पर दक्षिण उतरे और सुहोतो जनपद में पहुंचे।

## 9

## सुहोतो जनपद

इस देश में बौद्ध-धम्म ही प्रधान है। पूर्वकाल में देवराज शक्र (इंद्र) ने इस स्थल पर श्येन और कपोत[2] बाज से एक बोधिसत्व की परीक्षा की थी। उसने निज मांस काटकर कपोत के बदले में दिया था। [illegible] बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया। उन्होंने अपने शिष्यों समेत यात्रा के समय उनसे कहा कि यही वह स्थान है, जहां मैंने अपना मांस काटकर [illegible] दिया था। जनपदवासियों को इस प्रकार वृत्तांत (कहानी) का ज्ञान हुआ और उन्होंने इस जगह धम्म स्तूप बनाया और सोने-चांदी के [illegible]

## 10

## गांधार

यहां से पूर्व में उतरकर वे पांच दिन चले। गांधार[3] जनपद में पहुंचे। यहां सम्राट अशोक का राजकुमार धर्मवर्द्धन[4] शासक था। भगवान बुद्ध ने जब वे बोधिसत्व थे, तब इस जनपद में एक मानव को अपनी आंख का

---

1. यह स्वात नदी के नीचे का जनपद था। इसे स्वात कहते हैं। यह स्वात की घाटी का दक्षिणी भाग है।
2. यह कथा कपोत व शिवि जातक (499) में आई है। इसी कथा [illegible] धर्म परीक्षा के नाम से लिखा है। देवराज शक्र स्वयं श्येन बन [illegible] कपोत बना राजा शिवि के निकट आए थे। कपोत राजा शिवि की [illegible] पड़ा था। शिवि ने उसकी रक्षा की और कपोत के कहने से अपने शरीर [illegible] मांस को काटकर उसके बराबर तौलकर श्येन को दिया था।
3. यह जनपद बहुत विशाल था. मारे अफगानिस्तान का [illegible] इसमें सम्मिलित था। इटेल ने ढेरी और वंजौर तक इसको विस्तार से लिखा है
4. धर्मवर्द्धन सम्राट अशोक के पुत्र का ही दूसरा नाम है

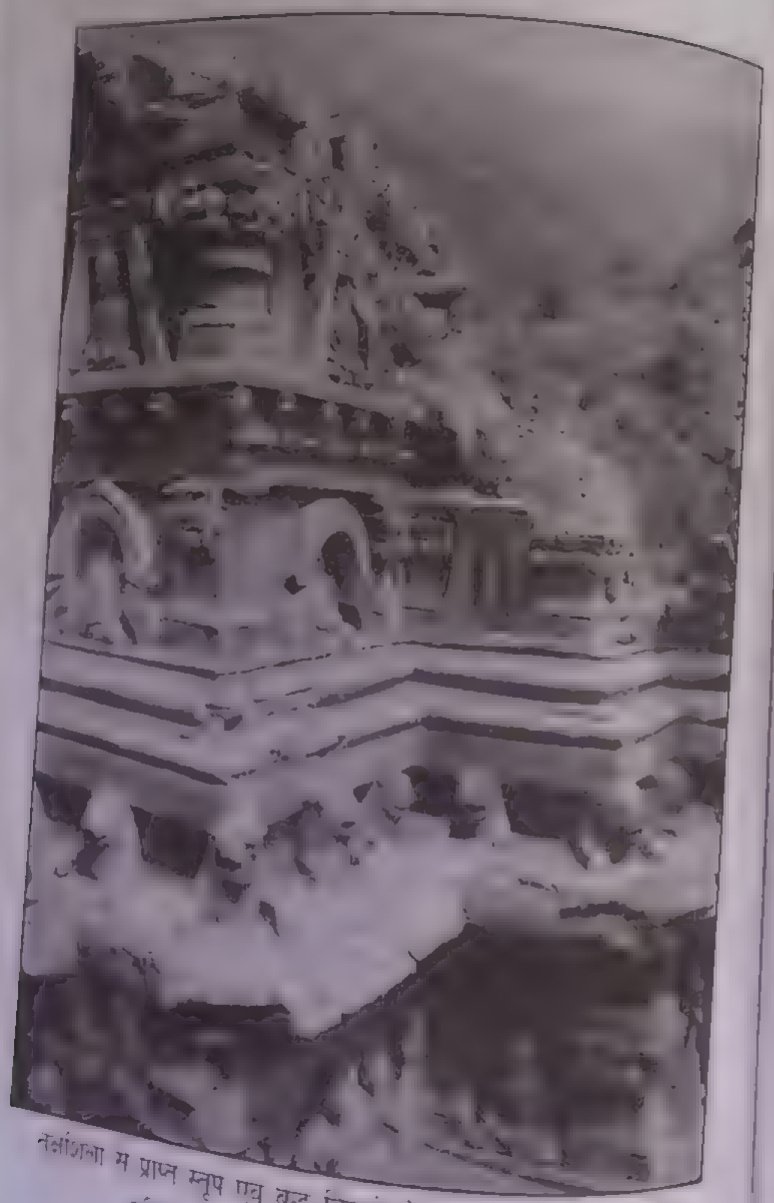

तक्षशिला में प्राप्त स्तूप एवं बुद्ध विहारों से उत्खनन में प्राप्त बुद्ध प्रतिमाओं की सुन्दरता देखते ही बनती है



दान दिया था।[1] इस स्थान पर बड़ा धम्म स्तूप बना है। इस पर नाना प्रकार के पत्र चढ़े हैं। इस जनपद के निवासी सभी हीनयान के अनुयायी हैं।

## 11

## तक्षशिला

यहां से पूर्व ओर सात दिन चलकर तक्षशिला[2] नामक जनपद में पहुंचे। तक्षशिला कहते हैं शिर कटे को। भगवान बुद्ध ने जब वे बोधिसत्व थे तब इस स्थान पर अपना सिर एक मानव को दानस्वरूप दिया था।[3] इसी कारण इसका ऐसा नाम पड़ा। पूर्व दिशा में दो दिन चलकर इस स्थान पर पहुंचे जहां बोधिसत्व ने भूखी बाघिन को अपने शरीर का दान दिया था।[4] नाना स्थानों पर बड़े-बड़े धम्म स्तूप निर्मित हैं। उन पर बहुमूल्य रत्नों के पत्र चढ़े हैं। राजा, मंत्री और जन साधारण उनकी पूजा करते हैं। इन तीनों स्तूपों पर फूल और दीप चढ़ाने वालों का कभी तांता नहीं टूटता। इधर के लोग इसे चतुःस्तूप[5] कहते हैं।

## 12

## पुरुषपुर

गांधार जनपद से दक्षिण की तरफ चार दिन चलकर पुरुषपुर (पेशावर) जनपद में पहुंचे। भगवान बुद्ध ने जब अपने शिष्यों समेत इस देश की यात्रा (यात्रा) की तो आनंद थेर से कहा - 'मेरे परिनिर्वाण के उपरांत इस देश में

---

1 यह भी जातक का ही एक कथा है।

2 यह तक्षशिला का अपभ्रंश रूप है। यह रावलपिंडी से 22 मील पर थी। अब तीन नगरों के अवशेष मिलते हैं, एक भीर टीले के निकट, दूसरा सिरकप और तीसरा सिरसुख। तीनों एक दूसरे के उजड़ने पर बसे थे। सिरकप यूनानों के आने के पूर्व उजड़ चुका था। उस समय सिरमुख में ही नगर बसा था। इसकी खुदाई से पुरातत्व विभाग के काम की विभिन्न वस्तुएं और अनेक धम्म स्तूपों के खंडहर मिले हैं।

3 एक जातक कथा का वृत्तांत।

4 व्याघ्र जातक (272) के आधार पर।

5 रूपांत धम्म स्तूप, चक्षुस्तूप, और दाय स्तूप।

कनिष्क नामक राजा होगा। वह यहां धम्म स्तूप बनवाएगा। पीछे कनिष्क[1] संसार में पैदा हुआ। एक दिन वह सैर करने जा रहा था कि देवराज शक्र उसे चेतावनी देने के लिए, ग्वालबाल का रूप धारण कर राह में धम्म स्तूप बनाने लगे। राजा ने पूछा कि तू क्या बना रहा है? उसने जवाब दिया कि भगवान बुद्ध का धम्म स्तूप बना रहा हूं। राजा ने कहा बहुत अच्छा। ऐसा कहकर राजा ने भी बालक के लघु धम्म स्तूप के ऊपर चार सौ हाथ ऊंचा और अनेक रत्नों से जड़ित दूसरा धम्म स्तूप बनवा दिया। अनेक धम्म स्तूप और बुद्धविहार यात्रा में देखे पर इतना सुंदर और भव्य कोई और न मिला। कहते हैं कि जंबुद्वीप में यह धम्म स्तूप सर्वोत्तम है। राजा ने यह स्तूप उस छोटे धम्म स्तूप पर बनवा तो दिया पर वह बड़े स्तूप के दक्षिण की तरफ तीन हाथ से अधिक ऊंचा निकल आया।

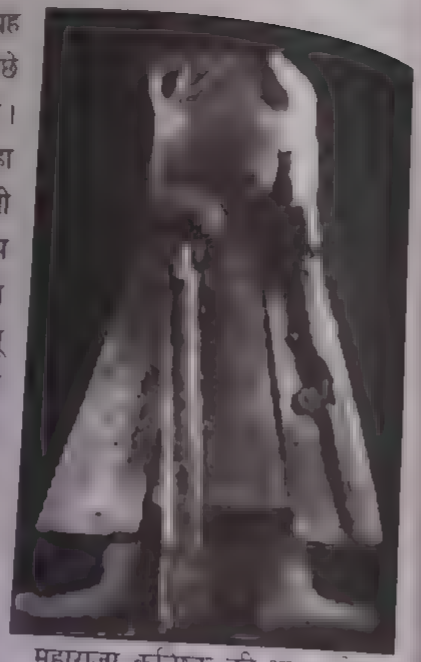

महाराजा कनिष्क की भग्न प्रतिमा

भगवान बुद्ध का भिक्खापात्र भी इसी जनपद में है। पूर्वकाल में यूशे राजा ने विशाल सेना लेकर इस देश पर आक्रमण किया था और भगवान बुद्ध को उठा ले जाना चाहा था। उसने इस जनपद को जीत लिया। यूशे

1. विंसेंट स्मिथ महोदय ने लिखा है कि कनिष्क 120 व 128 में राजसिंहासन पर बैठा था, कोई इसका 10 ई. में सिंहासन पर विराजमान होना बताते हैं।
2. यूशे लोग 173 ई.पू. चीन के उत्तर-पश्चिम से निकाले गए थे और 160 ई. में उन्होंने शकों को परास्त किया था। फिर शकों ने आक्षस नदी के उत्तर में उन्हें खदेड़ दिया। इसके बहुत दिन पश्चात ई.पू. 459 में काडफाइसस ने यूशे को एकत्र किया। इटल महोदय का मत है कि ये लोग शक और तातार थे और ई.पू. 180 में हूणों ने उन्हें निकाल दिया था तब आक्षस नदी के पास देश को बाखतर में 126 ई.पू. में उन्होंने छीन लिया और अंत में पंजाब, कश्मीर आदि को विजित किया।



राजा और उसका सेनापति बौद्ध-धम्म के मानने वाले थे और भिक्खापात्र ले जाने के लिए उन्होंने जाकर बड़ी पूजा की। त्रिरत्न को बड़ी पूजा कर एक हाथी सजाकर भिक्खापात्र उस पर रखा गया, पर हाथी भूमि पर घुटने के बल बैठ गया और आगे न बढ़ा। फिर चार पहिए की गाड़ी पर भिक्खापात्र को रखा और आठ हाथी जाते पर वे भी उसे न खींच सके। राजा जान गया कि भिक्खापात्र को गजरथ पर ले जाने का संयोग नहीं है। वह बहुत चिंतित और शर्मिंदा हुआ। निदान स्वरूप उसने वहां एक धम्म स्तूप और संघाराम बनवा दिया। रक्षा के लिए रक्षक नियत किए और विविध प्रकार के दान दिए।

यहां कोई 700 से अधिक श्रमण रहते होंगे। जब मध्याह्न होता है श्रमण भिक्खापात्र बाहर निकालते हैं और गृहस्थों के साथ उसकी विविध भांति से पूजा करते हैं, तब मध्याह्न का आहार करते हैं। सांच काल धूप देने का समय आता है तब फिर ऐसा ही करते हैं। इसमें दो छूट पक्ष से अधिक आ सकता है। यह कृष्णवर्ण की प्रधानता लिए अनेक वर्ण का है। इसकी मोटाई एक इंच के पांचवें हिस्से (2 सूत) के समान है जिसकी कांति बड़ी उज्ज्वल तथा जगमगाती हुई है। चारों तहें अलग अलग दो दो के बीच जोड़ सी दिखाई पड़ती हैं। गरीबों के थोड़े पुष्प चढ़ाने से यह शीघ्र भर जाता है, परंतु यदि कोई बड़ा धनी बहुत-से फूल चढ़ाने की कामना करे तो फूलों की सौ सहस्र क्या अयुत (अनेकानेक) टोकरियों से भी नहीं भरता।

'पावयुन' 'सांगकिंग', ने बुद्ध के भिक्खापात्र की पूजा करके लौटना चाहा। हेकिंग, हेता और तावचिंग' पहले ही नगर की तरफ बुद्ध की छाया, बुद्ध के दांत और कपालधातु की पूजा करने चले गए थे। हेकिंग तो बीमार पड़ गया, तावचिंग' उसकी सेवा के लिए ठहर गया। हेता अकेला पुरुषपुर गया और उसने सबको देखा। फिर हेता, पावयुन और सांगकिंग चीन देश को पुनः वापस चले गए। भिक्खापात्र के विहार में हेकिंग की दशा बिगड़ती गई।[2] इस पर फाह्यान ने बुद्ध के कपालधातु की ओर का मार्ग लिया।

1. चीनी भाषा के मूल में "श्वेताम्बर" है। भिक्खु ही रंगे वस्त्र पहनते हैं इसीलिए यह शब्द गृहस्थों के लिए प्रयुक्त हुआ है।
2. चीनी भाषा के मूल में जो चिह्न है उसका आशय है 'अवस्था का बिगड़ते जाना' पर उसे न समझकर लेगी महोदय आदि ने came to his end और

## 13

## नगार व नगरहरा

दक्षिण दिशा में 16 योजन चलकर नगर जनपद की सीमा पर हेला नगर में पहुंचे। इस नगर में भगवान बुद्ध का 'कपालधातु' एक विहार में है। विहार पर सोने-चांदी के पत्र चढ़े हैं और सप्तरत्न जड़े हैं। जनपद का राजा कपालधातु का अत्यधिक मान-सम्मान करता है और उसे चिंता रहती है कि कहीं उसे चोर न ले जाएं। उसने जनपद के श्रेष्ठ कुलों के आठ मनुष्यों (अट्टकुलिकों) को नियत किया है। प्रत्येक को एक-एक चाबी दे दी जाती है। वे इसे चाबी से बंद करते और रक्षा प्रदान करते हैं। किवाड़ खोलकर सुगंधित जल से हाथ धोते हैं, फिर भगवान बुद्ध के कपालधातु को निकालकर विहार के बाहर उच्च सिंहासन पर रखते हैं। यह सप्तरत्न के संपुट (दोना) में रहता है जिस पर स्फटिक का ढक्कन होता है और मोतियों की झालर लगी रहती है। धातु पीताभ श्वेत वर्ण है, चार इंच (सुएनच्वांग ने 12 इंच लिखा है) भर गोलाई में है और मध्य में उभरा हुआ है। विहार से बाहर निकलने वाले ऊंचे मचान पर चढ़कर बड़ा डंका बजाते

---

योगीन्द्रनाथ समाहार ने 'तथाय देहावसान करिलेन' उसी के आधार पर अनुवाद किया है। लेगी महोदय 13 अध्याय में ह्वेकिंग की मृत्यु का वर्णन देख चकरा गए हैं। वे इस अध्याय के नोट में लिखते हैं—"This should be Hwuy king. King was at this time ill in Nagar and indeed (शेष अगले पृष्ठ पर) afterwards he dies in crossing the little snowy mountains, but all the texts make him die twice. The confounding of the two names has been pointed out by Chinese critics." यह ह्वेयिंग होना चाहिए। किंग उस समय नगर में बीमार पड़ा था और वह पीछे छोटा हिमालय पार करते मरा, पर सब मूल ग्रंथों में इसका दो बार मरना लिखा है। चीनी आलोचकों ने भी इन दोनों नामों की गड़बड़ी स्वीकार की है। वे 14 अध्याय के नोट 1 में घबराकर लिखते हैं कि All the texts have Hwuy king, see note 2 page 36 chap VIII अर्थात सभी मूल ग्रंथों में ह्वेकिंग है, देखो नोट 2, पृ. 36 पर लेगी महोदय को यह न सूझी कि कपालधातु नगर ही में थी। ज्ञात होता है कि कपालधातु संघाराम को उन्होंने भ्रमवश नगर से अलग समझा।

1 इसे अब हिड्डा कहते हैं। यह पेशावर के पश्चिमी जलालाबाद से पांच मील दक्षिण में है। इस जनपद को नगरहरा भी कहते थे।



है, शंखनाद करते और तांबे की झांझ ठोकते हैं। [illegible] विहार में जाता है, पुष्प और धूप से पूजा करता और [illegible] चला जाता है।[1] पश्चिम के द्वार से जाता और [illegible] नित्य प्रातःकाल के समय राजा पूजा अर्चना करता है। पूजा [illegible] राज्य का कार्य करता है। यहां के सेठ लोग भी [illegible] तब फिर अपने घर का काम-काज करते हैं। [illegible] क्रिया में तनिक भी व्यतिक्रम (क्रमभंग) नहीं होने पाता। [illegible] है तो धातु विहार में रख देते हैं। यह सप्तधातु निर्मित [illegible] निकालने और रखने के वक्त खुलता और बंद होता है। [illegible] ऊंचा है। विहार के द्वार पर सुबह के समय फूल और धूप बेचनेवालों की भीड़ लगी रहती है। पूजा करने वाले उनसे खरीदकर फूल चढ़ाते हैं। अनेक देश के राजा हमेशा अपनी ओर से यहां पूजा करने के लिए दूत भेजते रहते हैं। विहार तीस पग घेरे में है। आकाश हिले, पृथ्वी धंसे, पर यह स्थान नहीं हिल सकता।

यहां से उत्तर में एक योजन जाकर 'नगार' जनपद की राजधानी में पहुंचे। यहां भगवान बुद्ध ने जब वे बोधिसत्व थे, फूलों की पांच डालियां मोल लेकर 'दीपंकर बुद्ध' को अर्पण की थीं। नगर के मध्य में भगवान बुद्ध का दंतस्तूप है। वहां भी कपालधातु की भांति पूजा होती है।

'नगार' के पूर्व में एक योजन चलकर एक दून के मुहाने (नाक) पर पहुंचे। यहां भगवान बुद्ध का दंड है।[2] यहां पर भी बुद्धविहार बना हुआ है तथा उसमें भी पूजा होती है। दंड गोशीर्ष चंदन का बना हुआ सत्रह अठारह हाथ लंबा है और लकड़ी की चोंगी में रखा है। सैकड़ों हजारों लोगों से भी नहीं उठ सकता।

---

1 लेगी महोदय ने लिखा है कि सब यथाक्रम हो जाने पर सिर पर रखता है।

2 वह स्तूप जिसके भीतर धातु के रखने और निकालने का मार्ग बना हो।

3 आडांसग महोदय ने लिखा है कि मैंने अपने नेत्रों से देखा है कि [illegible] दंड के ऊपर लोहे की मूठ (कुबड़ी) होती है जिसका व्यास [illegible] मध्य से चार-पांच अंगुल धातु की छड़ की भांति मोटा होता है [illegible] और कड़ी लकड़ी का होता है और पर से भी तक ऊंचा होता है [illegible] लोहे की सामी लगी होती है।

दून के मुहाने से पश्चिम की तरफ चलने पर भगवान बुद्ध की संघाटी मिलती है। यहां पर भी एक बुद्धविहार है जिसकी पूजा होती है। इस देश के लोगों में यह प्रचलन है कि जब अवर्षण (अकाल) पड़ता है तो देश के लोग झुंड-के-झुंड एकत्रित होकर उस वस्त्र को निकालते हैं और पूजा अर्चना करते हैं, तब देव कृपा होती है।

नगर के दक्षिण में आधे योजन पर पर्वत में एक पहाड़ी गुफा है जिसका द्वार दक्षिण पश्चिमाभिमुखी है। इसमें भगवान बुद्ध की छाया है। दस पग से अधिक दूर जाकर देखने से साक्षात दर्शन होता है। उनके स्वर्णाभ वर्ण और लक्षण[1] स्पष्ट और स्वच्छ दिखाई पड़ते हैं, पर ज्यों-ज्यों पास जाने पर स्वप्नवत विलीन होते जाते हैं। सभी देशों के राजा बड़े-बड़े चतुर चितेरे प्रतिकृति बनाने के लिए भेजते-भेजते हार गए, पर कोई बना न सका। इस देश के लोगों में यह लोकोक्ति चली आती है कि सहस्र बुद्धों की छाया यहां रहेगी।

छाया के दक्षिण चार सौ पग पर जब भगवान बुद्ध यहां आए थे तो उन्होंने अपने केश और नख का छेदन किया था। फिर अपने शिष्यों के साथ जाकर सत्तर अस्सी हाथ ऊंचे धम्म स्तूप का निर्माण करवाया था, जो पीछे के स्तूपों का नमूना हुआ। वह आज तक भी मौजूद है। इसके निकट एक संघाराम भी है वहां लगभग 700 श्रमण-भिक्खु निवास करते हैं। इस स्थान पर अर्हत और प्रत्येक बुद्ध (=पालि=पच्चेक बुद्ध) के धम्म स्तूप सहस्र के लगभग होंगे।

## 14

## हेकिंग की मृत्यु–लोई और पोना जनपद

यहां तीन मास जाड़े भर रुककर फाह्यान आदि तीन लोग दक्षिण की ओर छोटे हिमाद्रि पर गए। हिमाद्रि[2] जाड़े-गर्मी दोनों में तुषारावृत्त (बर्फ से ढका हुआ) रहता है। पर्वत के उत्तर छाया में उन्हें ठंडी वायु चलती मिली। सभी ठिठरकर मूक रह गए। हेकिंग तो बेकार हो गया और उसके मुंह से फिचकुर निकल पड़ा। वह फाह्यान से बोला कि मैं तो जीने का नहीं, तुम तत्काल यहां से भागो, ऐसा न हो कि सब के सब यहीं मर जाएं। इतना

1 संघाटी चीवर का तीन में से एक अंग—चादर (उपरला चीवर)।
2 महापुरुषों के बत्तीस लक्षणों के लिए देखें परिशिष्ट-2।
3 सफेद कोह: हिमाद्रि से छोटा है इसलिए इसे छोटा हिमाद्रि लिखा है।



कहकर वह तो मर गया। फाह्यान उसके शव (मृत शरीर) को पीट-पीटकर यह कहकर चिल्लाकर रोने लगा कि मुख्य उद्देश्य पर पानी फिर गया—भाग्य, हम क्या करें? निदान उठे और दक्षिण पर्वतमाला को ज्यों-त्यों पार कर लोई[2] जनपद में पहुंचे। यहां लगभग तीन हजार महायान और हीनयानानुयायी श्रमण (भिक्खु) बसते हैं। वहां वर्षावास के लिए ठहरे। उसे बिताकर दक्षिण की ओर दस दिन चलकर पोना[3] जनपद में पहुंचे। यहां लगभग तीन सहस्र के लगभग हीनयानानुयायी श्रमण निवास करते हैं। यहां से पूर्व दिशा में तीन दिन चले फिर 'हितू'[4] जनपद पार किया। इस पार की भूमि समतल और नीची थी।

## 15

## पीतू व पंजाब

नदी पार करते ही पीतू[5] नामक जनपद पड़ा जहां बौद्ध धम्म का बहुत प्रचार था। सब महायान और हीनयान के अनुयायी थे। चीन देश से अपने सहधर्मी को आया देख उन्होंने बड़ी कृपा और सहानुभूति प्रकट की। कहने लगे कि प्रांत में रहकर ये लोग प्रव्रज्या लेकर सद्धम्म की खोज में आए। उनकी कामना पूर्ण की और धर्मानुसार उनसे व्यवहार किया।

## 16

## मथुरा

यहां से दक्षिण-पूर्व दिशा में अस्सी योजन चले। पथ में लगातार बहुत से बुद्ध विहार मिले, जिनमें लाखों श्रमण मिले। सभी स्थानों में होते हुए एक जनपद में पहुंचे। जनपद का नाम मताऊला (मथुरा) था। पूना (यमुना)

1 बोल महोदय ने इसका अनुवाद 'Our purpose was not to produce fortune' और लेगी महोदय ने "Our original plan has failed" किया है।
2 लोई व रोही—काबुल के एक भाग का नाम जो सफेद कोह के दक्षिण और कुरम नदी के आसपास है।
3 'बन्नू' यह पंजाब में है।
4 यहां भी हियतु शब्द है जिसे सिंधु लिखा है।
5 सिंधु नदी के बाएं किनारे का देश। इसमें संपूर्ण पंजाब सम्मिलित था।

नदी के किनारे-किनारे चले। नदी के दाएं-बाएं बीस विहार थे। जिनमें तीन हजार से ज्यादा भिक्खु रहते थे। बौद्ध-धम्म का अच्छा-खासा प्रचार अब तक है। मरुभूमि से पश्चिम भारत के सभी जनपदों में जनपदों के अधिपति (राजा) बौद्ध धर्मानुयायी मिले। भिक्खुसंघ को भिक्खा कराते या देते समय वे अपने मुकुट उतार देते हैं। अपने बंधुओं और अमात्यों सहित अपने हाथों से आहार परोसते हैं। परोस कर प्रधान[1] के आगे आसन बिछवाकर बैठ जाते हैं। संघ के समक्ष खाट पर बैठने का साहस नहीं करते। तथागत बुद्ध के समय जो प्रथा राजाओं में भिक्खा कराने की थी, वही अब तक चली आ रही है।

यहां से दक्षिण मध्य देश (दक्षिण भारत) कहलाता है। यहां शीत और ऊष्ण ऋतु एक समान है। प्रजा बहुत साधन संपन्न और सुखी है। व्यवहार की लिखा-पढ़ी और पंच-पंचायत कुछ नहीं है। लोग राजा की भूमि जोतते और उपज का अंश (हिस्सा) देते हैं। जहां चाहें जाएं, जहां चाहे रहें। राजा न प्राणदंड देता है और न शारीरिक दंड देता है। अपराधों को अवस्थानुसार उत्तम व मध्यम साहस का अर्थदंड दिया जाता है। बार-बार दस्यु कर्म करने पर दक्षिण करच्छेद किया जाता है। राजा के प्रतिहार और सहचर वेतनभोगी हैं। सारे देश में कोई निवासी न जीवहिंसा करता है, न मद्यपान करता है और न लहसुन-प्याज खाता है; सिवाय चांडाल के। दस्यु को चांडाल कहते हैं। वे नगर के बाहर रहते हैं और नगर में जब प्रवेश करते हैं तो सूचना के तौर पर लकड़ी बजाते चलते हैं, कि लोग जान जाएं और बचकर चलें, कहीं उनसे छू (स्पर्श) न जाए। जनपद में सूअर और मुर्गी नहीं पालते, जीवित पशु बेचते हैं, न कहीं सूनागार और शराब की दुकानें हैं। क्रय-विक्रय में कोड़ियों का व्यवहार है। केवल चांडाल मछली मारते, मृगया (शिकार) करते और मांस बेचते हैं।

भगवान बुद्ध के बोधि लाभ करने पर सभी जनपदों के राजा और सेठों (श्रेष्ठियों) ने भिक्खुओं के लिए बुद्ध विहार बनवाए। खेत, घर, वन, आराम वहां की प्रजा और पशुओं को दान कर दिए। दान-पत्र ताम्र-पत्र पर खुदे हैं। प्राचीन राजाओं के समय से चले आ रहे हैं, किसी ने आज तक (यह

1. संघ का नायक। यह कोई 'महास्थविर' होता था जो संघ में विद्या-वयोवृद्ध होता था। (यानी ज्ञान की दृष्टि से सबसे वरिष्ठ होता था। भिक्खुसंघ का मुखिया होने के कारण 'संघ नायक' कहलाता था—स.)



क्रम) विफल नहीं किया, अब तक वैसे ही हैं। विहार में संघ को खान-पान मिलते हैं, वस्त्र मिलता है, आए गए को वर्षा में आवास (घर) मिलता है।

श्रमणों का काम अच्छे कर्मों से धर्मोपार्जन करना, सूत्र का पाठ करना और ध्यान लगाना है। आगंतुक (अतिथि) भिक्खु आते हैं तो रहने वाले (स्थायी) भिक्खु उन्हें आगे बढ़कर लेते हैं। उनके वस्त्र और भिक्खापात्र स्वयं ले आते हैं। उन्हें चरण धोने को जल और सिर में लगाने का तेल देते हैं। विश्राम करने पर उनसे पूछते हैं कि कितने दिनों से प्रव्रज्या ग्रहण की है फिर उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार आवास रहने के स्थान देते हैं और नियमानुसार उनसे व्यवहार करते हैं।

भिक्खुसंघ के स्थान पर सारिपुत्र, महामौद्गल्यायन और महाकाश्यप के स्तूप बने रहते हैं और वहीं अभिधर्म, विनय और सूत्र के धम्म स्तूप भी होते हैं। वर्षावास से एक मास पीछे उपासक लोग भिक्खुओं को दान देने के लिए परस्पर स्पर्द्धा करते हैं। सब ओर से लोग साधुओं को विकाल के लिए 'पेय' भेजते हैं। भिक्खुसंघ के संघ आते हैं, धर्मोपदेश करते हैं, फिर सारिपुत्त के स्तूप की पूजा माला और गंध से करते हैं, सारी रात दीपमालिका होती है और गीत-वाद्य कराया जाता है।

सारिपुत्त कुलीन ब्राह्मण थे। तथागत से प्रव्रज्या के लिए प्रार्थना की थी। महामौद्गल्यायन और महाकश्यप ने भी ऐसा ही किया था। भिक्खुनियां प्रायः आनंद के स्तूप की पूजा करती हैं। उन्होंने ही तथागत से स्त्रियों को प्रव्रज्या देने की प्रार्थना की थी। श्रामणेर राहुल की पूजा करते हैं। अभिधर्म के अभ्यासी अभिधर्म की, विनय के अनुयायी विनय की पूजा करते हैं। प्रति वर्ष पूजा एक बार होती है। हर एक के लिए दिन नियत है। महायान के अनुयायी प्रज्ञापारमिता, मंजुश्री[1] और अवलोकितेश्वर[2] की पूजा करते हैं।

1. अंग्रेजी अनुवादकों ने इस वाक्य का अनुवाद न जाने क्यों छोड़ दिया है।
2. दिन के 12.00 बजे के पश्चात भोजन करने को 'विकाल भोजन' कहते हैं। इस दौरान ठोस भोजन नहीं अपितु तरल पेय ही दिया जाता है।
3. इन्हें महामति कुमार भी कहते हैं। ये एक बोधिसत्व हैं।
4. चीनी भाषा में इन्हें कावुनेशेयन कहते हैं। तिब्बत में यह महापुरुष है, पर जापान के लोग इसे देवी मानते हैं।

तब भिक्षु यात्रियों को आहार पा जाने हैं तब सेठ और ब्राह्मण लोग उनको वस्त्र और अन्न पुरस्कार बांटते हैं। भिक्खु उन्हें लेकर यथाभाग विभक्त करते हैं। भगवान बुद्ध के बोधि प्राप्त काल से ही यह रीति, आचार व्यवहार और नियम अविच्छिन्न रूप से लगातार चले आ रहे हैं। हियंत्सु उत्तर के स्थान से दक्षिण भारत तक और दक्षिण समुद्र तक चालीस-पचास हजार ली तक फैला भूमि है इसमें कहीं पर्वत, झरने नहीं हैं, केवल नदी का ही जल है।

## 17

## संकाश्य

यहां से दक्षिण पूर्व अठारह योजन चले—संकाश्य (कन्नौज से पश्चिम दिशा में फर्रुखाबाद जिले के संकिसया नामक स्थान पर इसके खंडहर हैं) नामक जनपद मिला। जब भगवान बुद्ध त्रयस्त्रिंश लोक (स्वर्ग) गए थे, तो तीन मास अपनी माता को अभिधर्म का उपदेश देकर उसी जगह पर उतरे थे[1] इस सम्बन्ध में इस अध्याय के अंत में पृ. 105 पर दी गई टिप्पणी देखें। भगवान बुद्ध त्रयस्त्रिंश लोक में अपनी दिव्य शक्ति से गए थे, उन्होंने साथ आने को भी न बतलाया था। वर्षावास बीतने पर जब सात दिन रह गए तब पूर्व अवरोध दूर हुआ। आयुष्मान अनिरुद्ध थेर ने दिव्यचक्षु से भगवान को देखा और तत्क्षण आयुष्मान महामोद्गल्यायन से कहा कि आकर भगवान को अभिवादन करो। महामोद्गल्यायन भगवान के समीप गए और अभिवादन करके उनसे संवाद किया। भगवान बुद्ध ने कहा कि सात दिन पश्चात् जम्बुद्वीप में उतरूंगा। महामोद्गल्यायन लौट आया। फिर उस जनपद के अधिपति राजा अमात्य और प्रजाजन जो भगवान बुद्ध के दर्शन के लालसु थे इस जनपद में भगवान के दर्शनों के लिए इकट्ठे हुए। तब उत्पलवर्णा अरहन्तिका ने अपने मन में कहा कि आज देश देश के राजा अमात्य और प्रजाजन भगवान को मिलने आए हैं। मैं एक साधारण सी स्त्री हूं मुझे भगवान को पहले अभिवादन कर सकूंगी। भगवान बुद्ध ने अपनी दिव्य शक्ति से यह अभिप्राय जान कर चक्रवर्ती राजा बनी हुई उत्पलवर्णा भिक्षुणी को पहले अभिवादन किया।

---

1 देखें पृष्ठ इस ग्रंथ के अंत में।

भगवान का देवलोक से संकिसा में अवतरण का दृश्य। साभार भारतकला

भगवान बुद्ध जब त्रयस्त्रिंश लोक में आए थे तो उतरते समय तीन निःश्रेणियां (पालि=निस्सेनी=सीढ़ियां) प्रगट हुई थीं। भगवान बुद्ध मध्य की निःश्रेणी (सीढ़ी) पर थे। वह सप्त-रत्नमयी थी। ब्रह्मलोक के महाराज ने दाहिनी ओर चांदी की निःश्रेणी प्रगट की थी और वे रत्न चामर लेकर खड़े थे। देवराज शक्र ने बाईं ओर तप्त कांचन की निःश्रेणी प्रकट की थी और वे सप्त रत्नमय छत्र लेकर खड़े थे। अनगिनत देवतागण भगवान बुद्ध के साथ उतरे थे। तीनों निःश्रेणियां भूमि में धंस गईं, केवल सात आंगुल दिखने को बच गए थे। बाद में सम्राट अशोक ने यह जानने के लिए कि निःश्रेणी की) नींव कहां है, खोदने के लिए आदमी भेजे, पीत जल तक भूमि खोदी गई, पर अंत न मिला। राजा की श्रद्धा भक्ति बढ़ गई, उसने 'आंगुल का विहार' बनवाया और मध्य के आंगुल पर 16 हाथ की माप स्थापित की, विहार के पीछे तीस हाथ ऊंचा धम्म स्तंभ बनवाया, जिसके ऊपर सिंह की प्रतिमा[2] बनी है। स्तूप के चारों ओर भगवान बुद्ध की मूर्ति बनवाई भीतर-बाहर से स्वच्छ स्फटिक जैसा चमकीला है। यहां अनेकों

---

1 चीनी भाषा में चाउ है। वह लगभग साढ़े सात फुट के बराबर होता है। जेम्स लेग्गे अनुवादकों ने 50 हाथ लिखा है।

2 वर्तमान संकिसा में शीर्ष की प्रतिमा खंडित है, धड़ का पत्थर भी नहीं है, पर पीठ की पाषाण प्रतिमा में पूरा स्तंभ का ऊपरी भाग अत्यंत प्रभावमान है।

3 अन्य तीर्थंकर व अन्य तीर्थों में अभिशाप देने वालों में है।

[illegible] अनुयायी ने भिक्षु [illegible] इस स्थान के [illegible] पर [illegible] भिक्षु [illegible] स्थान में आ गए थे। [illegible] ने प्रण किया [illegible] भिक्षुओं के पक्ष का [illegible] हो, तो [illegible] यह कहना था कि स्तूप पर [illegible] वह आग में [illegible]। [illegible] और [illegible] होकर यहां से भाग गए।

भगवान बुद्ध तीन मास तक [illegible] के [illegible] स्थान पर [illegible] गए थे। उनकी देह से [illegible] को [illegible] सुगंध आती थी, [illegible] मनुष्यों में नहीं होती। उन्होंने [illegible] स्नान किया था। बाद में [illegible] उस जगह को तीर्थ स्थान बना दिया। यह तीर्थ स्थान अब तक [illegible]

जिस स्थान पर उत्पलवर्णा ने भगवान बुद्ध का अभिनन्दन किया [illegible] स्तूप बना हुआ है। जहां भगवान बुद्ध आकर बैठे, जहां [illegible] किया, वहां भी स्तूप बने हैं। जहां पूर्व के तीन बुद्ध और [illegible] बैठे थे, जिस स्थान पर चंक्रमण किया था, जिस स्थान पर [illegible] गया है, सर्वत्र [illegible] स्तूप बने हैं। इस स्थान पर लगभग चार [illegible] भिक्षु [illegible]। सभी भिक्षुसंघ के [illegible] में भोजन [illegible] हैं और [illegible] तथा [illegible] के अनुयायी मिलजुल कर रहते हैं।

इस स्थान के पास ही एक [illegible] नाग [illegible] है [illegible] सुलक्षणी [illegible] नाग [illegible] का [illegible] है। वही भिक्षुसंघ का दानपति है। जनपद में [illegible] से [illegible] है [illegible] वर्षा होती है और [illegible] भिक्षुसंघ ने नाग के लिए [illegible] बैठने के लिए आसन [illegible] है, उसका [illegible] भिक्षुसंघ में [illegible] नाग [illegible] वर्षावास [illegible] पर [illegible] है। [illegible] जाता है जिसके कानों के पास सफेद [illegible] पहचानते हैं, [illegible] के कलश में दूध [illegible] है और [illegible] ऊंच-नीच के पास ले जाते हैं। [illegible] वर्ष में एक बार होती है। जनपद बहुत [illegible] है। यहां दूसरे देश के लोग आते हैं तो उन्हें [illegible] वस्तु की आवश्यकता होती है, देते हैं।



यहां से पश्चिमोत्तर पचास योजन पर [illegible] नाम [illegible] कहते हैं। [illegible] था। भगवान बुद्ध ने यहां धर्मोपदेश दिया था। बाद में [illegible] ने इस स्थान पर [illegible] का निर्माण करवा दिया। [illegible] पथ पर [illegible] गई थी, उस जगह अब तक [illegible]

यहां भगवान बुद्ध का एक [illegible] स्तूप है [illegible] साफ-सफाई करना और पानी [illegible] की आवश्यकता नहीं पड़ती।

[illegible] देश के राजा ने [illegible] अच्छा में बहुतेरे दल अपने साथ [illegible] करना। इस पर यक्ष ने [illegible]

यहां छोटे-बड़े [illegible] स्तूप [illegible] पर नहीं पा सकता। [illegible] स्तूप [illegible] एक मनुष्य [illegible] संख्या न जान [illegible]

एक संघाराम है। [illegible] बुद्ध [illegible] स्थान के बराबर है। इस स्थान [illegible] था [illegible] अब तक [illegible] है।

*[illegible] भगवान के [illegible] में [illegible] की [illegible] तक यह लिखते हैं [illegible] में [illegible] अनुसार मिलती है; [illegible]

[illegible] में यक्ष के नाम का [illegible] The Great [illegible] [illegible] संघाराम – भगवान बुद्ध

2 [illegible] ने "A King of the [illegible]" [illegible] [illegible] राजा।"

3 यह बात फाह्यान ने सुनी-सुनाई लिखी थी [illegible] में किसी आम आदमी ने [illegible]

## 18

## कान्यकुब्ज

## 19

## शांखे व शाचे

यहां से दक्षिण पश्चिम दिशा में दस योजन चलकर हम [illegible] पहुंचे। शाचे नगर के दक्षिण द्वार पर पूर्व की ओर [illegible]

## 20

## भारती

नगर के बाहर दक्षिण द्वार से 1,200 पग पर पश्चिम के मार्ग पर सेठ ने विहार (जेतवनाराम) बनवाया था। विहार के पूर्व ओर के दो खंभों पर इधर उधर दो पत्थर के धम्म स्तंभ पड़े थे। पहले ओर के धम्म स्तंभ पर चक्र की, और दाहिनी ओर के धम्म स्तंभ पर वृष (वृषभ राशि) की आकृति बनी हुई थी। विहार के दाएं बाएं और निर्मल जलपूर्ण सरोवर थे, सदाबहार वृक्षों के वन थे जिनमें रंग बिरंगे फूल खिले रहते थे। इसी अपूर्व और मनोहर शोभा जेतवन विहार (जेतवनाराम) की थी।

भगवान बुद्ध जब त्रयस्त्रिंश लोक (स्वर्ग) को गए और उन्होंने 90 दिन तक अपनी माता को अभिधर्म का उपदेश किया तो महाराज प्रसेनजित (पसनदि) भगवान बुद्ध के दर्शन को उत्सुक हुए और उन्होंने भगवान बुद्ध की गार्शीष चंदन की एक प्रतिमा बनवाकर जिस स्थान पर वे प्राय बैठते थे, रखवा दी थी। बाद में जब भगवान बुद्ध विहार में लौटकर आए तो प्रतिमा भगवान बुद्ध से मिलने के लिए उठकर चली। भगवान बुद्ध ने कहा कि अपने स्थान पर लौट जा, मेरे महापरिनिर्वाण के पश्चात तू चतुर्दिग भिक्खुसंघ के लिए आदर्श होगी। मूर्ति अपने स्थान पर लौट गई। यह प्रतिमा भगवान बुद्ध की पहली प्रतिमा थी। तदुपरांत लोगों ने उसी के आदर्श पर अन्य बुद्ध प्रतिमाएं बनवाईं हैं। भगवान बुद्ध जब वहां से गए। दक्षिण की ओर एक छोटे बुद्ध विहार में, जो मूर्ति के चंदन के स्थान से अलग 20 पग पर था, वे ले गए।

जेतवन विहार सात तले का था। सारे जनपद के राजा प्रजा सब परंपरा उस पर चढ़ावा चढ़ाने की ध्वजा और चांदनी लटकाने, फूल बिखेरने, दीप जलाने, और दीप प्रज्वलित करने के लिए स्पर्धा करते थे। नित्य प्रति अव्यवच्छिन्न यानी निर्बाध रूप से ऐसा ही करते थे। एक चूहा दीप की बत्ती मुंह में दबाकर ले गया और ध्वजा व चांदनी में उसने आग लगा दी, विहार में आग लग गई और सातों तले जलकर भस्म हो गए। जनपद के राजा प्रजा लोग सब दुखी और क्लांश्त हुए, स्थान यह समझा कि चंदन की मूर्ति भी जल गई। आश्चर्य की बात चार पांच दिन पीछे जब पूर्व के एक छोटे विहार का द्वार खुला तो मूर्ति वहां दिखाई पड़ी। सभी बड़े प्रसन्न हुए और मिलकर विहार बनवाने लगे। जब छत बन गई तो मूर्ति को फिर अपने स्थान पर ले गए।



'फाहियान' और 'लाओशाए' जब जेतवन विहार में पहुंचे तो उन्हें यह विचार आया कि भगवान ने यहां पच्चीस वर्षावास बिताए और अनेक देशना हुई। पृथ्वी के प्रांत में उत्पन्न होकर अपने कल्याण मार्ग के लिए इतने जनपदों में होकर आए, इनमें से कुछ लोग गए नहीं थे, इन्हें अशाश्वता और क्षणिकता प्रमाणित की। आज इस स्थान पर न तो भगवान बुद्ध रहे थे, बिना उनके देखा। इस आलोचक अनुभूति ने सभी को दुखी कर दिया। श्रमणों का झुंड बाहर आया, वे पूछने लगे कि किस स्थान से आए हो। जवाब दिया कि हान के देश से आए हैं। श्रमण लोग हाथ जोड़कर कहने लगे आह! सीमांत के लोग हमारे धर्म की जिज्ञासा से दूर आते हैं—आश्चर्य की बात है। परस्पर कहने लगे कि हम लोग एक पीढ़ी परंपरा से आने वालों को देखते आए हैं, पर हान देश के साधु लोगों को यहां कभी आते नहीं देखा।

जेतवन विहार से पश्चिमोत्तर में चार ली पर 'चक्षुकरण' नामक वन है। पहले पांच सौ अंधे यहां विहार के आश्रित थे। भगवान बुद्ध के धर्मादेश से उनको फिर दृष्टि मिल गई। अंधों ने मार्ग में अपने देश की ओर मुंह में गाड़ दिया और पंचांग प्रणाम किया। वह लक्षण लग गया और खड़े हो गए। सामान्य जनों ने बहुत प्रशंसा की और किसी ने उन्हें कारण का साहस नहीं किया और बाद में बढ़कर वे वन हो गए। इसी कारण से 'चक्षुकरण ही' वन कहने लगे। 'जेतवन' महाराम के श्रमण भोजनांतर प्राय इस वन में बैठकर ध्यान लगाया करते हैं।

जेतवन विहार के पूर्वोत्तर छह सात ली पर 'माता विशाखा' ने पत्थर का विहार का निर्माण करवाया था और उसमें भगवान बुद्ध और श्रमणों को आमंत्रित किया था, वह अब तक मौजूद है।

जेतवन विहार महाराम (जेतवन महाविहार) में दो द्वार हैं, एक पूर्व की ओर, दूसरा उत्तर की ओर। इस बाग को सेठ सुदत्त ने भूमि पर स्वर्ण मुद्रा (अशर्फियां) बिछाकर मोल लिया था। विहार ठीक मध्य में था। भगवान

---

1. बौद्ध मार्गानुयाइ।
2. यह स्थान त्रिपिटक के अनुसार (साकेत का) 'अजनवन' अथवा 'अंजनवन' होना चाहिए—सं.

## 21

## कश्यप, ककुच्छंद और कनकमुनि के जन्मस्थान

नगर के पश्चिम 50 ली पर 'टूवीइ'[1] नामक एक गाव पड़ता है। यह काश्यप बुद्ध का जन्मस्थान माना जाता है। पिता पुत्र के दर्शन के स्थान पर (परिनिर्वाण स्थान पर) स्तूप बने हुए हैं। काश्यप बुद्ध की शरीर धातुओं पर एक विशाल धम्म स्तूप बना हुआ है।

श्रावस्ती नगर के दक्षिण-पश्चिम दिशा में 12 योजन पर 'न पीइ किया'[2] नामक गाव पड़ा। यहां ककुच्छंध बुद्ध के जन्म स्थान पर, पिता-पुत्र के दर्शन के स्थान पर और परिनिर्वाण स्थान पर धम्म स्तूप बने हुए हैं।

यहां से उत्तर दिशा में एक योजन से कम पर[3] एक और गाव पड़ा। यह कनकमुनि का जन्मस्थान है। पिता-पुत्र के दर्शन के स्थान पर और परिनिर्वाण स्थान पर स्तूप बने हैं।

## 22

## कपिलवस्तु

यहां से एक योजन से कम चलकर कपिलवस्तु[4] नगर में पहुंचे। नगर में न राजा है न प्रजा। केवल खडहर और उजाड़ है। कुछ श्रमण निवास करते हैं और दस घर निवासियों के हैं। शुद्धोदन के महल में अब कुमार और माता की प्रतिमा बनी हैं। जहां श्वेत हाथी के रूप में सिद्धार्थ कुमार

1. श्रावस्ती से 9 मील पर 'टंडवा' नामक ग्राम।
2. इसे नाभिका कहते थे। इसका खडहर नेपाल राज्य में बाण गंगा नदी की बाढ़ और 'लोरी की कुदान' और 'गाटिहवा' गावों के मध्य में है।
3. यह स्थान नाभिका से उत्तर पूर्व साढ़े 6 मील पर उजाड़ पड़ा है। तिलौरा और गावरी के पास कुछ खडहर हैं। यहां का अशोक धम्म स्तंभ अब तिलौरा के उत्तर डेढ़ मील पर विगलिहवा (निग्लीवा) टूटा पड़ा है, उस पर लिखा है - "देवताओं के प्रिय प्रियदर्शी राजा ने राज्याभिषेक के चौदह वर्ष बाद कनकमुनि बुद्ध के स्तूप की लंबाई बढ़ाकर दुगुनी कर दी और राज्याभिषेक के बीस वर्ष बाद स्वयं आकर (इस स्तूप की) पूजा की और (एक शिला-स्तंभ) खड़ा किया।"
4. कोशल और रामग्राम के बीच का देश जो अचिरावती (राप्ति) और बाणगंगा के बीच में था।

[illegible]

[illegible] माता के गर्भ में प्रविष्ट [illegible] में [illegible] को देख रथ [illegible]

जहां 'अए' (असित) ने [illegible] देखा था, जहां कुमार ने नंद [illegible] फेंका था, जहां पूर्व दिशा में [illegible] और सोता फूट निकला [illegible] आगन्तुकजन पानी पीते हैं, [illegible] भगवान बुद्ध [illegible] राजा के दर्शन किए, जहां 500 शाक्यों ने गृह [illegible] किया, जहां पृथ्वी 6 बार [illegible] धर्मोपदेश किया, चातुर्महाराज [illegible] न आए, जहां भगवान बुद्ध न्यग्रोध [illegible] बैठे और जहां प्रजापति ने [illegible] विडूडभ है) ने शाक्यों को [illegible] जगह स्तूप बने हैं। अन्त का स्तूप [illegible]

नगर के पूर्वोत्तर कई ली पर [illegible] नीचे बैठकर हलवाहों को देखा था।

नगर के पूर्व में 50 ली पर राजा [illegible] महारानी ने एक कुंड में प्रवेश कर स्नान किया था। [illegible]

1. देखें पारिशिष्ट 2
2. चीन के ग्रंथों में 1,000 शाक्यों को [illegible] राजकन्याओं को जिन्हें [illegible] उन्होंने इनकार किया, तो उसने [illegible]
3. प्राचीनकाल में राजा लोग [illegible] के कृषि का स्थान कुरुक्षेत्र [illegible]
4. यह स्थान नेपाल की तराई में भगवानपुर के [illegible] का जन्म यहीं हुआ था और ग्रंथों में [illegible] ने राज्याभिषेक के 20 वर्ष बाद स्वयं [illegible] यहां शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म [illegible] बनवाई गई और पत्थर का एक स्तंभ [illegible] जन्म थे इसलिए लुम्बिनी ग्राम को कर से मुक्त [illegible] का) आठवां भाग भी (जो राजा का हक था [illegible]

[illegible] से निकले, 20 पग चले, उसने अपना हाथ उठाकर एक ओर [illegible] पृथ्वी फोड़कर एक ओर से कुमार को जन्म दिया। कुमार पृथ्वी पर [illegible] पग चले जो नागराजों ने कुमार को नहलाया। स्नान के स्थान पर [illegible] बना है। इसमें और स्नान के कुंड से अब तक श्रमण पानी भरते [illegible]

सब बुद्धों के घर समान घटनाओं के स्थान होते हैं। यह पवित्र स्थान (2) धर्म चक्र प्रवर्तन का स्थान, (3) धर्मोपदेश, सत्यभाषण और पापों सहन का स्थान और (4) अग्निस्कंध त्याग से माता को अभयदान देकर उनके उतरने का स्थान। अन्यान्य प्रसिद्ध समय विशेष से होते हैं।

[illegible] जनपद मनुष्य-शून्य है। यहां पर निवासी बहुत कम हैं। पथ में हिंसा और सिंह से बचने की आवश्यकता है, बिना सावधानी [illegible]

## 23

## रामग्राम और रामस्तूप

भगवान बुद्ध के जन्म स्थान से 5 योजन पर राम नामक [illegible] मिला। जनपद के राजा को भगवान बुद्ध की धातु का एक भाग मिला था वापसी में उसने एक स्तूप बनवाया था। उसका नाम राम धम्म स्तूप है। स्तूप के पास एक ह्रद है। ह्रद में एक नाग रहता था। वह धम्म स्तूप की रक्षा और निरंतर पूजा करता था। जब सम्राट अशोक यहां आया तो उसने चाहा कि आठों स्तूपों में से भगवान बुद्ध के शरीर धातुओं के [illegible]

---

भगवान के अवशेष और चैत्यों का उल्लेख है। 1. जन्म स्थान, 2. [illegible] स्थान, 4. धर्मचक्रप्रवर्तन स्थान, 4. विमाने प्रधान के पश्चात् खुला स्थान, [illegible] नवोरोहण पश्चात् के अवतरण स्थान, 6. [illegible] स्थान, 7. [illegible] स्थान और 8. परिनिर्वाण स्थान। ये आठ क्रमशः लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ, श्रावस्ती, संकाश्य नगर, राजगृह, वैशाली और कुशीनगर हैं।

2 यह जनपद कपिलवस्तु और कुशीनगर के मध्य में पड़ता है। मल्लों की राजधानी कुशीनगर के पास थी। यहां स्थान होगा। गोरखपुर के पास जनपद [illegible] जाने हैं, संभव है कि यह ग्राम जिसका होना पाषाण में स्तूप के पास [illegible] है, उन्हीं में से कोई हो। बाणगंगा कपिलवस्तु और रामग्राम के बीच में है। [illegible] सीमा मानी गई है, उसी के आसपास इस ग्राम का होना चाहिए।

[illegible] 84,000 स्तूप बनवाए। सात स्तूप [illegible] के [illegible] में निर्माण कराना चाहा। नाग राजा प्रसन्न हुआ, उसने [illegible] पूजा और पूजा के उपकरण सम्मान दिया। [illegible] उसने उत्तम रूप से पूजा की। राजा को स्तूप [illegible] पूजा में आसक्ति नहीं। राजा समझ गया कि पूजा के [illegible] नहीं मिलेंगे। इस पर वह लौट गया।

वह स्थान जंगल हो गया, कोई पानी और शुद्ध [illegible] था। गांववालों का एक यूथ अपने मुखिया के [illegible] और नाना-भांति के पुष्प और गंधद्रव्य लाता था।

एक देश का 'मार्गी' यानी धर्म स्तूप के [illegible] देख बहुत भयभीत हुआ। वह घर-घर [illegible] यथाविधि पूजा करते हैं। मार्गी ने [illegible] नहीं कि धर्म स्तूप की पूजा हो सके, सोचा पानी और [illegible] कपड़ा और सामनेर बनकर जाए। उसने अपनी [illegible] स्थान। स्थान को टीक और साफ सुथरा बनाया। [illegible] राजा से भिक्षुओं के लिए उसने स्थान बनवाने और [illegible] मार्ग बना। अब उसमें भिक्षु रहते हैं। वह मनौती [illegible] समय से अब तक श्रमण बुद्धविहार में [illegible]

## 24

## महापरिनिर्वाण स्थान

यहां से पूर्व में 3 योजन चलकर पहला [illegible] [illegible] के साथ श्वेत अश्व लाने का स्थान था। [illegible] था। यहां से 4 योजन चलकर अगर स्तूप पर पहुंचे। [illegible] से 12 योजन चलकर कुशीनगर नगर में पहुंचे। नगर के [illegible]

---

1 यह स्तूप मौर्यों का बनाया हुआ पाषाण [illegible] महापरिनिर्वाण पर जब उनका अग्नि [illegible] मौर्य लोग पहुंचे थे। उन्हें द्रोण ने [illegible] लोगों ने अपने यहां स्तूप बनवाया था।

2 यह स्थान गोरखपुर से [illegible]

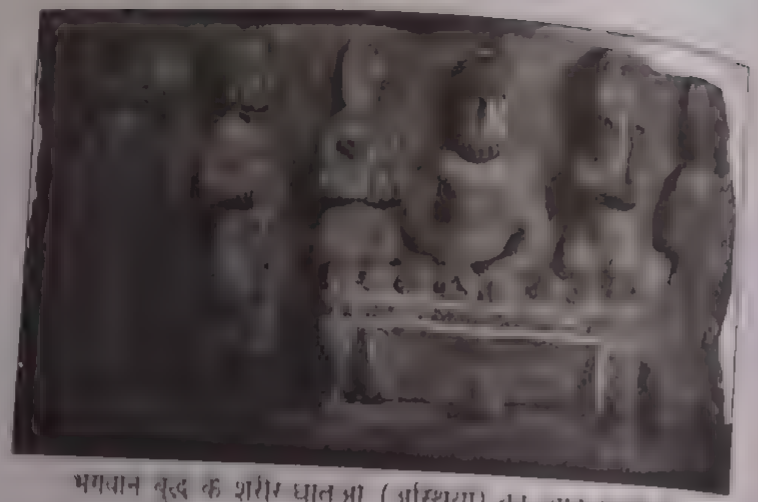

भगवान बुद्ध के शरीर धातुओं (अस्थियों) को आठ भागों में विभाजन करते हुए आचार्य द्रोण

के (दो) वृक्षों के मध्य निरंजना नदी के किनारे भगवान के उत्तर दिशा में सिर करके महापरिनिर्वाण प्राप्त करने का स्थान है, सुभद्र परिव्राजक (बुद्ध का अंतिम शिष्य) के पीछे अर्हंत होने का स्थान है, सुवर्ण की नाव (द्रोण) में भगवान की 7 दिन तक पूजा करने का स्थान है, चक्रपाणि के मृतक गदा फेंकने का स्थान है और 8 राजाओं के धातु का अंश लेने का स्थान है सब जगह धम्म स्तूप व संघाराम बने हैं। अब तक विद्यमान हैं। नगर में बस्ती कम और विरल है। केवल कुछ तितर-बितर श्रमणों के निवास हैं।

यहां से पूर्व दक्षिण में 12 योजन चलकर वहां पहुंचे जहां लिच्छवी नागों ने (जब) भगवान बुद्ध के साथ महापरिनिर्वाण स्थान पर चलने की अभिलाषा व्यक्त की और भगवान बुद्ध ने न माना तो वे भगवान बुद्ध के साथ साथ चले, और नहीं लौटे, तो भगवान बुद्ध ने एक बड़ा हृद (झील) प्रगट किया जिसे वे पार न कर सके, फिर भगवान बुद्ध ने अपना भिक्षापात्र स्मृति स्वरूप देकर उन्हें घर लौटाया। इस जगह पत्थर का एक धम्म स्तंभ बना है, उस पर एक कथा लिखी है।

---

उत्तर सिर किए एक बुद्धविहार में लेटी है और उसके निकट कुछ दूर नया स्तूप भी है।

भवतया महाराज का नाम



---

1 [illegible]

2 [illegible] verred Vihar" [illegible] was the peculiar [illegible] something about [illegible] galleries अर्थात वह समझ में नहीं आता कि [illegible] में इस मंदावन और अन्यत्र 'मंदावन हुगार' लिखा है।

3 जगो महाशय ने इसका अनुवाद Here I [illegible] गोल ने "In this place I have [illegible] my earthly career" अन्य ने [illegible] है, पर हमारे मत में यह मेरा अंतिम [illegible] (from here) ठीक है।

वैशाली स्थित बने हुए एक शेर वाला अशोक स्तम्भ, स्तूप और पुष्करिणी एक साथ दिखाई दे रहे हैं



...का राजा सैर करने निकला था। पाना में उसने ...देखी। खोला तो दखा उसम एक सहस्र लड़के थ पूर ...ने खिला-पिलाकर उनको सयाना और बड़ा किया। वे बड़े ... पृथ्वी, जल में हेपियों के विध्वंसक थे। होते-होते अपने बाप राजा ... चढ़ाई की। राजा इससे बहुत घबराया। छोटी रानी ने ... का कारण पूछा। राजा ने जवाब दिया कि उस राजा के एक सहस्र ... साहसी और प्रचंड हैं। मेरे जनपद पर आक्रमण करना चाहते हैं ...मी मे भयभीत है। ...रानी ने ... पूर्व की दीवार में एक ऊचा बारजा (अटारी) बनवा दो, जब शत्रु ... मैं बारजे पर से सबका लाटा दूगा। रानी ने जसा कहा था, उसी ... अनुसार किया। शत्रु आए। छोटी रानी बारजे से बोली तुम मेरे ... क्यों अनीति उलटी करते हो। शत्रु बोले तू कान हो जो कहती है कि ...मारी माता है। छोटी रानी ने कहा विश्वास न हो, तो मुह खो ... और नाको। छोटी रानी ने दोनों हाथों से स्तनों को दबाया, दूध ... में 500 धारा निकली और उन हजार लड़कों के मुह में पड़ी। ... गए कि यह माता है और उन्होंने धनुष बाण डाल दिए। दो ... इस पर ध्यान करने लगे और पच्चीस ... हो गए ... वाले भी दोनों प्रत्येक बुद्ध के रूप ...।

पांच जब भगवान ने बोधि प्राप्त कर शिष्यों को इस 'धनुबाण ... स्थान के बारे में बताया। तब लोगों ने इस स्थान को जाना ... स्तूप बनाकर यह नाम दिया। ... बुद्ध हुए। भगवान बुद्ध ने इसी 'धनुवाण त्याग स्तूप' के पास ज... त्यागी। भगवान बुद्ध ने आनंद से कहा—मैं तीन मास में मा... करूगा। मार राजा ने आनंद थेर को मोहित कर लिया और वह ... से ससार में अधिक रहने के लिए न कह सका।

यहा से पश्चिम में लगभग ... पर ...।

---

1. यह द्वितीय धर्मसंगीति का स्थान है। यहां भगवान बुद्ध के महापरि... वर्ष पश्चात त्रिपिटक का पारायण किया गया था। विनय के ... का ... उच्चारण करने वाले भिक्षु ... पाच साधारण निर्वेध जैसे— ... का विषय 'यश' व 'यशद' था। दस शील ...

के महापरिनिर्वाण के सौ वर्ष पश्चात वैशाली के भिक्खुओं ने विनय के दस शीलों के विरुद्ध-आचरण किया। यह कहा कि यह भगवान बुद्ध के वचनानुसार ही है। इस पर सब अर्हत और शीलवान 700 भिक्खुओं ने मिलकर त्रिपिटक के ग्रंथों का पारायण किया और मिलान बैठाया। इसके पश्चात लोगों ने इस स्थान पर धम्म स्तूप बना दिया, वह अब तक वर्तमान है।

## 26

## आनंद का परिनिर्वाण स्थान

इस स्थान से 4 योजन चलकर पांच नदियों के संगम[1] पर पहुंचे। आनंद घर मगध से वैशाली परिनिर्वाण के लिए चले। देवताओं ने अजातशत्रु को सूचना दी। अजातशत्रु शीघ्र रथ पर चढ़ सेना साथ लिए नदी के तट पर

---

**पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं प्राणी-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **2. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **3. कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **4. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं झूठ बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **5. सुरामेरयमज्जपमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं सुरा (पक्की शराब), मेरय (कच्ची शराब), मद्य और नशीली चीजों व प्रमाद जुए आदि से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।),

और पांच व्यसन जैसे–

**6. विकाल भोजना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं विकाल भोजन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **7. नच्च-गीत-वादित-विसूक-दस्सना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं नाच, गाना, बाजा और मेल तमाशे को देखने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **8. माला-गंध-विलेपण धारण मण्डन विभूसनट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं माला, सुगन्धि, लेपन को धारण करने एवं शरीर-शृंगार के लिए किसी प्रकार के आभूषण को वस्तुओं को धारण करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।) **9. उच्चासयन-महासयना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (मैं बहुत ऊंची और महाघ शय्या पर सोने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।), **10. जात-रूप-रजत पटिग्गहणा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि** (सोने-चांदी के ग्रहण करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूं।),

यह वही स्थान है जहां सोन गडकादि गंगा नदी में सोनपुर के पास मिली है।



पहुंचा। वैशाली के लिच्छिवियों ने आनंद का आगमन सुना, लेने को चले, नदी पर पहुंचे। आनंद थेर ने सोचा, आगे बढ़ता हूं, तो अजातशत्रु निकृष्ट मानता है, लौटता हूं तो लिच्छिवी रोकते हैं। निदान नदी के बीच में ही समाधि जनित अग्नि में उन्होंने परिनिर्वाण लाभ किया। शरीर का अंश दो भागों में विभक्त कर एक-एक भाग एक-एक किनारे पहुंचाया गया। दोनों राजाओं को आधे-आधे शरीर-धातु के अंश मिले। वे लौट आए और उन्होंने धम्म स्तूप बनवाया।

## 27

## पाटलिपुत्र

नदी उतरकर दक्षिण में 1 योजन चलकर मगध जनपद के पुष्पपुर (पाटलिपत्तन=पाटलिपुत्र=अब पटना) में पहुंचे। पुष्पपुर सम्राट अशोक की राजधानी थी। नगर में सम्राट अशोक का प्रासाद और सभाभवन है, सब असुरों के बनाए हैं। पत्थर चुनकर भीत (दीवार) और द्वार बनाए हैं। सुंदर खुदाई और पच्चीकारी है। ऐसा अब इस लोक के लोग नहीं बना सकते। अब तक वैसे ही है।

राजा अशोक का एक छोटा भाई था। अर्हतपद प्राप्त हुआ गृध्रकूट पर्वत पर रहता था। एकांत और शांत स्थान में मग्न रहता था। राजा अंतःकरण से उसका सम्मान करता था। राजा ने चाहा कि आमंत्रित कर उसे घर लायें और खिलायें। पर्वत के एकांतवास के आनंद के कारण उसने निमंत्रण स्वीकार नहीं किया। राजा ने भाई से कहा निमंत्रण स्वीकार मात्र करो, नगर के अंदर पर्वत बनवाए देता हूं। तद्नुसार भोज की सामग्री तैयार की गई। सब असुरों का आह्वान किया गया, घोषणा (मुनादी) कर दी गई कि कल के लिए मेरा निमंत्रण स्वीकार करो। आसन बैठने को नहीं है। अपना-अपना लेते आना। दूसरे दिन सब महासुर आसन के लिए बड़ी-बड़ी शिला लेकर आए जो (समूची) दीवार के बराबर चार-पांच पग लंबी चौड़ी थी। भोज हो गया तो असुरों से बड़ी-बड़ी शिला चुनवाकर पर्वत बनवा दिया। पर्वत के पाद में पांच बड़ी शिलाओं से एक गुफा भी बनवा दी, जो 30 हाथ लंबी, 20 हाथ चौड़ी और 10 हाथ से अधिक ऊंची थी।

---

1. नीचे की ओर चलकर अर्थात नदी के उतार की ओर जाकर।

चौथा-पाचवीं शताब्दी के मध्य चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान जब अपने दो साथी यात्री भिक्खुओं के साथ पटना पहुंचे तो उन्होंने अशोक के महल (अशोकाराम) को चित्र में दर्शाई गई अवस्था में देखा था।



एक महायानीनुयायी ब्राह्मण कुमार गध नामक इस नगर में था। वह बौद्ध विनय और पारदर्शी ज्ञान संपन्न था तथा विमल (शुद्ध) आचार में रहता था। [illegible] यानयोन करने जाता तो सामन बठन का साहस न करता। राजा भक्ति और श्रद्धा से कभी हाथ छूता तो छूटने ही ब्राह्मण झट पानी से उसे धो डालता था। 50 वर्ष से अधिक की आयु थी। सारे जनपद में उनका मान था। इस एक मनुष्य से बौद्ध-धम्म की सर्वत्र विख्याती थी। अन्य धर्मावलंबी श्रमणों का छू नहीं सकते थे।

अशोक के स्तूप के समीप महायान का एक संघाराम बना है। बहुत सुंदर और भव्य है। यहीं हीनयान का भी विहार है। सब में सात-आठ सौ भिक्खु निवास करते हैं। आचार-विचार, पठन-पाठन विधि दर्शनीय है। चारों ओर के संन्यासी श्रमण, विद्यार्थी, सत्य और हेतु के जिज्ञासु इस स्थान का आश्रय लेते हैं। यहां एक ब्राह्मण कुमार आचार्य हैं, नाम भी मंजुश्री है। जनपद के संन्यासी श्रमण और हीनयान के भिक्खु उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं और इस संघाराम में आते हैं।

मध्यदेश (मज्झदेस—तत्कालीन भारत) में इस जनपद का यह नगर सबसे बड़ा है। यहां के निवासी संपन्न और समृद्धशाली हैं। दान और सत्य में श्रद्धालु हैं। प्रत्येक [illegible] को यात्रा निकलती है। चार पहिए के रथ बनते हैं। यह यूप पर ठाटी जाती है जिसमें धुरी और हर्से लग जाते हैं। रथ 20 हाथ ऊंचा और स्तूप के आकार का बनता है। ऊपर से सफेद चमकीला ऊनी कपड़ा मढ़ा जाता है। [illegible] स्फटिक की भव्य बनती हैं। रेशम की ध्वजा और चांदनी लगती है। चारों कोने पर कलगियां लगती हैं। बीच में भगवान बुद्ध की मूर्ति होती है और पास में एक बोधिसत्व खड़ा किया जाता है। बीस रथ होते हैं। एक से एक सुंदर और भव्यकाय [illegible] के सन्यासी-परिव्राजक और गृहस्थ एकत्रित होते हैं। गाने-बजाने वाले साथ लेकर फूल और गंध से पूजा करते हैं। फिर ब्राह्मण आते हैं और भगवान

1. अन्य अनुवादकों ने [illegible] मूल के विरुद्ध है।

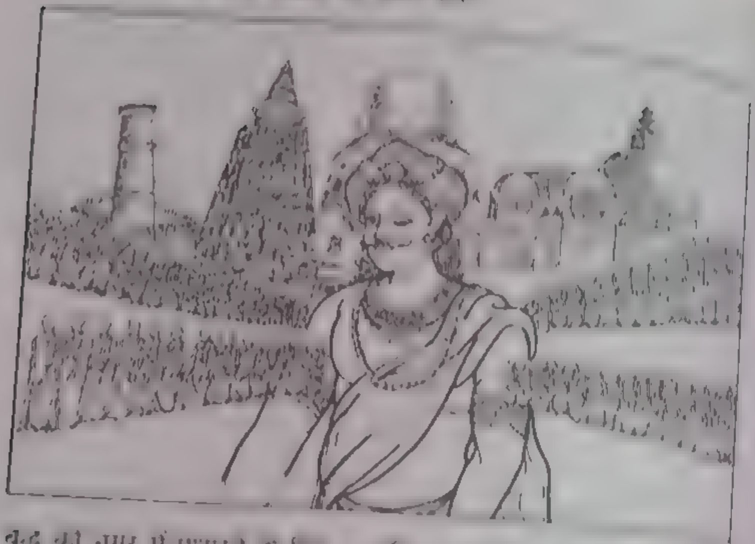

बुद्ध को नगर में पधारने के लिए आमंत्रित करते हैं। सारे नागरिक नगर में प्रवेश करते हैं। इसमें दो रातें बीत जाती हैं। सारी रात दीया जलता है, गाना बजाना होता है। पूजा होती है। जनपद में ऐसा ही होता है। नगर के वैश्यों के मुखिया लोग नगर में सदाव्रत और औषधालय स्थापित करते हैं। देश के धनहीन, अपंग, अनाथ, विधवा, निःसंतान, लूले, लंगड़े और रोगी लोग इस स्थान पर जाते हैं, उन्हें सब प्रकार की सहायता मिलती है। वैद्य बीमार रोगों की चिकित्सा करते हैं, वे अनुकूल पथ्य और औषध पाते हैं, अच्छे होने पर जाते हैं।

सम्राट अशोक ने सातों स्तूप 84,000 स्तूप बनवाने के लिए खुदवाए। पहला महास्तूप जो बनवाया नगर के दक्षिण में 3 ली से अधिक दूरी पर है। इस स्तूप के सामने भगवान बुद्ध का पद चिह्न (बुद्धपाद) है। यहां पर विहार बना हुआ है। द्वार उत्तर की ओर है। स्तूप के दक्षिण में पत्थर का एक स्तंभ है, घेरे में चौदह पंद्रह हाथ और ऊंचाई में 30 हाथ से अधिक है। उस पर यह वाक्य अंकित है "अशोक राजा ने जंबूद्वीप चारों ओर से भिक्षुसंघ को दानकर दिया, फिर धन देकर ले लिया। ऐसा तीन बार किया।" स्तूप के उत्तर में तीन चार सौ पग पर अशोक राजा ने नेल नगर बसाया। नेल नगर में पत्थर का एक स्तंभ है, 30 हाथ से अधिक ऊंचा। इसके ऊपर सिंह है। स्तंभ पर खोदा है 'नगर बसने का हेतु वर्ष, तिथि और मास।'

२४

[illegible]

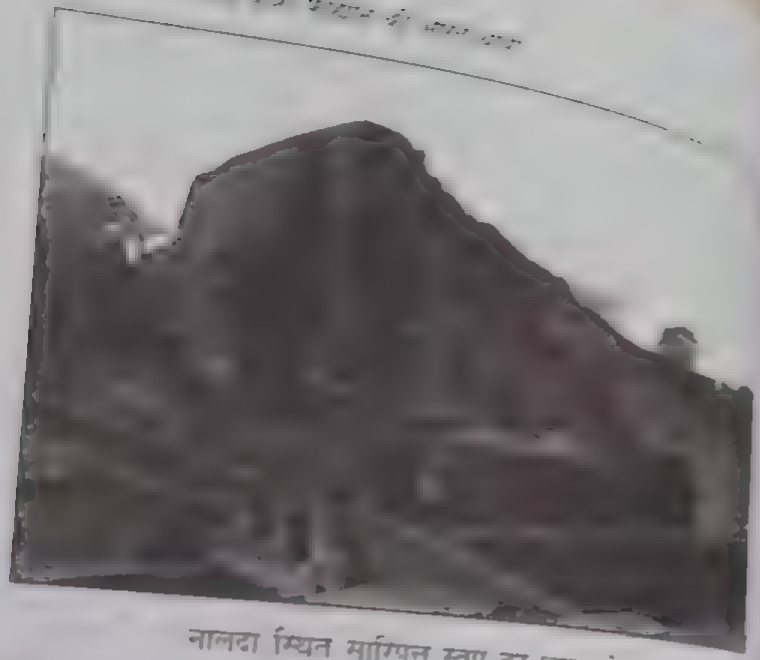

नालदा स्थित सारिपुत्त स्तूप का भग्नावशेष

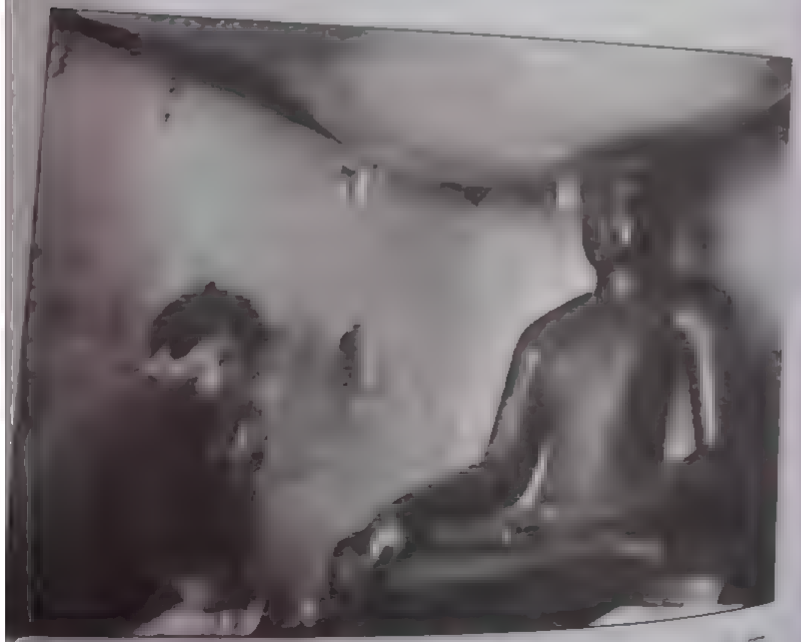

नालदा भग्नावशेष परिसर के पीछे बड़गांव में स्थापित भगवान बुद्ध की काले पत्थर में बनी विशाल प्रतिमा



[illegible] जहरीला भोजन [illegible] कोई मनुष्य नहीं है

[illegible]

## गृध्रकूट पर्वत

[illegible] चढ़कर गृध्रकूट[1] पर्वत पर पहुंचे [illegible] के समक्ष बैठा। आनंद थर को डराया। भगवान बुद्ध [illegible] जान गए, पत्थर फाड़कर उन्होंने हाथ निकाला और आनंद के [illegible]। तत्क्षण भय जाता रहा। पक्षी का पद-चिह्न, हाथ निकालने [illegible] तक है। इसी से गृध्रकूट नाम पड़ा।

[illegible] सामने चारों (पूर्व-बुद्धों) के बैठने के स्थान हैं। अनेक अहंता [illegible] बैठकर ध्यान करने की कंदरा [illegible] बुद्ध गुफा के सामने पूर्व से पश्चिम चक्रमण कर रहे थे। देवदत्त [illegible] उत्तर की करार से पत्थर चलाया। भगवान बुद्ध के पैर [illegible]

---

[illegible]

[illegible] ने यह लिखा है कि गृध्रकूट का आकार गिद्ध (गृध्र) पक्षी के सदृश है। [illegible] के मरने पर अपने सौतेले भाई को पर्वत से गिराकर मार

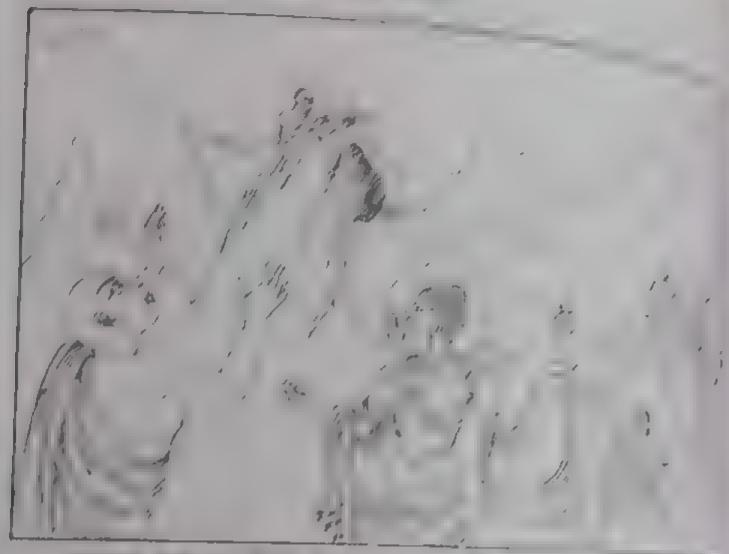

भगवान बुद्ध पर चंदन लुढ़काकर उनकी जीवन लीला समाप्त करने का प्रयास करते देवदत्त

गृध्रकूट पर्वत के शिखर पर निर्मित एक बुद्ध विहार यानी स्तूप के भग्नावशेष

[illegible]

## 30

## सप्तपर्णी गुफा

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

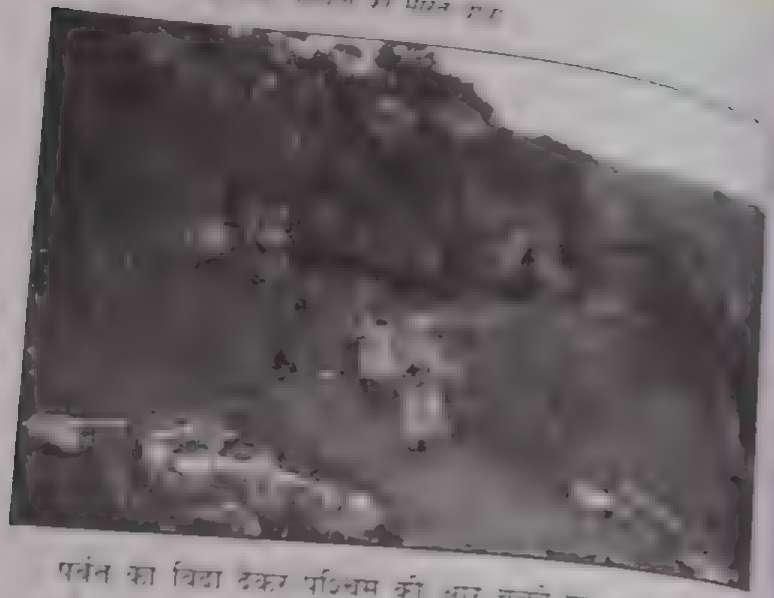

पर्वत को विदा देकर पश्चिम की ओर चलने पर [illegible] गुफा है। नाम पिप्पल गुफा। भगवान बुद्ध भोजनान्तर यहाँ बैठकर ध्यान किया करते थे।

पश्चिम में पाँच-छह ली जाने पर पर्वत की उत्तरी आड़ में [illegible] गुफा सप्तपर्णी है। भगवान तथागत सम्यक् समबुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् 500 अर्हतों ने एकत्रित होकर इस स्थान पर [illegible] का संग्रह किया था। जब सूत्रों का पारायण होने लगा, तीन [illegible] बने थे और भली-भाँति अलंकृत किए गए थे। [illegible] मौद्गल्यायन दाहिनी ओर बैठा। 500 की गणना में एक [illegible] थी। आनंद थेर बाहर था (अर्हत न होने के कारण) [illegible] यहाँ धम्म स्तूप बनाया गया, जो अब भी है।

पर्वत के किनारे, भी बहुत से अर्हतों के बैठकर ध्यान करने की [illegible] गुफाएँ हैं। पुराने नगर से उत्तर-पश्चिम निकलकर [illegible] देवदत्त की गुफा पड़ती है। इससे 50 पग पर एक बड़ी चौकोर [illegible] उस पर एक भिक्खु ने चंक्रमण करते विचारा 'देह अनित्य है, [illegible] अलीक, पवित्र नहीं है। मैं इस देह से तंग आ गया हूँ, इसने [illegible] क्लेश दिया।' यह विचार कर उसने स्वहत्या करने के [illegible] फिर मन में आया कि भगवान ने स्वघात का निषेध किया है [illegible]

[illegible]

## 31

## गया

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] स्थान गया नगर से पूर्व-पश्चिम में है [illegible] नीलांजना (निरंजना) नदी में स्नान किया था।

ऊंचाई 2 हाथ है। मध्य देश में शीतोष्ण की समता है। वृक्ष कोई सहस्र या दस सहस्र वर्ष तक रहते हैं।

यहां से पूर्वोत्तर आधे योजन पर एक पाषाण की कंदरा पड़ती है, बोधिमन्च इसमें जाकर पश्चिमाभिमुख पालथी मारकर बैठे थे। मन में कहा कि जो मुझे बोधिज्ञान प्राप्त होने को हो, तो अलौकिक प्रमाण मिले। शिला की दीवार पर भगवान बुद्ध की छाया दिखाई पड़ी। तीन हाथ से अधिक ऊंचा थी। जो अब तक चमकती है। उस समय आकाश और पृथ्वी में वड़ा कंपन हुआ। सारे देवता बोल उठे, "यह स्थान नहीं है जहां आकर सारे बुद्धों में से कोई भी बोधिज्ञान प्राप्त हुआ हो। यहां से पश्चिम-दक्षिण आधे योजन से कम पर जाकर (चल)[1] पत्रवृक्ष पड़ेगा, वहां जाकर सब बुद्ध बोधिज्ञान प्राप्त करते हैं।" सारे देवताओं ने यह कह उस ओर का मार्ग दिखाया। वे गाते हुए आगे आगे चले। बोधिमन्च उठकर चल। वृक्ष से 30 पग पर एक देवता (सौम्यिय नामक गंधियाग) ने कुश (घास) दिया। बोधिमन्च उसे लेकर आगे चल। 15 पग चलने पर 500 हरे पक्षी सब उड़ते हुए आए। उन्होंने बोधिमन्च की तीन बार परिक्रमा की और फिर गए। बोधिमन्च चलपत्र वृक्ष के नीचे पहुंचे। कुश बिछाकर पूर्व की ओर मुख करके बैठ गए। फिर माराज ने अपनी तीन सुंदर स्त्रियां भेजीं। वे उत्तर से आकर मोहित करने लगीं। माराज दक्षिण से आकर मोहित करने लगा। बोधिमन्च ने पैर का अंगूठा पृथ्वी में लगाया। सेना भागी और पराजित हुआ। तीनों युवतियां जराग्रस्त होकर वृद्धा हो गईं।

यहां छह वर्ष कठोर तप किया वहां तथा अन्य सब स्थानों पर पीछे लोगों ने जो स्तूप बनाए तथा मूर्तियां स्थापित की थीं, सब अब तक हैं।

जिस स्थान पर भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त कर दिन (सात सप्ताह से) ध्यान किया वृक्ष की ओर और विभिन्न आनंद अनुभव किया जिस स्थान पर चलपत्र (पीपल) वृक्ष के नीचे पूर्व पश्चिम सात दिन चंक्रमण किया, जिस स्थान पर सब देवताओं ने आकर सप्तरत्न का मंडप बनाया और भगवान बुद्ध की आराधना सात दिन की, जिस स्थान पर मूर्चालिंद नाग

1. फाह्यान ने केवल पत्र लिखा है जिस से समझकर नर्मी महोदय ने नोट में 1 palm tree, borassus flabelliferu अर्थात ताड़ लिखा है मक्कल में चलपत्र पीपल को कहते हैं।



सात दिन तक भगवान बुद्ध को आश्रयदान [illegible] था [illegible] स्थान है भगवान बुद्ध सात दिन तक व्यतीत। [illegible] वृक्ष के नीचे पल्यंकासन [illegible] पर पूर्वाभिमुख बैठे थे और ब्रह्मदेव ने आकर प्रार्थना की थी, [illegible] स्थान पर चातुर्महाराजाओं ने भिक्षापात्र दान किया, जिस स्थान पर 500 [illegible] ने भुना हुआ आटा और मधु समर्पित किया था, जिस स्थान पर काश्यप बंधुओं और उनके 1,000 शिष्यों को [illegible] इन सब स्थानों पर धर्म स्तूप बने थे। [illegible] इस स्थान पर तीन संघाराम हैं [illegible] भिक्षुसंघ को सभी आवश्यक पदार्थ प्रदान करते हैं [illegible] के कानाफूसी नहीं होती। ये चैत्य [illegible] और सब में जाने के आचार [illegible] सब भगवान बुद्ध के काल में थे [illegible] है। भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के [illegible] सब जानते चले आ रहे हैं, [illegible] यह महास्तूप बुद्ध का जन्म स्थान [illegible] स्थान और महापरिनिर्वाण स्थान में [illegible] है।

## 32

## सम्राट अशोक

सम्राट अशोक पूर्वजन्म में [illegible] थे [illegible] शास्ता बुद्ध भिक्षाटन भ्रमण करते [illegible]

---

इस अनुच्छेद में सभी संस्करणों [illegible] समय के साथ इसमें अंतर आ गया जिस कारण [illegible] काश्यप की पत्ते में काश्यप है [illegible] यह एक भ्रम है। चीन का पाम [illegible] भगवान बुद्ध आनंद और के साथ [illegible] दो पगोडा बना रहे थे। भगवान [illegible] भिक्षा दान आया। पास [illegible] दो भगवान बुद्ध ने आनंद और से [illegible] वेदी पर लेप कर दो। और बालक को आशीर्वाद दिया कि मेरे महापरिनिर्वाण से सौ वर्ष पश्चात तू राजा अशोक और 84,000 स्तूप बनवाएगा।

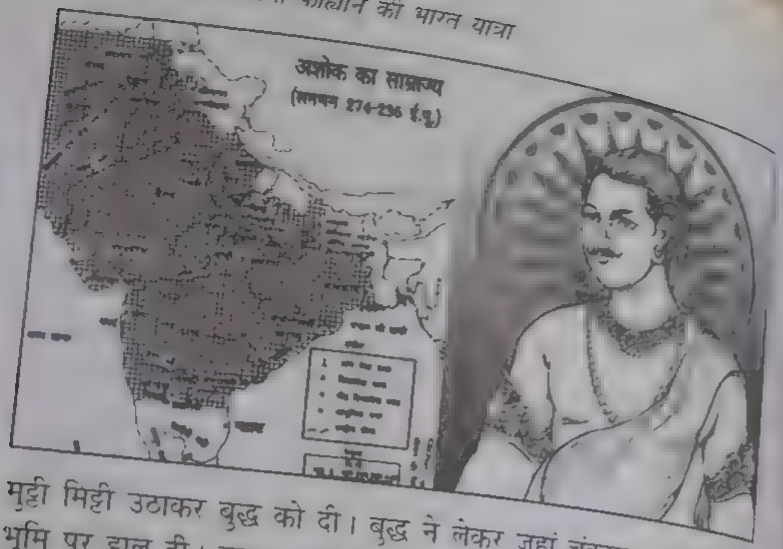


मुट्ठी मिट्टी उठाकर बुद्ध को दी। बुद्ध ने लेकर जहां चंक्रमण करते थे, उस भूमि पर डाल दी। इसका फल मिला, लोहचक्र का राजा जंबुदीप का राजा बन गया। राजा एक बार जंबुदीप में यात्रा पर था। उसने लोहचक्रवाल में दो पर्वतों के मध्य नरक देखा जो पापियों की यातना का स्थान था। वधुओं और अमात्यों से पूछा यह क्या है? जवाब मिला असुरराज यमराज का पापियों की यातना (का स्थान)। राजा ने मन में सोचा असुरराज यमराज ने तो पापियों की यातना के लिए नरक बनाए, मैं मानवाधिप पापियों की यातना के लिए नरक न बनवाऊं। मंत्रियों से कहा कि किसमें मैं नरक बनवाऊं। किसे पापियों की यातना का अध्यक्ष (मुखिया) बनवाऊं। मंत्रियों ने जवाब दिया "केवल अति चांडाल (दस्यु) मनुष्य इसे निर्माण कर सकता है।" राजा ने मंत्रियों को भेजा कि चांडालकर्मा मनुष्य खोजो। उन्होंने एक जलाशय के तट पर एक मनुष्य को देखा जो विशाल, प्रचंड, कृष्ण वर्ण, कपिश केश, और बिडालाक्ष था, पैर से मछली फंसाता, मुंह से पशु-पक्षियों को बुलाता और पशु-पक्षियों के आते ही प्रहार करता और मारता कि एक भी न बचते। इस मनुष्य को पकड़कर वे राजा के समीप ले गए। राजा ने गुप्त रूप से आज्ञा दी। तू चारों ओर से स्थान पर ऊंची प्राचीर बनवा, भीतर विभिन्न प्रकार के फूल-फल लगा, सुंदर घाटवाला सरोवर बनवा सर्वतो भावेन, मनोहर और चित्ताकर्षक कि लोग चाव से देखने दौड़ें, कपाट (दरवाजा) सुदृढ़ बनवाना, लोग जाएं तो चट पकड़ लेना, भांति-भांति की यातनाएं पापियों को देना, अवरुद्ध करना, बाहर कदापि निकलने न देना।

## 33

## कुक्कुटपाद

इस स्थान से दक्षिण में 3 ली [illegible] पर [illegible] पर्वत पर पहुँचे। [illegible] महाकाश्यप [illegible] इस पर्वत में [illegible] है। [illegible] प्रवेश के स्थान पर [illegible] है। [illegible] ने हाथ [illegible] थे। आसपास के [illegible] में [illegible] मिट्टी लगाकर [illegible] ( [illegible] ) [illegible] हैं। [illegible] आसपास के [illegible] पूजा आकर करते हैं। [illegible] के पास [illegible] हैं, [illegible] करते हैं, [illegible] समाधान करते हैं और [illegible] हो जाते हैं।

इस पर्वत में [illegible] बहुत [illegible] सिंह, [illegible] है। बिना सावधानी [illegible] नहीं है।

## 34

## वाराणसी

'फाह्यान' 'पाटलिपुत्र' की ओर फिरे। गंगा के किनारे किनारे [illegible] जाकर 10 योजन पर एक बौद्ध विहार पहुँचा है। नाम है [illegible]। भगवान बुद्ध इस स्थान पर रहे थे। [illegible]

गंगा के किनारे किनारे पश्चिम में 12 योजन चलकर [illegible] काशी नगर में पहुँचा। नगर के पश्चिम [illegible] में 10 ली पर ऋषिपतन [illegible]

1. [illegible] कनिंघम ने [illegible] है [illegible] पर [illegible] है [illegible] मील [illegible] पर [illegible] कुक्कुटपाद है पर [illegible] ने [illegible] 1909 ई. पृ. 81-83 [illegible] में यह [illegible] ही गुरुपाद है। [illegible] 19, 20 मील पर [illegible] है। [illegible] ने इस [illegible] में [illegible] सात मील पर [illegible]

2. अनुवादकों ने इसे [illegible] लिखा है।

3. यह वर्तमान [illegible] नगर [illegible] है।



[illegible] के पास बसते थे। [illegible] भगवान [illegible] "[illegible]" [illegible] इसी से इस स्थान का [illegible] नाम पड़ा। [illegible] प्राप्त होने के पीछे लोगों ने इस स्थान पर विहार [illegible]।

भगवान बुद्ध ने चाहा कि [illegible] पंचवर्गीय [illegible] परम्परा करने लगे, [illegible] ने [illegible] एक दाल और चावल खाता, [illegible] काया, वाणी और मन से [illegible] पंचवर्गीय भिक्षु [illegible] पर भगवान बुद्ध ने [illegible] 20 [illegible] 30 पग पर [illegible]

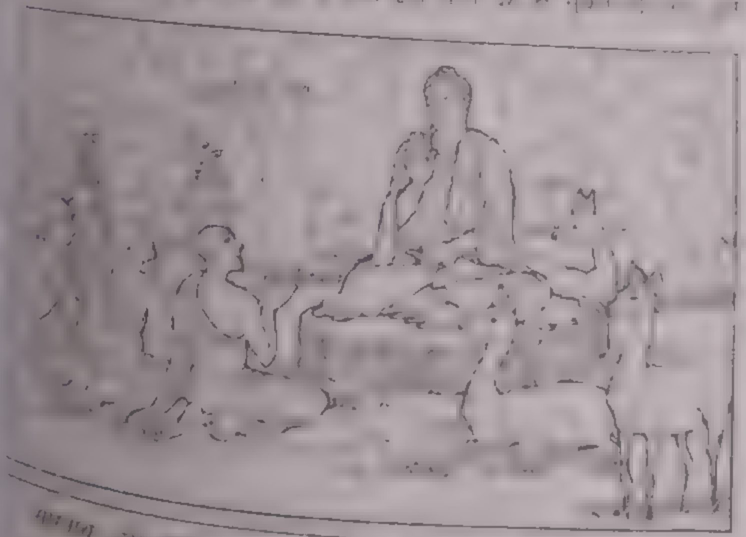

[illegible] वाराणसी [illegible] नगर [illegible] था। यह स्थान [illegible] में [illegible] है।

## 35

### दक्षिण

## 36

### पाटलिपुत्र में खोज और विद्याध्ययन

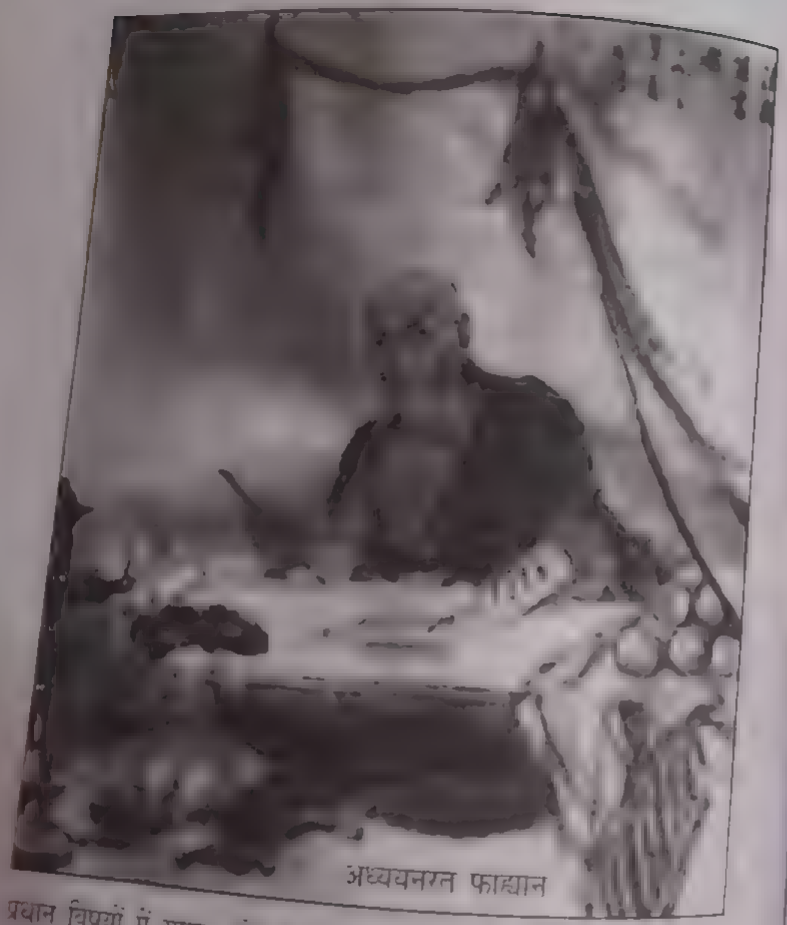

अध्ययनरत फाह्यान

प्रधान विषयों में समता और छोटे-छोटे विषयों में मतभेद रखते थे, जैसे, एक का अर्थ है तो दूसरे की इति।

एक और निकाय का विनय मिला, जो लगभग 700 गाथाओं का था। यह सर्वास्तिवाद निकाय का विनय था। चीन देश के भिक्खुसंघ में इसी का प्रचार था। इसकी भी शिक्षा गुरु परंपरा के अनुसार मौखिक ही चली आती थी, लिखित न थी। यहीं के इसी संघ में 'संयुक्त धर्म हृदय' लगभग 6,000 गाथा का मिला। एक और निकाय का सूत्र 2,500 गाथा का, परिनिर्वाण वैपुल्य सूत्र का एक अध्याय, 500 गाथा का—और महासांघिक अभिधम्म मिला।

*Eighteen Collection तथा प्रोफेसर समद्दार ने अष्टादश संप्रदाय लिखा है*



अतः फाह्यान यहां 3 वर्ष रहा। संस्कृत भाषा और संस्कृत ग्रंथों का अभ्यास करता और विनयपिटक लिखता रहा। [illegible] में पहुंचा तो उसने श्रमणों को देखा। संघ का उत्कृष्ट आचार-व्यवहार और बात-बात में विनय का अनुसरण मिला। [illegible] भूमि के भिक्खुसंघ के अधूरे और विच्छिन्न विनय का स्मरण आया। उसने शपथ के साथ कहा, "अब से जब तो बुद्ध न हो [illegible] न जन्म लूं।" फिर वह यहीं रह गया और [illegible] न लौटा। फाह्यान का तो मुख्य उद्देश्य था समग्र विनय ले जाकर [illegible] प्रचार करना। निदान वह अकेला लौटा।

## 37

## चंपा और ताम्रलिप्ति–सिंहल यात्रा

गंगा के किनारे पूर्व दिशा में 18 योजन उतरकर [illegible] का महाजनपद पड़ा। भगवान बुद्ध का विहार चंक्रमण स्थान पर है। सभी बुद्धों के बैठने के स्थान पर स्तूप बने हैं। वहां श्रमण रहते मिले। इससे और पूर्व चलकर 50 योजन के अनुमान चलने पर ताम्रलिप्ति जनपद में पहुंचा। यहां कई बंदरगाह हैं। इस जनपद में 24 संघाराम हैं। श्रमण संघ में रहते हैं। बुद्ध धम्म का भी अच्छा प्रचार है। फाह्यान यहां दो वर्ष रहा। उसने सूत्रों को लिखा, मूर्तियों के चित्र बनाए।

फिर व्यापारियों के एक बृहत्पोत विशाल जलयान पर चढ़ा, समुद्र में दक्षिण-पश्चिम की ओर चला। जाड़े का आरंभ, वायु अनुकूल। 14 दिन चलकर सिंहल जनपद में पहुंचा। जनपद के किनारे लोगों ने कहा कि 700 योजन के लगभग आए।

यह जनपद एक विशाल द्वीप है। पूर्व-पश्चिम 50 योजन, दक्षिण-उत्तर 30 योजन। दाएं-बाएं छोटे-छोटे द्वीप हैं। 100 के लगभग, अंतर 10 ली से 200 ली तक, पर सब महाद्वीप के अधीन। अनेक में विविध शुद्ध और चमकीले मणि मुक्ता निकलते हैं। एक में मुक्ता मणि निकलता है। यह 10 ली

1. *यह भागलपुर जिले का एक विभाग है।*
2. *इसे तमलुक कहते हैं, जो बंगाल के मेदिनीपुर जिले में है।*

वर्ग भूमि का होगा। राजा पहरे और रक्षा के लिए पुरुष नियत करता है पानेवालों से मालियों के 10 भाग में से 3 ले लेते हैं।

## 38

## सिंहल पर्व

इस जनपद में पहले मनुष्य नहीं बसते थे। यक्ष और नाग (नाग जाति के बहादुर और शूरवीर लोग) रहते थे। सभी जनपद के व्यापारी वाणिज्य करते थे। वाणिज्य के समय यक्ष संदेह में दिखाई नहीं पड़ते थे। बहुमूल्य पदार्थों से मूल्य के चिट लगा रख देते थे। व्यापारी जन मूल्य के अनुसार क्रय (खरीद) करते और माल ले जाते थे।

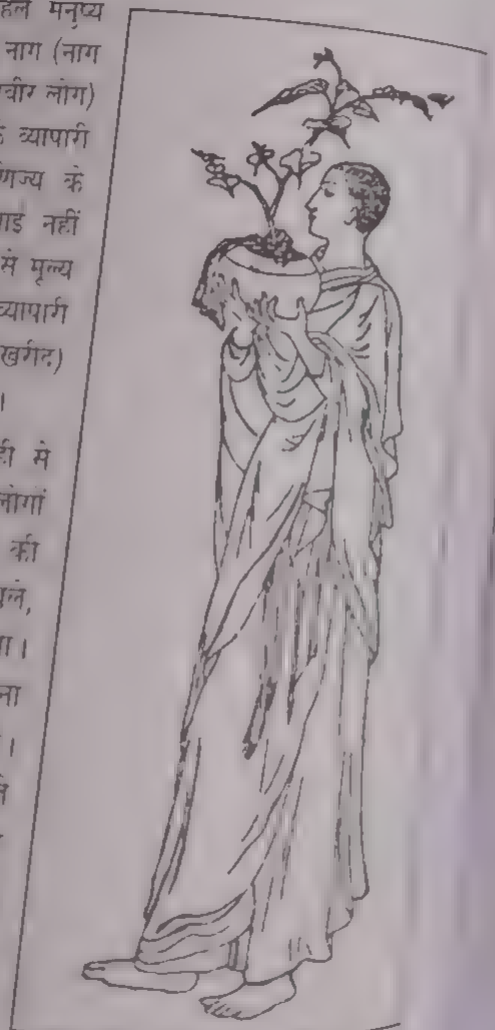

सधर्मसेना बोधिवृक्ष शाखा के साथ

व्यापारियों की आवाजाही से लौटने पर सब जनपद के लोगों ने इस भूमि की मनोहरता की चर्चा सुनी। सब दल के दल चले, बसने लगे, महाजनपद हो गया। यह जनपद साम्य और सुहावना है। जाड़े-गर्मी में अंतर नहीं है। वनस्पति और वृक्ष सतत लहलहाते रहते हैं। कृषि लोगों की इच्छा पर (तब चाहें होती है, कोई ऋतु नियम नहीं है।

भगवान बुद्ध इस जनपद में आए। बहुत नागों को (उपदेश से)

1 भगवान बुद्ध के सिंहल जाने का प्रमाण सिवाय इसके और नहीं है कि सिंहल के महावंश ग्रंथ में इसका उल्लेख है।



बचाना चाहा। अपने अभिमत [illegible] बल से उन्होंने एक ओर नगर के उत्तर ओर दूसरे पर एक पर्वत के ऊपर नगर। [illegible] 7-8 योजन का अंतर था। राजा ने नगर के उत्तर के पर्वत पर एक बृहत् धर्म स्तूप बनवाया, जो 100 हाथ ऊंचा सारे नगर [illegible] सुशोभन करता है। उसने धर्म स्तूप के समीप एक संघाराम का बनवाकर [illegible] नाम अभयगिरि है, यहां 5,000 श्रमण निवास करते हैं। यह संघाराम बड़ा सा एक महल भी है—उस पर सात-मंजिले का खजाना है। [illegible] है—मनोरम लगता है। बुद्ध के दांत [illegible] है—यह दांत—सफेद सतरंगा से [illegible] दाहिने हाथ में एक [illegible] है। फाह्यान ने [illegible] हो गया था। जो दान करने [illegible] के मनुष्य। पर्वत, नदी, वनस्पति [illegible] सब अलग, सोने अथवा [illegible] बनाकर [illegible] बाजार। अचानक नीलमणि की मूर्ति [illegible] का पंखा चढ़ा रहा था। [illegible]

इस जनपद के एक प्राचीन राजा ने, बुद्ध देव को भजकर चल पत्र वाले वृक्ष की,[1] की डाली [illegible] भगवान बुद्ध के मस्तक के [illegible] लगवाई। वह लगकर 200 हाथ का ऊंचा वृक्ष हो गई है। [illegible] इस दक्षिण को झुक गया था, राजा ने गिरने के भय से आठ-नौ [illegible] लोहे का एक लकड़ी का तख्ता उठाना वृक्ष में लगवा दिया। वृक्ष [illegible] तख्ते के स्थान में भीतर जमने लगा और लकड़ी को बेध कर भीतर [illegible] घुसकर भूमि में घुस गया और उसने जड़ पकड़ ली, ऊपर 4 बित्ता मोटा [illegible] गया हो गया, तख्ता के भीतर फल है पर बाहर से [illegible] लगा न [illegible] नहीं किया है। वृक्ष के नीचे एक चिहार बना है, भीतर बुद्ध स्थापित हैं। [illegible] गृहस्थ-गृहत्यागी श्रद्धा से अभिश्रवण दर्शन करने रहते हैं। नगर में भगवान बुद्ध के दांत का एक चिहार है। सब सप्तरत्नमय भूषित है।

राजा उत्कृष्ट आचार का पालन करता है। नगर के आसपास अनेक में [illegible] पर श्रद्धा और विश्वास का भाव भी अधिक है। जनपद [illegible]

1 लंका महावंश में सप्त [illegible] है पर मूल में संदेहास्पद है।

2. महावंश में लिखा है कि अशोक ने बोधिवृक्ष की शाखा भेजी थी

3. अथवा दरार सा फट गया है।

प्रतिष्ठित होने से, इति, दुर्भिक्ष, विप्लव व अव्यवस्था नहीं हुए है। भिक्षुसंघ के कोश में अनेक बहुमूल्य रत्न और अमूल्य मणि हैं। एक राजा भिक्षु-संघ के कोश में बैठा और उसने सब देखा। मणि-मुक्ता को देख उसके मन में लोभ जागृत हुआ उसने बलपूर्वक अपहरण करना चाहा, तीन दिन उपरान्त उसे चैन हुआ, भिक्षुसंघ में जाकर उसने सिर नीचा किया, अपने मानसिक पाप पर पश्चात्ताप किया, सब स्पष्ट कह भिक्षुओं से विनती की यह विधान स्थापित करवाया कि अब से फिर आगे राजा को कोश में हाथ और देखने पर प्रतिबंध हो, भिक्खु भी चालीस वर्ष भिक्षु संघ में न रहे हो, वे अंदर प्रवेश न पाए।

इस नगर में अनेक वैश्य श्रेष्ठ और साधा[1] व्यापारी बसे है। इन व्यापारियों के घर सुंदर और भव्य हैं। गली अतरे साफ सथरे रहते है सड़कों के चतुष्पथ पर धर्मोपदेश के लिए स्थान नियोजित है। महीने में अष्टमी चतुर्दशी और पचदशी के दिन आसन बिछता है, उन्हीं गड्ढे लगते है, गृहस्थ और गृहत्यागी चारों ओर के एकत्रित होते है और धर्म चर्चा सुनते है। इस जनपद के लोग कहते है कि यहा 60,000 भिक्षु रहते हैं जिन्हें सघ के भंडार घर से भोजन मिलता है। राजा का भी नगर में मठ है जिसमें लगभग-छह हजार लोगों को और धर्माथ मिलता है। सघ के भंडार में कमी होती है तो वहा 'भिक्षुपात्र' उठाकर जाते है, जितना आता है उसे खा पर जाने पर लौटते हैं।

भगवान बुद्ध का दान संवत तीसरे महीने के मध्य में निकलता है निकलने से 10 दिन पहले राजा एक भव्य अमारी (हौदा) बड़े हाथी पर रखवाता है, एक अच्छे वक्ता को चुनकर राज्य के वस्त्र आभूषण पहना उसे हाथी पर चढाता है और उसके के साथ यह घोषणा करवाता है 'बोधिसत्व ने तीन असंख्य कल्पों में पुण्योपार्जन किया, अपनी देह का न बचाया जनपद नगर में स्त्री, पुत्र दिया, आख निकाल दूसरे को (दी), कपाल के बदले मास काटकर दिया, अपना सिर काटकर दान किया, शरीर भूखे बाघिन को खुश के दिया मस्तिष्क और पेजा (देने) में क्षोभ न किया। इस प्रकार

1 अरब देश के व्यापारी
2 ब्राह्मण और अभावग्रस्त
3 जब परलोक में मातृ लोग पड़ोसे के लिए मटका लेकर भरवाने के लिए गाव गाव फेरा करते है।



अनेक भांति के क्लेश प्राणियों के लिए करता रहे। पर वह बुद्ध हो जाने तक में 15 वर्ष तक धर्म का उपदेश किया जिससे उन्होंने प्राणी को कल्याण, अशनों को शांति दी और दुखों को पार लगाकर सब प्रकार से उन्हें संपादन कर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। परिनिर्वाण के उपरांत वे अनुत्तरों महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। यह पूर्ण उपलब्धि थी। इसके अब से 10 दिन बाद भगवान बुद्ध का देह निकलकर [illegible] नगर में आएगा, जनपद के सब भिक्षु और गृहस्थ उस अंतिम के अंतिमयात्रा मार्ग साफ सुथरा रखें गली अतरे साफ करें और पूजा के लिए सामग्र करें।

यह घोषणा हो जाने पर राजा के नियोग से पाच सौ [illegible] के 500 शिष्यों के रूप चुनते हैं, तो संघ पर [illegible] महान बनते हैं, कहीं साम चुनते हैं [illegible] बुद्ध [illegible] चुनते है। सभी छोटाबड़ा के रंग समान, चलने [illegible] है। [illegible] में जीवन समान जान पड़ते है। फिर भगवान बुद्ध का देह निकलता है सड़क के बीच से होकर गुजरता है, सब ओर से [illegible] चलते है, अभिवादन विचार में पहनता है। भगवान बुद्ध के संघ में भिक्षु और गृहस्थ लोग एकत्र रहते है। वे चुप तनाव, शोर प्रचलित करते हैं विविध प्रकार से उच्चार करते है जो दिन रात बंद नहीं होता। 90 दिन पूर्व होने पर नगर के बाहर के विहार में उपासथ दिवस होने पर पर खुलता है और यथाविधि आदर सत्कार होता है।[1] 'अभयागार' विहार में 40 ली पर एक पर्वत है।

1 बौद्धक कथाओं में अनेकों भगवान बुद्ध ने कई बार जन्म लिया था, इस बार मृग का, और चार बार घोड़े का जन्म धारण किया था।
2 अब भगवान बुद्ध का जेतवन 'सावत्थी' नामक शहर में है। यहा एक विहार के भीतर यह स्थित है। विहार एक नद के किनारे है, जिस के द्वार पर यह श्लोक लिखा है –

**सर्वज्ञ वक्त्र सरसीरुहराजहंसं**
**कुन्देन्दु सुन्दर रुचिं सुरवृन्द वंद्यम्।**
**सहर्मचक्रमहजं जनपारिजातं**
**श्रीदंतधातुममलं प्रणमामि भक्तया।**

यानि विहार में एक चटाकार स्वर्ण सपुट में [illegible] पर रखा है, सपुट में भी [illegible] विहार में एक चटाकार स्वर्ण सपुट में [illegible] पर रखा है, सपुट में भी उसी तरह सपुट है और बीच के सपुट में धातु है।

पर्वत में एक विहार है, जिसका नाम 'चत्य' है। उसमें लगभग 2,000 भिक्खु होंगे। भिक्खुओं में एक बड़ा धार्मिक श्रमण है, नाम 'धर्मगुप्त'। [illegible] के लोग उसे बड़े आदर से देखते हैं। एक पत्थर की गुफा में वह [illegible] वर्ष से रहता है। वह इतनी दया दिखाता है कि साँप और चूहे एक [illegible] उस एक ही गुफा में रहते और परस्पर कुछ हानि नहीं पहुँचाते हैं।

## 39

## एक अर्हत का दाह-संस्कार

नगर से दक्षिण 7 ली पर एक विहार है, नाम महाविहार। [illegible] औसतन 300 भिक्खु बसते हैं, वहाँ एक बड़ा धर्मनिष्ठ श्रमण [illegible] था, जो पवित्र और विशुद्धचारी था। जनपद के लोग उसे [illegible] थे। जब उसका अंत काल निकट आया तो राजा जानने आया। [illegible] यथाधर्म सभी भिक्खुओं से पूछा कि क्या भिक्खु पूर्णतया [illegible] चुका है? उन्होंने नियम मानकर जवाब दिया, हाँ, अर्हत पद प्राप्त है। अनावसान पर राजा ने सूत्र विनयानुमोदित अर्हत के लिए, [illegible] (समाधि करवाकर) विहार से पूर्व में चार-पाँच ली पर सुंदर और विशाल चिता बनवाई। 30 हाथ की लंबी चौड़ी और उतनी ही ऊँची। ऊपर से चंदन मुसब्बर और सब सुगंध काष्ठ चुनवाए, चारों ओर से [illegible] के लिए आरोह बनवाया। फिर सुंदर श्वेत रेशम की भाँति [illegible] वस्त्र से ऊपर से बार बार लपेटा, फिर एक बड़ा रथ बना, जैसे समाधि शव ले जाने की गाड़ी[1] पर नाग और मछली बनी थी।

दाह के समय राजा और जनपद की प्रजा सब चारों ओर से झुंड की झुंड आकर एकत्रित हुई और फूल तथा धूप चढ़ाती, अर्थी के साथ साथ समाधि स्थान[2] की ओर चली। वहाँ राजा ने फूल और गंध से पूजा की। पूजा हो चुकी तो अरथी उठाकर चिता पर रखी गई। तुलसी का तेल ऊपर चारों ओर डाला गया और अग्नि दी गई। आग जलने लगी, फिर प्रत्येक

1. चीन देश में शव को गाड़ी पर लादकर समाधि स्थान पर ले जाते हैं- उस गाड़ी पर नाग और मछली आदि के चित्र बने रहते हैं।
2. चीन देश में शव को समाधि देते हैं। इसलिए दाहस्थान की जगह मूल में समाधि स्थान, समाधि आदि लिखा है।

[illegible] ने इस जनपद में एक [illegible] लेकर सूत्र की व्याख्या करते सुना कि [illegible] भगवान बुद्ध का भिक्खापात्र पहले [illegible] में था, अब गांधार में है। इतने [illegible] जनपद में जाएगा, इतने सौ वर्ष में [illegible] इतने सौ वर्ष पर [illegible] इतने सौ वर्ष पर [illegible] इतने सौ वर्ष [illegible] सिंहल जनपद में जाएगा, इतने सौ वर्ष बाद [illegible] में जाएगा। फिर वह तुषित लोक स्वर्ग पर आरोहण करेगा। [illegible] कहेगा– "अहा, शाक्यमुनि बुद्ध का भिक्खापात्र आ गया।" [illegible] सभी देवताओं सहित फूल और गंध से पूजा करेंगे, सात दिन पश्चात वह जम्बूद्वीप को लौटेगा, सिंधुनागराज उसे लेकर नागलोक में प्रवेश करेगा। [illegible] के बोधि-प्राप्त-काल में यह फिर चार भाग अलग [illegible] 'अन्न' पर्वत पर जहाँ से आया था, लौटेगा। मैत्रेय जब बोधि प्राप्त होंगे तो चारों [illegible] फिर मन में बुद्ध की चिंता (चिंतन) करेंगे। यही पहले के बुद्धों का नियम है। भद्र कल्प के सहस्र बुद्धों का यहाँ एक भिक्खापात्र है। [illegible] बुद्ध धम्म के भिक्खापात्र जाते ही बुद्ध-धम्म भी क्रमशः लोप हो जाएगा। [illegible]

1. फाहियान ने व्याख्या में ठीक संख्या सुनी थी, पर भूल गया - [illegible]
2. शियनयान पवनमाला के मूल में [illegible]
3. भगवान बुद्ध का भिक्खापात्र चार भिक्खापात्रों से [illegible]

लोप होने पर मनुष्यों की आयु क्षीण हो जाएगी, अंत में 5 वर्ष की होगी। 5 वर्ष की होने पर चावल, घी, तेल सब लय हो जाएगी, निवासी परम दस्यु होंगे, वनस्पति वृक्ष जिसे छुएंगे तलवार लाठी हो जाएंगे, परस्पर मारकाट मचवाएंगे, उनमें धर्मवाले सहवास छोड़ पर्वत में जाएंगे, दस्यु जब परस्पर नाशवान हो जाएंगे जब लौटेंगे, आकर परस्पर कहेंगे, पूर्व के लोग परमायु होते थे, दस्युकर्म करने और परम अधर्मी बन जाने से हमारी आयु क्षीण हो गई है, घटते-घटते 5 वर्ष की रह गई है। हम सभी मिलकर सत्कर्म करें, करुणा और दया का भाव मन में उत्पन्न करें, शुभ कर्मों का प्रयत्नपूर्वक अनुष्ठान करें। जब वे इस प्रकार सत्कर्म का आचरण करने लगेंगे, आयु द्विगुण बढ़ती जाएगी और अंततः 80,000 वर्ष की हो जाएगी। मैत्रेय जब लोक में आएंगे और धर्मचक्र प्रवर्तन करने लगेंगे, जो सब से प्रथम वे शाक्य के शेष धर्मानुयाइयों में से उन्हें अपना शिष्य करेंगे तो प्रव्रज्या लेकर त्रिरत्न, पंचोपादान पांच उपादान ये हैं--1. रूप, 2. वेदना, 3. संज्ञा, 4. संस्कार और 5. विज्ञान अष्टांग धर्म[2] और ग्रहण कर त्रिरत्न की पूजा करेंगे, फिर द्वितीय और तृतीय चार में पूर्व के सुकर्मियों को दीक्षा देंगे।

फाह्यान ने इसे सूत्र समझकर लिखना चाहा पर उस व्यक्ति ने कहा कि सूत्र नहीं है, मैं अपने मन से व्याख्यान करता हूं।

## 40

## यात्रा का अंत

फाह्यान इस जनपद में दो वर्ष रहा और उसे 'महीशासक' विनयपिटक के दीघनिकाय, संयुक्तनिकाय और 'संयुक्त संचय पिटक' की प्रति मिली। सब हान देश में अज्ञात थे। इन संस्कृत प्रतियों को पाकर वह एक व्यापारी के बड़े पोत पर चढ़ा। उसमें 200 से ज्यादा व्यक्तियों के पीछे एक छोटी नौका समुद्रयात्रा की क्षति से रक्षार्थ बड़े पोत से बंधी हुई थी। सानुकूल वायु थी। पूर्व दिशा में जाकर 3 दिन पर प्रचंड तूफान का सामना करना पड़ा, पोत में छेद हो गया, पानी भरने लगा, व्यापारी छोटी नाव में जाना

1. बुद्ध, 2. धम्म, 3. संघ
सम्यक्कर्मांत, सम्यक्दृष्टि, सम्यकसंकल्प, सम्यकवाचा, सम्यकाजीव, सम्यकव्यायाम, सम्यकस्मृति और सम्यकसमाधि



[illegible] थे, छोटी नाव के लोगों ने बहुत से लोगों के चढ़ने के डर से रस्सा काट दी, व्यापारी बड़े भयभीत, जान का लाखम जान पड़ा, वे घबराए कि पोत में पानी न भर जाए, भारी भारी बोझ 'असबाब' पानी में फेंकने लगे। फाह्यान ने भी जलपात्र[1] कुंडका और चीजों को समुद्र में फेंक दिया, वह डर गया कि व्यापारी कहीं सूत्रों और चित्रों को न फेंक दें। उसने मन में अवलोकितेश्वर का ध्यान किया, हान देश के भिक्खुसंघ को प्राण अर्पण किए, उसने कहा मैंने धर्म को ढूंढने के लिए दूर देश की यात्रा की है, मुझे अपना तेज और प्रताप देकर लौटाकर अपने स्थान पर पहुंचाओ।

इस प्रकार तूफान रात दिन 13 दिन तक रहा। एक द्वीप के किनारे लगे, बड़ा थमने के पीछे पानी भरने के छेद का स्थान देखा गया, वह भरा गया फिर आगे बढ़े, समुद्र के मध्य अनेक डाकू रहते हैं, उनसे मिलने पर बचकर नहीं जा सकते, यह समुद्र विस्तृत है, और छोर नहीं, पूर्व पश्चिम का ज्ञान नहीं, केवल सूर्य-चंद्रमा और तारों के देखने से ठीक मार्ग पर चलते हैं, आधी पानी में वायु द्वारा ले जाने पर जाते हैं निश्चित मार्ग नहीं, रात की अंधियारी में केवल ऊंची लहरें परस्पर थपेड़े खाती दिखाई पड़ती हैं, अग्निवर्ण ज्वाला निकली है, साथ ही साथ पानी पर बड़े बड़े कछुए और अन्य निवासी जंतु निकलते व दिखाई पड़ते हैं। व्यापारी लोग भयभीत थे, जानते नहीं कि किधर जा रहे हैं, समुद्र गंभीर, कोई थाह नहीं। लंगर डालने और ठहरने का ठौर नहीं। आकाश खुल गया तो पूर्व पश्चिम सूझने लगा, फिर लौटे, ठीक राह पर चले, कहीं गुप्त चट्टान पड़ी तो बचने का उपाय नहीं।

इस प्रकार 90 दिन से अधिक बीते, एक जनपद में पहुंचे, नाम जावा। इस जनपद में भारतीय धर्म के विभिन्न संप्रदायों का प्रचार था, बौद्ध धम्म की कहीं खास चर्चा नहीं थी। इस जनपद में 5 महीने ठहरे, फिर व्यापारियों के एक वृहत पोत पर चढ़े -200 और यात्री भी थे, 50 दिन का सामग्री ले चौथे मास के 16वें दिन चले।

फाह्यान ने इस पोत पर ही वर्षा (वर्षावास) व्यतीत की। पूर्वोत्तर 'क्वांग चाव' (चीन का एक बंदरगाह) जा रहे थे। महीना, दिन बीतने पर रात्रि के दो पहर बीतते-बीतते काली आंधी आई, पानी बरसने लगा, व्यापारी यात्री

1. भिक्खुओं के लिए दो जलपात्रों का विधान है, कुंडा और कलसा का लोटा और गलास व गगरा, लोटा।

[illegible] फाह्यान ने भी [illegible] और [illegible] देश में भ्रमण [illegible] और उनके प्रबल प्रताप से [illegible]। [illegible] कहने लगे कि इस श्रमण के साथ [illegible] यह महासंकट पड़ा है, इस भिक्षु को [illegible] द्वीप के किनारे छोड़ दो, एक मनुष्य के लिए हम [illegible]। फाह्यान के साथी एक सहृदय जन ने कहा, इस भिक्षु को [illegible], नहीं तो मुझे भी उतार दो, नहीं तो मुझे मार डालो, [illegible] इस भिक्षु को [illegible] तो हान देश में पहुंचूंगा, तो राजा से [illegible]। हान देश का राजा भी दृढ़ बौद्ध धर्मानुयायी है, [illegible] का बहुत सम्मान करता है। यह सुन सब व्यापारी [illegible] के [illegible] का साहस न पड़ा।

[illegible] में नितांत अंधकार छाया था, समुद्र में [illegible] थे, 70 दिन से अधिक समय [illegible] थे, खाना-पानी चुक गया, समुद्र के खारे पानी से [illegible], अच्छा पानी बांट लिया, दो (दो) पाइंट प्रति मनुष्य [illegible] चुक गया। व्यापारी लोग सोच-विचार कर [illegible] के [illegible] में 50 दिन में 'कांगचाव' पहुंचना [illegible], [illegible] दिन [illegible]। पश्चिमोत्तर किनारे की ओर से चले, [illegible] दिन [illegible] 12 दिन में [illegible] प्रदेश की सीमा पर लाव पर्वत के दक्षिण [illegible] पहुंचकर अच्छा पानी और शाक मिले, अनेक [illegible] दिन चिन्ताग्रस्त रहे, अचानक इस किनारे पर पहुंचे, [illegible] जान गए कि यह हान देश ही है। फिर न [illegible] और न कुछ चिह्न (जाने-आने का), जान नहीं पड़ता [illegible] अभी 'कांगचाव' नहीं आए, कोई कहता [illegible] जान नहीं पड़ता था। निदान, एक छोटी नाव में [illegible] कोई आदमी दिखाई पड़े तो इस स्थान को पूछताछ [illegible] साथ लेकर आए, फाह्यान को पूछने के लिए, बुलाया, फाह्यान ने [illegible] दिया, फिर पूछा तुम कौन लोग हो। उन्होंने जवाब

[illegible]

---

1. [illegible] पर्वत के किनारे "शानतुंग" में लगी थी। यह स्थान [illegible] [illegible] है। अब यह [illegible] प्रदेश के 'फिगहन' में सम्मिलित है।



[illegible] भगवान बुद्ध के [illegible] थे बनाने [illegible] भगवान बुद्ध की पहचान के [illegible] कौन-सा जनपद है उन्होंने [illegible] की सीमा है, जो [illegible] प्रसन्न हो गए। [illegible] वागचाव के प्रशासनिक [illegible]।

[illegible] पक्का [illegible] श्रमण सूत्रों और चित्रों को [illegible] को साथ ले वह [illegible] सूत्रों और चित्रों को ले [illegible] में यांगचाव की ओर [illegible] और एक गर्मी भर के लिए [illegible] सब आचार्यों के वियोग में [illegible] कि काम आवश्यक है [illegible] आचार्यों से मिले सूत्रों और विनय [illegible]।

'फाह्यान' 'चांगगान' से चला, 6 वर्ष में [illegible] फिरा, लौटकर 3 वर्ष में [illegible] भ्रमण (घूमना) किया था, [illegible] सदाचार और धर्म के प्रभाव से प्रकृति का [illegible] था। उसने यह विचारा कि आचार्य गण ने [illegible] होगा। वह अपने तुच्छ जीवन की परवाह न कर [illegible] और कष्ट सहन किया। संयोग से [illegible] बचकर आ गया। अतः यात्रा का [illegible] कि उसने क्या क्या सुना और देखा।

---

1. "[illegible]" [illegible] प्रान्त का [illegible] स्थान [illegible]

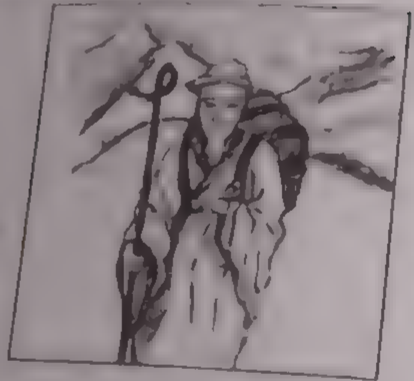

## उपसंहार

[illegible] के [illegible] काल के 12वें वर्ष में [illegible] में [illegible] हुआ। [illegible] में [illegible] जीवन पर [illegible] से [illegible] हुई। [illegible] में [illegible]। जब जब [illegible] हुई [illegible] प्रश्न [illegible] और सजीव था, [illegible] सत्य सत्य कहता था। [illegible] से [illegible] तक) [illegible] गया। [illegible] की ओर देखता हूँ तो मेरा हृदय नहीं थमता, [illegible] जाता है। विपत्तियों का सामना किया, [illegible] एक उद्देश्य मेरा था सिवाय [illegible] और [illegible] के और दूसरा ध्यान नहीं था, [illegible] के स्थान में [illegible] गया कि [illegible] (अंश) में एक अंश भी सिद्ध हो। [illegible] पर [illegible] प्रभाव हुआ। मैंने तो जान लिया कि [illegible] में आज [illegible]। जब से इस [illegible] धर्म का [illegible] के देश में प्रचार हुआ। [illegible] कोई भी [illegible] और धर्म का जिज्ञासु आचार्य ('हियान' शब्द [illegible] ने '[illegible]' लिखा है), पर हियान आचार्य को कहते हैं। [illegible] नहीं [illegible]। अतः मैं तो जान गया कि सत्य के प्रभाव को कोई रोक नहीं सकता। [illegible] जितना बड़ा समुद्र हो, वह पार ही कर जाता है। [illegible], [illegible] चाहे, पूर्ण करने में चूकता नहीं। ऐसे कार्यों का संपादन, [illegible] को [illegible] और भूले को स्मरण करने से होता है।

**॥ भवतु सब्बमंगलं ॥**

परिशिष्ट

## बोधिनी

***अंगुलिमाल*** यह श्रावस्ती के महाराजा प्रसेनजित (पसेनदि) के पुरोहित का पुत्र था। यह प्रचंड नास्तिक और क्रूर था। यह किसी नास्तिक प्रयोग के लिए तर्जनी (अंगुली) को काटकर माला बनाकर पहना करता था। इसी कारण लोग इसे अंगुलिमाल कहते थे। श्रावस्ती में भगवान बुद्ध भिक्षा के लिए जाते थे। अंगुलिमाल ने उन्हें पुकारा और कहा 'भिक्खु ठहर जा'। भगवान बुद्ध ने कहा 'मैं तो ठहरा हुआ हूँ' और यह कहते हुए आगे बढ़ते गए। अंगुलिमाल ने कहा, भिक्खु आप तो चले जा रहे हैं और मिथ्या कहते हैं कि मैं ठहरा हुआ हूँ। भगवान बुद्ध ने कहा हे बालक! मैं सत्य कहता हूँ, संसार में मैं ही एक स्थिर (ठहरा हुआ) हूँ और सब चल रहे हैं। यह अध्यात्मपूर्ण वाक्य सुन अंगुलिमाल को ज्ञान हो गया। वह इस ज्ञान से अर्हत पद प्राप्त हुआ।

***अम्बपाली (आम्रमाली)*** यह एक गणिका थी। इसे आम्रपाली और आम्रदारिका भी कहते थे। इसका जन्म आम के वृक्ष के नीचे हुआ था और दरिद्रतावश यह आम खाकर पली थी, इसीलिए इसका नाम अम्बपाली पड़ गया था। यह परम रूपवती और कला कौशल संपन्न थी। महाराज बिम्बिसार से इसको अधिक प्रेम था। यह बहुत दिनों तक राजगृह में रही थी और महाराज बिम्बिसार के संयोग से इसे एक पुत्र भी हुआ था, जिसका नाम विमल कौण्डिन्य था। अम्बपाली कभी वैशाली में और कभी राजगृह में रहती थी। दोनों राजधानियों में इसके भव्य भवन और सुंदर बाग बगीचे बने हुए थे। जब भगवान बुद्ध वैशाली गए तो उसने उन्हें संघ समेत अपने घर पर आमंत्रित कर यथायोग्य भिक्षा प्रदान की और अपने अति मूल्यवान अम्बवन को भिक्खुसंघ के रहने के लिए दान दे दिया। भगवान बुद्ध के उपदेश

से अम्बपाली भिक्खुनी हो गई और फिर सतत ध्यान साधना करते हुए ज्ञान लाभकर अर्हत् पद को प्राप्त कर गई थी।

***अजातशत्रु (पालि=अजातसत्तु)***- राजगृह के महाराज बिम्बिसार का पुत्र। वह बचपन से ही अपने पिता बिम्बिसार के काबू से बाहर था। युवराज पद पर आसीन हो देवदत्त के कुचक्र में पड़ वह उसका परम भक्त और भगवान बुद्ध का विरोधी हो गया था। भगवान बुद्ध पर एक बार जब वे राजगृह में भिक्खा करने जाते थे अजातशत्रु ने देवदत्त के कहने से नालागिरी नामक एक मद हाथी को छुड़वा दिया था। पर हाथी उनके सामने पहुंचकर घुटने टेक कर बैठ गया। उसने भगवान बुद्ध के मारने के लिए धनुर्धरों को भी भेजा था पर वे भी स्तब्ध रह गए थे और उन्हें मार न सके थे। अजातशत्रु अपने पिता को बंदीगृह में डाल स्वयं उनके राज सिंहासन पर बैठ गया था। महाराज बिम्बिसार ने कारागृह में बड़े कष्ट से अपने प्राण दिए। एक दिन अजातशत्रु अपने पुत्र के जन्म का हाल अमात्यों से पूछकर लौट रहा था। तभी अजातशत्रु को उसके अमात्यों ने पुत्र जन्म का लेख दिया। लेख पढ़कर वह खुशी के मारे झूम उठा। अब वह स्वयं पिता हो गया था। उसने स्वयं अनुभव किया कि पुत्र-स्नेह क्या होता है? उसने सोचा, 'मेरे जन्म लेने पर पिता को भी इसी प्रकार का स्नेह मेरे प्रति उमड़ा होगा, जैसे पुत्र प्राप्ति पर मुझे हो रहा है। वह चिल्ला उठा—'मेरे पिता को मुक्त करो, पिता को मुक्त करो, बंदीमुक्त करो।' अमात्यों ने पिता की मृत्यु का दूसरा लेख अजातशत्रु के हाथ में थमा दिया। पिता की मृत्यु का समाचार पढ़ते ही वह बेचैन हो गया। माता के पास दौड़ा-दौड़ा गया। 'अम्म! क्या मेरे पिता का मुझ पर स्नेह था। माता ने कहा—'अज्ञ! पुत्र!! यह तू क्या कहता है? बाल्यावस्था में तेरी उंगली में फोड़ा हो गया था, दर्द के कारण तू बहुत रो रहा था। सेवकों ने तुझे बहलाना चाहा, समझाना चाहा, उस समय तुम्हारे पिता विनिश्चय-शाला में बैठे थे। सेवकों ने तुम्हें चुप होता न देखकर तुम्हें लेकर विनिश्चय-शाला में ले गए। स्नेहभूत पिता ने तेरी उंगली अपने मुंह में रख ली। उंगली का फोड़ा फूट



गया। तुम्हारे स्नेह के कारण पीप [illegible] प्रकार तुम्हारे पिता का तुम्हारे ऊपर [illegible] लगा। उसने पिता की दाह क्रिया करने का [illegible] पूर्वकृत कर्मों पर पश्चाताप कर विलाप करने लगा। [illegible] प्रति क्रूर व्यवहार के कारण वह [illegible] था कि भगवान बुद्ध राजगृह में पधारे [illegible] से उनके साथ भगवान बुद्ध के [illegible] मन को शांति प्राप्त हुई। [illegible] राजवंश से बड़ी शत्रुता थी। [illegible] था। इसी कारण उसने गंगा [illegible] में अपनी छावनी बनाई थी। [illegible] बाद में पाटलिपुत्र (पटना) हो गई। [illegible] उसकी छावनी थी और भगवान बुद्ध [illegible] विषय में उन्होंने भविष्यवाणी की थी। [illegible] भगवान बुद्ध के पास यह पूछने के लिए [illegible] कि लिच्छवी राजवंश का उच्छेद कब होगा। [illegible] कहा था कि जब तक लिच्छवी [illegible] का पालन करते रहेंगे। तब उनका [illegible] पाएगा। इन सात बातों में से एक मुख्य बात यह थी कि [illegible] उनमें गण (Republic) शासन की प्रथा है [illegible] भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद जब आनंद [illegible] लिए वैशाली जा रहा था तो अजातशत्रु [illegible] किनारे तक गया। इधर से वैशाली के [illegible] ने देखा कि दोनों राजा, एक आगे से और एक [illegible] वे मध्य गंगा में ठहर गए और वहीं [illegible] हो उन्होंने अपने शरीर को भस्म कर दिया। [illegible] दो भाग कर, दोनों राजा अपने-अपने [illegible] बनवाकर उन्होंने उसे स्थापित कर दिया। [illegible] से 475 वर्ष पूर्व हुआ था।

**अनागामी**–अर्हत प्राप्ति के लिए चार अवस्थाएं साधनी आवश्यक हैं. 1. सोतापन्न, 2. सकृदागामी, 3. अनागामी, 4. निर्वाण। अनागामी का अर्थ–दोबारा लौटकर मानव योनी में न आना।

**अनिरुद्ध**–गौतमबुद्ध का चचेरा भाई। यह अमृतोदन का पुत्र था। जब भगवान बुद्ध कपिलवस्तु जाकर, वहां से वापिस लौटने लगे तो आनंद थेर भद्दिय, किम्बिल, भृगु और देवदत्त के साथ नापित उपालि को ले वह प्रव्रज्या ग्रहण करने की इच्छा से उनके पास आया था। भगवान बुद्ध ने सबसे पहले उपालि को प्रव्रजित कर अपना शिष्य बनाया फिर अन्य राजकुमारों को प्रव्रज्या दी। अनिरुद्ध अर्हत हो गया था। भगवान बुद्ध के त्रयस्त्रिंश लोक में जाने पर इसी ने उन्हें अपनी सूक्ष्म दृष्टि से वहां देख आनंद थेर को उनके पास भेजा था। अनुरुद्ध थेर को भगवान बुद्ध का हृदय कहा गया है।

**अर्हत**–वह जो आर्य आष्टांगिक मार्ग के अवलंबन से निर्वाण प्राप्त हो जाता है। ऐसे लोग निर्वाण अवस्था को तो प्राप्त हो जाते हैं, पर बुद्ध नहीं होते।

**अशोक**–सम्राट अशोक, मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त का पौत्र। यह महाराजा बिंदुसार का पुत्र था। चंद्रगुप्त के शासित वृहत् साम्राज्य का शासक हो उसने कलिंग पर चढ़ाई की। वहां युद्ध में मारकाट और हताहत देख उसका मन भर आया। वह बड़ा दयालु और बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। राजसिंहासन पर बैठने के पूर्व वह उज्जैन, तक्षशिला आदि का शासक रह चुका था। उसने भिन्न-भिन्न देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए उपदेशक भेजे थे और बौद्ध धर्म का प्रचार खुतन, वाल्हीक, बाख्तर से लेकर बर्मा और लंका देश तक में कराया। भगवान बुद्ध के अस्थि और धातुओं को स्तूपों से निकलवा कर उसने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में स्तूप बनवाकर वहां उन्हें स्थापित किया। उसके बनवाए 84,000 स्तूप और स्तंभ आदि भारतवर्ष के अनेक स्थानों में पाए जाते हैं। इसके शिलालेख और आदेश बैराट, शहबाजपुर कालपी आदि अनेक स्थानों में मिलते हैं।



**असंख्येयकल्प**–कल्प का एक विभाग। एक कल्प में चार असंख्येयक कल्प होते हैं। चीन देश के बौद्ध इसे सत्रह शून्य के अंक का और तिब्बत और लंका के बौद्ध इसे 97 शून्य के अंक का मानते हैं। यह एक काल्पनिक अवधारणा है।

**असित**–एक मुनि का नाम। चीनी यात्री ने इसे 'आउ' लिखा है। यह बड़ा विद्वान था। यह हिमालय पर्वत की तराई में कपिलवस्तु के पास रहता था। गौतम बुद्ध का जन्म सुन यह उन्हें देखने के लिए शुद्धोदन के राजमहल में आया था। बालक के शरीर पर महापुरुषों के 32 लक्षण और 80 अनुव्यंजन देखकर उसने कहा था कि यह बालक या तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा अथवा धर्मचक्र का प्रवर्तक सम्यक सम्बुद्ध (आध्यात्मिक जगत का चक्रवर्ती सम्राट) होगा।

**आगम**–महायान में बौद्धों के त्रिपिटक की तरह चार आगम हैं दीर्घागम, मध्यागम, संयुक्तागम और एकोत्तरागम।

**आनंद थेर**–यह भगवान बुद्ध का चचेरा भाई था। यह भगवान बुद्ध के पास अनिरुद्ध, भद्दिय, किम्बिल, आनन्द, भृगु, देवदत्त और उपालि के साथ आया था और श्रावक (शिष्य) हुआ था। यह बड़ा स्मृतिमान और भगवान बुद्ध का परम प्रिय शिष्य और उनका उपस्थाक था। उनके परिनिर्वाण प्राप्त होने पर त्रिपिटक में से सूत्रपिटक का संगठकार आनन्द ही हुआ। इसका परिनिर्वाण गंगा के मध्य वशालो की सीमा पर पाटलिपुत्र से एक योजन उत्तर में हुआ था। इसने अपना शरीर योगाग्नि से भस्म कर डाला और इसके शरीर की भस्म को अजातशत्रु और लिच्छवी लोगों ने लेकर आधा-आधा बांटकर अपने-अपने देशों में धम्म स्तूप बनवाकर उनमें रखा। आनंद ने ही स्त्रियों को प्रव्रज्या देने के लिए भगवान बुद्ध से प्रार्थना की थी।

**आर्य-सत्य**–1. दुख, 2. दुख समुदय, 3 दुख निरोध 4. दुख निरोधगामनी प्रतिपदा आर्य सत्य यानी आर्य आष्टांगिक मार्ग।

**उत्पला (उत्पलवर्णा)**–एक भिक्खुनी का नाम। इसे उप्पलवण्णा भी कहते हैं। संकिसा में जब भगवान बुद्ध त्रयस्त्रिंश लोक से उतर रहे तो यह उनके दर्शन के लिए बड़ी चिंतित थी। भगवान बुद्ध की पावन वाणी

[illegible] ने [illegible] स्थान प्राप्त करना चाहती थी। [illegible] में उल्लेख है।

**उपसेन** इनका असली नाम अज्ञातनाम था। यह पंचवर्गीय भिक्षुओं में एक थे। भगवान बुद्ध ने इन पांचों को ही काशी में सारनाथ के मृगदाव में सबसे पहले धम्मचक्क प्रवर्तन सूत्र का उपदेश दिया था। यह बड़े निरपेक्ष और निरभिमान भिक्षु थे। सांकाश्य और पाटलिपुत्र संगायन इस राजगृह में भिक्षुओं सम्मेलन समय भिन्न थे और इसी के आदेश से भगवान बुद्ध के धम्म संदेश को [illegible]

**उपालि** कपिलवस्तु का एक नापित। यह आनंद कुमार, अनिरुद्ध आदि शाक्य कुमार के साथ भगवान बुद्ध के पास जब ये कपिलवस्तु में [illegible] चल रहे थे। भगवान बुद्ध ने इन्हें सबसे पहले प्रव्रज्या देकर अपना शिष्य बनाया था। भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त होने पर प्रथम धम्म संगीति में उपालि महाथेर ने विनयपिटक का संगायन (संग्रह) किया था। इसलिए उपालि को 'विनयधर' भी कहा जाता है। उपालि का परिनिर्वाण उदायी भंते के साथ राज्य काल के [illegible] वर्ष में हुआ था। उपालि को भगवान के कलाकार का विरुद शोभा कहा गया है।

**एलापत्र** एक नाग का नाम। पूर्व जन्म में यह एक योगी था। एक वृक्ष के नीचे ध्यान करता था। समाधि टूटने पर यह क्रुद्ध हो उसके सिर से टकरा खाकर वृक्ष का पत्ता टूट गया। इस पाप से यह नाग योनि को प्राप्त हुआ था। इसने भगवान बुद्ध से [illegible] कारणवश ये यह पूछा था कि मेरा परिनिर्वाण कब होगा।

**ककुच्छंद (ककुसंध)** भगवान तथागत सम्यक सम्बुद्ध से पूर्व की 27 बुद्ध और 24 बुद्ध हैं, पालि भाषा में इन्हें 'पच्चेक बुद्ध' और संस्कृत भाषा में 'प्रत्यक बुद्ध' कहते हैं। सिंगलकाई पुल के परिनिर्वाणिक ग्रंथ महावंश के अनुसार ककुसंध प्रत्यक बुद्ध 22वें क्रम पर आते हैं। ककुसंध बुद्ध का जन्म खेम नामक नगर में हुआ था। अग्निदत्त इनके पिता थे तथा माता का नाम विशाखा था। विधुर और संजीव इनके प्रधान शिष्य थे। बुद्धिज नाम का इनका परिचारक था। सामा तथा धम्मदा



[illegible] प्रधान शिष्याएं थीं। [illegible] संगायन काफी लंबी आयु में हुआ था।

**कोणागमन** ये भी एक प्रत्यक बुद्ध हैं जो [illegible] कश्यप बुद्ध से पहले हुए थे। इनके नगर का नाम [illegible] उदयन इनके पिता थे। माता का नाम [illegible] नामक इनके दो शिष्य थे। [illegible] था। बुमद्रा और [illegible] वृक्ष के नीचे इन्हें बोधि लाभ हुआ था। [illegible] और काफी लंबी आयु पाए थे।

**कनिष्क** कुषाणवंशी एक प्रसिद्ध राजा का नाम, जो पहले [illegible] और पंजाब में शासक थे। इन्हें [illegible] एक बौद्ध भिक्षु के उपदेश से [illegible] धम्म संघ का संगीति कर त्रिपिटक [illegible] का अंध महायानी साहित्य के नाम से प्रसिद्ध है। [illegible] के काल में हुए थे। इन्होंने अनेक धम्म स्तूप बनवाए और [illegible] विहार आदि के निर्माण कराए।

**काश्यप बुद्ध** ये भी एक प्रत्यक बुद्ध हैं। इनका जन्म [illegible] नामक नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम ब्रह्मदत्त [illegible] का नाम धनवती था। [illegible] और भारद्वाज इनके प्रधान [illegible] सर्वमित्र नाम का इनका परिचारक था। [illegible] इनके दो शिष्याएं थीं। [illegible] लंबी आयु तक जीवन रहे। काश्यप इस नाम से [illegible] परिव्राजक थे। इनके नाम से [illegible] काश्यप। इनकी आध्यात्मिक [illegible] के क्रमशः 500, 300 और 200 शिष्य थे। [illegible] धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्त का उपदेश [illegible] तीनों काश्यप बंधु आए। तीनों ने बुद्ध को शिष्यत्व स्वीकार [illegible]

**कौण्डिन्य** पंचवर्गीय भिक्षुओं में सबसे वृद्ध और [illegible] भगवान बुद्ध ने सारनाथ मिगदाय में जिन पंचवर्गीय भिक्षुओं को

प्राप्त किया था, उनमें से कौण्डिन्य ने सबसे पहले अर्हत पद प्राप्त किया था। इसलिए ये भगवान के प्रथम प्रव्रजित शिष्य माने जाते हैं। इन्हें प्रव्रज्या ग्रहण करने का अवसर भगवान ने मृगदाव में सबसे प्रथम धर्मोपदेश धर्मचक्र प्रवर्तन करते समय दिया था।

**गौतम** शाक्य सिंह, नरसिंह, पुरुषोत्तम आदित्यबन्धु की भाँति ही भगवान बुद्ध का एक नाम गौतम भी है।

**चक्रवर्ती**—सारे राज्यों को विजित करनेवाला राजा, जिन्हें राजाओं का राजा या विश्व का शासक (राजा) भी कह सकते हैं। अंगुत्तर निकाय में चक्कवत्ती सुत्त में इसकी विस्तृत व्याख्या की गई है।

**चिंचा** चिंचा का अर्थ पालि भाषा में इमली होता है। मिथ्या तीर्थंकरों के कहने में भगवान बुद्ध पर इसने यह आक्षेप लगाया था कि उसने उससे व्यभिचार किया था और उनसे उसे गर्भ ठहर गया था। वह अपने पेट पर लकड़ी की कठौती व वस्त्र लपेट कर गई थी। कहते हैं कि भगवान के साथ वार्तालाप करने के दौरान उसका पेट ढीला पड़ गया तो पेट पर बंधी लकड़ी की कठौती उसके पैर पर गिर पड़ी। इसके पैर का अंगूठा लहू-लुहान हो गया। असत्य दोषारोपण का भेद खुल जाने के कारण वह अपनी जान बचाकर भागी और गहरी खाई में गिरकर मर गई।

**छंदक** सिद्धार्थ का सारथी। इन्हें बौद्ध साहित्य में छन्न भी कहा गया है। यह कुमार सिद्धार्थ का रथ वाहक घोड़े पर उन्हें सवारी कराने वाला सेवक था। महाभिनिष्क्रमण (लोककल्याणार्थ गृहत्याग) करते समय कुमार सिद्धार्थ ने छंदक की सेवा ली थी। छंदक अपने घोड़े कंथक की पीठ पर कुमार सिद्धार्थ को सवार करके कपिलवस्तु की सीमा से बाहर लाया था। भगवान बुद्ध ने अपने अंतिम उपदेश 'महापरिनिब्बाण सुत्त' में छंदक को ब्रह्मदण्ड (बहिष्कार) का दण्ड देने को कहा था।

**जंबुद्वीप**—भारतवर्ष का प्राचीन नाम। बौद्धों का कथन है कि इस द्वीप का आकार जंबु के पत्ते-सा है और इसके दक्षिण में मेरु है। एक मत के अनुसार इस देश में जामुन के पेड़ों की अधिकता थी। इसलिए इस भूमि का नाम जंबुद्वीप पड़ गया। एक अन्य मत यह भी है कि यहाँ



के निवासियों का रंग जामुन की तरह (गहरा) होता है, इस कारण इसे जंबुद्वीप कह दिया गया। जम्मू कश्मीर का जम्मू क्षेत्र इस कथन का प्रमाण है।

**जीवक**—राजगृह के महाराज बिम्बिसार का एक पुत्र राजवैद्य शालवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। अपने पराक्रम से वह बाल्यकाल में ही राजवैद्य था और इसने तक्षशिला के विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी। यह भगवान बुद्ध का बड़ा भक्त और अनन्यतम श्रद्धालु था। राजगृह में बड़ा प्रतिष्ठालब्ध राजवैद्य था। इसने राजगृह में आम्रवन प्रदान जीवकाम्बवन नामक उद्यान में एक विहार बनवाकर भगवान बुद्ध को अर्पण किया था। इसने एक चिकित्सालय भी स्थापित कर दी था वह भिक्खुओं की धर्मार्थ चिकित्सा किया करता था।

**तथागत** बुद्ध का एक नाम। जो व्यक्ति जैसा कहे वैसा ही करे और जो करे वैसा ही बताए यानी जो व्यक्ति यथाभाषी तथाकारी तथा यथाकारी तथाभाषी होता है—उसे तथागत कहते हैं।

**तुषित**—महायानी संकल्पना के अनुसार एक स्वर्ग का नाम। इसमें बोधिसत्व रहते हैं।

**त्रयस्त्रिंश लोक**—मेरु के चार प्रधान शृंगों के मध्य बसे हुए नगरों को बौद्ध धर्मावलम्बी मानते हैं कि तैंतीस नगरों के होने से ही यह लोक तुषित लोक है, इसी को त्रयास्त्रिंश (तैंतीस लोक भी कहते हैं। बौद्ध धर्मियों का कथन है कि मेरु के चार शृंगों पर चार नगरों की पुरी और चारों शृंगों के बीच आठ आठ पुरी हैं और मध्य में इन नगरों के गृह और प्राचीरादि स्वर्णमय हैं।

**त्रिपिटक**—भगवान बुद्ध के सारे उपदेशों के संग्रह को त्रिपिटक नाम दिया गया है। त्रिपिटक का अर्थ होता बुद्ध उपदेशों के तीन संग्रह या गठरियां। ये तीन पिटारे हैं—1. सुत्तपिटक, 2. विनयपिटक और 3. अभिधम्मपिटक। सम्राट अशोक के पुत्र कुमार महेंद्र जब धर्म के रूप में धर्म प्रचारार्थ लंका द्वीप गए तो उन्होंने वहां इसी त्रिपिटक को उपदेश दिया था। लंका के विख्यात राजा वट्टगामणी के संरक्षण में त्रिपिटक को लिपिबद्ध किया गया था। इसके पहले त्रिपिटक

**तिपिटक**

| विनयपिटक | सुत्तपिटक | अभिधम्मपिटक |
|---|---|---|
| 1. महावग्ग | 1. दीघनिकाय | 1. धम्मसंगणि |
| 2. चुल्लवग्ग | 2. मज्झिमनिकाय | 2. विभंग |
| 3. पाचित्तिय | 2. संयुत्तनिकाय | 3. धातुकथा |
| 4. पाराजिक | 4. अंगुत्तरनिकाय | 4. पुग्गलपञ्ञत्ति |
| 5. परिवार | 5. खुद्दकनिकाय | 5. कथावत्थु |
| | | 6. यमक |
| | | 7. पट्ठान |

1. खुद्दकपाठ
2. धम्मपद
3. उदान
4. इतिवुत्तक
5. सुत्तनिपात
6. विमानवत्थु
7. पेतवत्थु
8. थेरगाथा
9. थेरीगाथा
10. जातक
11. निद्देस
12. पटिसम्भिदामग्ग
13. अपदान
14. बुद्धवंस
15. चरियापिटक



विद्वानों को कण्ठस्थ अथवा कण्ठाग्र रूप में याद रखना पड़ता था। संपूर्ण तिपिटक साहित्य का परिचय प्राप्त करने के लिए निम्न तालिका देखें—

**सकृदागामी**—पुद्गल चार होते हैं—1. सोतापन्न, 2 सकृदागामी, 3 अनागामी और 4. अर्हत। सकृदागामी केवल एक बार ही प्रतिसंधि लेने वाले होते हैं। वे 6 प्रकार के होते है, यथा

1. मनुष्य भूमि में सकृदागामी होकर इसी भव में अनागामी एवं अर्हत् होकर परिनिर्वाणगामी होता है।
2. मनुष्य भूमि में सकृदागामी होकर द्वितीयभव के देवभूमि में प्रतिसंधि लेकर परिनिर्वाण प्राप्त करने वाला होता है।
3. उस देवभूमि में सकृदागामी होकर उसी देवभूमि में परिनिर्वाण को प्राप्त करने वाला होता है।
4. उस देवभूमि में सकृदागामी होकर द्वितीयभव के मनुष्यभूमि में प्रतिसंधि लेकर परिनिर्वाण प्राप्त करने वाला होता है।
5. मनुष्य भूमि में सकृदागामी होकर द्वितीयभव के देवभूमि में प्रतिसंधि लेकर, तृतीयभव में पुनः इस मनुष्य भूमि में प्रतिसंधि लेकर परिनिर्वाण प्राप्त करने वाला होता है एवं
6. देवभूमि में सकृदागामी होकर, द्वितीयभव के इस मनुष्य भूमि में प्रतिसंधि लेकर, तृतीयभव में पुनः देवभूमि में प्रतिसंधि लेकर परिनिर्वाण प्राप्त करने वाला होता है।

इस प्रकार सकृदागामी पुद्गल षड्विध होते हैं। शेष पुद्गल राग, द्वेष एवं मोह को दुर्बल करने के कारण सदृशाचार से **सकृदागामी पुद्गल** कहे जाते हैं।

सकृदागामी पुद्गल एक बार ही इस लोक में आकर दुख का अंत करने में समर्थ होता है। वह काम-राग और व्यापाद के सम्पूर्ण प्रहाण और दूसरी भूमि को पाने के लिए साधना करता है। वह इन्द्रिय, बल, बोध्यंग को मिलाकर उन्हीं संस्कारों को अनित्य, दुख,

[illegible]

[illegible] मकृदागामी मार्ग [illegible]

[illegible]

**त्रिरत्न** [illegible]

**दीपंकर** [illegible]

**देवदत्त** [illegible]

[illegible] भगवान बुद्ध [illegible] भगवान बुद्ध [illegible] अजातशत्रु [illegible] बुद्ध के प्राण लेने का षड्यंत्र [illegible] के लिए [illegible] भगवान बुद्ध [illegible] गृध्रकूट पर चक्रमण करते समय [illegible] प्रायश्चित्त करने के [illegible] श्रावस्ती [illegible] दलदल में समा गया [illegible] भगवान बुद्ध [illegible]

**धर्मवर्द्धन**– अशोक के एक पुत्र का नाम [illegible] का शासक था।

**धातु** भगवान बुद्ध, बुद्ध व किसी अर्हत [illegible] अस्थि [illegible] अस्थि कहते हैं।

**नंद** महाराजा शुद्धोदन की [illegible] सिद्धार्थ के जन्म के [illegible] की मृत्यु के पश्चात [illegible] प्रजापति गौतमी ने ही दिया था। [illegible]

छोटा था। कुछ समय बाद जब नंद का जन्म हुआ तो प्रजापति ने अपने पुत्र को दाइयों को सौंप कर कुमार सिद्धार्थ का पालन-पोषण खुद ही किया था। बुद्धत्व प्राप्ति के अगले वर्ष जब भगवान बुद्ध अपने पिता के बुलावे पर कपिलवस्तु पधारे तो उसी दौरान एक दिन कुमार नंद का जनपद कल्याणी के साथ विवाह, राज्याभिषेक और गृहप्रवेश का कार्यक्रम था। महाराजा सुद्धोदन ने इस अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए भगवान बुद्ध को भी बुला लिया। भगवान बुद्ध वहां आए तो सही मगर नंद को एक प्रकार से विवाह-मण्डप से उठाकर ले गए और उन्हें प्रव्रज्या देकर (भिक्खु बनाकर) अपने विशाल भिक्खुसंघ में शामिल कर लिया।

भगवान की पवित्रवाणी में भिक्खु श्रावकों में 37वां स्थान प्राप्त कर शाक्यकुलभूषण, कपिलवस्तु क्षत्रिय कुलोत्पन्न, महाप्रजापति गोतमी पुत्र नंद जितेन्द्रियों में अग्र हुए।

**निकाय पांच निकाय** सुत्त-पिटक के ग्रंथों को पांच निकायों में विभक्त करने में सुत्तों के विषय का नहीं, किंतु उनके आकार प्रकार का विचार किया गया है। लंबे-लंबे सुत्तों का संग्रह करके उसका नाम 'दीघनिकाय' रखा गया। उसी तरह, मध्यम प्रमाण के सुत्तों के संग्रह को 'मज्झिम निकाय' तथा छोटे-छोटे सुत्तों के संग्रह को 'खुद्दक निकाय' कहा। कुछ छोटे-बड़े दोनों प्रकार के सुत्तों के संग्रह का नाम 'संयुत्त निकाय' रखा गया। सयुत्त निकाय में पांच वर्ग हैं–1. सगाथ वर्ग, 2. निदान वर्ग, 3. स्कंध वर्ग, 4. षडायतन वर्ग और 5. महावर्ग। इसी निकाय के भीतर वर्गों का विभाजन विषय की दृष्टि से किया गया है। दूसरे निकायों में भाग या वर्ग का विभाजन विषय की नहीं, किंतु सुत्तों के आकार की ही दृष्टि से किया गया है।

एकक निपात, दिक निपात, तिक निपात आदि **अंगुत्तर निकाय** में ग्यारह निपात हैं। एक-एक धर्म बताने वाले सुत्त एकक निपात में, दो दो धर्म बताने वाले सुत्त दिक निपात में–तथा ग्यारह-ग्यारह धर्म बताने वाले सुत्त एकादस निपात में हैं। जैसे–



### एकक निपात

**नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि, यो एवं महतो अनत्थाय संवत्तति, यदिदं भिक्खवे पापमित्तता। पापमित्तता भिक्खवे महतो अनत्थाय संवत्तति।''**

***अर्थात***–भिक्खुओ! मैं किसी भी दूसरी चीज को नहीं देखता हूं, जो इतनी ज्यादा अनर्थकर हो, जितनी 'पाप मित्रता'। भिक्खुओ! पापमित्रता बहुत अनर्थकारी है।

### द्विक निपात

**"द्वे मे भिक्खवे, असनिया फलन्तिया न सन्तसन्ति। कतमे द्वे? भिक्खू च खीणासवो, सीहो च मिगराजा। इमे. खो भिक्खवे, द्वे असनिया फलन्तिया न सन्तसन्तीति।''**

***अर्थात***–भिक्खुओ! बिजली कड़कने पर दो ही प्राणी चौंक नहीं पड़ते हैं। कौन से दो? क्षीणाश्रव भिक्खु और मृगराज सिंह। भिक्खुओ! यही दो बिजली कड़कने पर चौंक नहीं पड़ते। 1. क्षीणास्रव भिक्खु नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका 'अहं भाव' बिलकुल निरुद्ध हो गया रहता है। मृगराज सिंह नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका 'अहं-भाव' अत्यंत प्रबल होता है; चौंकने के बदले वह और गरज उठता है कि कौन दूसरा उसकी बराबरी करने आ रहा है।

**निग्रंथ**–इसे 'नाथपुत्र' या 'नाटपुत्त' भी कहते हैं। यह एक कुलक का पुत्र था। जैनी लोग पार्श्वनाथ के अनुयायी को नाथपुत्र कहते हैं। यह प्रधान तीर्थियों में से एक था। फाह्यान का कथन है कि इसने भगवान बुद्ध को विषाक्त भोजन खिलाने के लिए आमंत्रित किया था। निग्रंथ का अर्थ निर्वस्त्र भी किया जाता है यानी बिना वस्त्रों के नंगे रहने वाले जैन मुनि (साधु)।

**पंचशिखा**–एक देव गंधर्व का नाम। इसे शक्र अपने साथ लेकर भगवान बुद्ध के पास 42 प्रश्न पूछने राजगृह में आया था और उसने 42 प्रश्न पृथ्वी पर एक-एक रेखा खींच कर किए थे।

**पिसुन**–मार का एक नाम। दे. मार।

**प्रत्येक बुद्ध** गौतम बुद्ध से पूर्व 27 बुद्ध हो चुके हैं उन्हें प्रत्येक बुद्ध (प्रत्येक बुद्ध) कहा जाता है। गौतम बुद्ध को 'सम्यक सम्बुद्ध' कहा जाता है। अर्थात बुद्धत्व प्राप्त ऐसा बुद्ध जो अपने बुद्धत्व का आनंद स्वयं भोगता रहे, पर उसका अन्य लोगों में प्रचार न करे, पर अन्यों को अपने ज्ञान का उपदेश न करे।

**पसेनदि (प्रसेनजित)** कोशल राज्य के एक राजा का नाम। ये भगवान बुद्ध के समकालीन थे। इसकी भगवान बुद्ध के प्रति बहुत श्रद्धा और समर्पण था। भगवान बुद्ध ने इनके अनुरोध पर श्रावस्ती के कई विहारों में अधिक काल तक धर्मोपदेश किए थे। श्रावस्ती में ही भगवान ने सर्वाधिक यानी 45 में से 25 वर्षावास महाराजा पसेनदि की राजधानी श्रावस्ती में ही बिताए थे।

**बुद्ध** बुद्धत्व प्राप्त करने वाला बोधिसत्व। बुद्ध दो प्रकार के होते हैं (1) बुद्ध और (2) प्रत्येक बुद्ध। बुद्ध वह है जो बुद्धत्व (परम ज्ञान) प्राप्त कर समस्त संसार को धर्म का उपदेश करे। बुद्ध से पहले 27 प्रत्येक बुद्ध हो चुके हैं।

**भगवान बुद्ध** गौतम बुद्ध व शाक्यमुनि का एक प्रचलित नाम।

**बोधिसत्व** बुद्धत्व प्राप्ति के लिए कृत संकल्प सत्त्व (प्राणी), बुद्धत्व प्राप्ति से पूर्व, पूर्व का सिद्धार्थ गौतम का परिचायक नाम। बुद्ध प्राप्ति के लिए बोधिसत्व अवस्था को प्राप्त करना आवश्यक है।

**महाकाश्यप**– भगवान बुद्ध के एक प्रधान शिष्य का नाम। यह राजगृह के पास महातीर्थ नामक गांव के रहनेवाले थे। इनके पिता का नाम कपिल था। इसका पूर्व नाम पिप्पल था। ये परम विद्वान थे। इन्हें भगवान बुद्ध ने अपने तीसरे वर्षावास में राजगृह में प्रव्रज्या ग्रहण कराई थी। सप्तपर्णी गुफा में भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण पर 500 भिक्खुओं के साथ महाराजा अजातशत्रु के संरक्षण में आयोजित प्रथम बौद्ध संगीति का इन्होंने अध्यक्ष पद संभाला था। इनके कुशल नेतृत्व में त्रिपिटक का प्रथम बार संगायन किया गया था। इनमें 32 महापुरुष लक्षणों में से 7 लक्षण विद्यमान थे। इन्हें भगवान बुद्ध के धुतवादी (धुतांगधारी) शिष्यों में अग्रणीय माना गया है।



**महाप्रजापती** कुमार सिद्धार्थ (भगवान बुद्ध) की विमाता। वह महामाया की छोटी बहिन थी। इसी ने कुमार सिद्धार्थ का बाल्यावस्था में पालन पोषण किया था। महाराज शुद्धोदन के देहांत हो जाने पर वह प्रव्रज्या ग्रहण करने के लिए भगवान बुद्ध के पास गई। भगवान बुद्ध ने स्त्रियों को प्रव्रज्या देने से साफ इंकार किया पर जब आनंद से अनुरोध किया तो उन्होंने उन सहित 500 शाक्य महिलाओं को प्रव्रज्या ग्रहण कराई थी। इसके एक ही पुत्र नंद नाम का था जिसे भगवान बुद्ध कपिलवस्तु में जाकर शुद्धोदन के जीवन काल ही में प्रव्रज्या देकर अपने साथ ले आए थे। इनकी एक पुत्री भी थी जिसका नाम 'नंदा' था। भिक्खुनीसंघ की प्रथम नायिका होने का गौरव प्राप्त हुआ।

**महामौद्गल्यान** यह राजगृह के पास कोलित ग्राम का रहनेवाला सुजात नामक ब्राह्मण का पुत्र था। यह सारिपुत्र के साथ राजगृह में भगवान बुद्ध का शिष्य हुआ था। पहले यह संजय परिव्राजक का अनुयायी था। यह सप्तपर्णी गुहा के प्रथम धर्मसंघ में महाकाश्यप के त्रिपिटक के संग्रह में सम्मिलित था। जब भगवान त्रयस्त्रिंश स्वर्ग में अपनी माता को अभिधर्म का उपदेश देने गए थे तो जीनरुद्ध ने इसी को उनके पास यह पूछने के लिए भेजा था कि अब और कहां उतरेंगे।

**महिशासक** सर्वास्तिवाद निकाय के चार निकायों में से एक निकाय।

**मुचलिंद (नाग जाति का व्यक्ति)** एक नाग का नाम। यह गया के पास ह्रद में रहता था। ह्रद के पास ही मुचलिंद का एक पेड़ भी था। भगवान बुद्ध बोधिज्ञान प्राप्त कर जब उस ह्रद के पास गए तो सात दिन तक मूसलाधार वर्षा हुई थी। उस समय इस नाग ने भगवान बुद्ध को अपने फन से सात दिन तक वर्षा से बचाकर रखा था।

**मैत्रेय** ये एक बोधिसत्व हैं जो भविष्य के बुद्ध होंगे। ये इस समय तुषित स्वर्ग में हैं।

**मोगल्लान** दे. महामौद्गल्यान।

**योजन** यों तो पुराणों के अनुसार चार कोस व 8 मील का योजन होता है पर फाह्यान का योजन 6.5 मील का और सुएनच्वांग का योजन 4.5 मील से कुछ अधिक का पड़ता है।

**राहुल**–गौतमबुद्ध के पुत्र का नाम। इसे भगवान बुद्ध ने कपिलवस्तु पहुंचकर सारिपुत्र से प्रव्रज्या दिलवाई थी। यह वैभाषिक नामक दर्शन का आचार्य था। यह सामनेरों का अग्रगण्य और पूज्य माना जाता है।

**ली**–चीन देश का दूरी मापने का एक पैमाना जो एक मील के छठवां हिस्से के बराबर होता है।

**वज्रपाणि**–मल्लराज-कुश नगर के राजा का नाम।

**बिम्बिसार**–मगध के एक राजा का नाम। ये बुद्ध के समकालीन राजा थे। इनकी राजधानी राजगृह (गिरिव्रज) थी। भगवान बुद्ध को इनसे बड़ा प्रेम था। इसके कारण भगवान बुद्ध राजगृह में प्रायः जाते रहते थे। अजातशत्रु इसका पुत्र था। वह वृद्धावस्था में उत्पन्न हुआ था। राजा बिम्बिसार ने एक और नगर राजगृह नामक गिरिव्रज से अलग बनाया था। जब अजातशत्रु बड़ा हुआ तो वह अपने पिता को बंदी करके स्वयं राज्य पर बैठा। राजा बिम्बिसार बंदीगृह में पड़ा बड़ी यातनाएं भोगकर गिरिव्रज में मरा। फाह्यान ने गिरिव्रज को प्राचीन राजगृह लिखा है और बिम्बिसार को उसका बसाने वाला लिखा है।

**विनय**–(1) आचार, सदाचार। (2) त्रिपिटक के तीन पिटकों में दूसरा पिटक है विनयपिटक, जिसमें भिक्खुओं के आचार-व्यवहार विधि निषेधों का वर्णन है। विनयपिटक को भिक्खुसंघ का संविधान माना जाता है। दे. त्रिपिटक।

**विमोक्ष स्तूप**–ऐसा धम्म स्तूप जिसमें द्वार हो और उसमें यथासमय धातु रखी व उससे बाहर निकाली जा सके।

**विडूडभ**–यह श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित का पुत्र था। यह शाक्यों की एक महिला वासभखत्तिया से उत्पन्न हुआ था। इसने शाक्यों पर आक्रमण किया था, पर भगवान बुद्ध उसे मार्ग में मिल गए थे और उन्होंने इसे लौटा दिया था। फिर कुछ दिन बीतने पर फिर उसने कपिलवस्तु पर आक्रमण किया और कपिलवस्तु के शाक्यों का संहार कर डाला। कपिलवस्तु में विनाशलीला करने के बाद श्रावस्ती लौटते समय वह अपनी सेना सहित नदी किनारे सोते हुए बह गया। विडूडभ को विरुद्धक कहना सरासर गलत है।



**विशाखा**–इसे महाप्रज्ञावती विशाखा भी कहते हैं। यह प्रसेनजित (पसेनदि) के कोषाध्यक्ष पुण्यवर्द्धन की स्त्री थी। इसने भगवान बुद्ध के लिए पूर्वाराम नामक एक विहार बनवाया था। यह बड़ी दानशील और प्रज्ञावती थी।

**विहार**–भिक्खुसंघ के रहने का स्थान। बौद्ध भिक्खुओं का विहार। इसे बुद्ध विहार या संघाराम भी कहते हैं। पर बुद्ध विहार को बौद्ध विहार कहना गलत है।

**शक्र**–एक काल्पनिक देवता इंद्र व देवराज। यह त्रयस्त्रिंश लोक का राजा है। यह चातुर्महाराज के अंतर्गत भी है। दे. त्रयस्त्रिंश।

**शाक्यमुनि**–गौतमबुद्ध के बहुत से नाम हैं। उनमें से एक नाम शाक्यमुनि भी है। शाक्य जाति में उत्पन्न एक महान मुनि।

**श्रमण**–बौद्ध भिक्खु जिसने प्रव्रज्या ग्रहण की हो।

**स्रोतापन्न**–वह उपासक, श्रावक अथवा भिक्खु जो निर्वाण की ओर उन्मुख है। चार प्रकार के श्रावकों में प्रथम श्रेणी का श्रावक।

**संघाटी**–भिक्खु के चीवर के तीन भाग होते हैं। यथा–1. अन्तरवासक (=लुंगी), 2. उत्तरासंग (=चादर), और 3. संघाटी (=दोहरी चादर)। वर्षा के अंत में यानी कार्तिक पूर्णिमा के दिन उपासकों द्वारा भिक्खुओं को संघाटी दान में दी जाती है। कारण यह कि इस समय से सर्दी के मौसम की शुरुआत हो जाती है। इस संघाटी को भिक्खुसंघ अपनी ओर से किसी सम्मानित भिक्खु को देता है। इसी चीवर को कठिन चीवर भी कहते हैं, क्योंकि इसकी प्राप्ति बहुत कठिन है। (विनयपिटक, 20-47, पृ. 79, सम्यक प्रकाशन)

**सकृदागामी**–वह श्रावक जो शीघ्र अनागामी व अर्हंत होनेवाला हो। वह श्रावकों में दूसरी श्रेणी है।

**सप्तरत्न**–1. सोना, 2. चांदी, 3. मरकत, 4. हीरा, 5. मणि, 6. पद्मराग और 7. स्फटिक।

**सर्वास्तिवाद**–बौद्ध धर्म के चार प्रधान निकायों में से एक निकाय। इसके चार आंतर निकाय थे। थेरवाद, वज्जिपुत्रक, महिसासक और धर्मगुप्तिक।

**साबी**–अर्बी साबन। इसे अंग्रेजी में (Sabian) कहते हैं। अरब देशवासी।

**सामनेर (श्रामनेर)**–बौद्ध ब्रह्मचारी जिसने विधिवत प्रव्रज्या ग्रहण न की हो।

**सूत्र**–बुद्ध वचन को पालि भाषा में सुत्त और हिंदी में 'सूत्र' कहते हैं। त्रिपिटक में सूत्रों का ही संग्रह है।

**सारिपुत्र**–भगवान बुद्ध के एक प्रमुख शिष्य का नाम। यह उपतिष्य ग्राम निवासी वंगन्त नामक ब्राह्मण का पुत्र था। भगवान बुद्ध का यह परम विश्वासपात्र भिक्खु था, इस कारण इन्हें 'धम्म सेनापति' भी कहा जाता था। भगवान बुद्ध के जीवन काल ही में इनका परिनिर्वाण अपने गांव के घर में ही हुआ था।

**सुदत्त**–इन्हें अनाथपिण्डिक भी कहते थे। उनका यह नाम अनाथ लोगों को पिण्ड (भोजन) का दान कराते रहने के कारण पड़ा था। यह श्रावस्ती का एक धनाढ्य सेठ और महाराजा प्रसेनजित (पसेनदि) का खजांची था। इसने 54 करोड़ स्वर्ण मुद्रा खर्च करके जिसमें 18 करोड़ जमीन मूल्य, 18 करोड़ निर्माण खर्च, 18 करोड़ उद्घाटनोत्सव खर्च सम्मिलित है। श्रावस्ती में जेतवन विहार बनवाया था। जेतवन की भूमि को उसने सारी पृथ्वी पर मोहर बिछाकर खरीदा था। भगवान बुद्ध को यह विहार बहुत प्रिय लगता था। सुदत्त बहुत दानशील था।

**सुभद्र**–भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के समय सुभद्र नामक एक परिव्राजक कुसिनारा (कुशीनगर) में ठहरा हुआ था। उसने जब यह सुना कि आज रात के अंतिम पहर में भगवान बुद्ध का परिनिर्वाण हो जाएगा। तब उसके मन में आया कि मैंने बड़े-बड़े आचार्यों और ज्ञानवान लोगों को यह कहते सुना है कि बुद्ध जैसा पूर्ण ज्ञानी महापुरुष न पहले कोई पैदा हुआ है और न आगे होगा। मेरे मन में धर्म के विषय में कुछ संशय है। मुझे विश्वास है कि भगवान बुद्ध अपने परम ज्ञान के द्वारा मेरे संशयों को दूर कर देंगे। ऐसा विचार कर सुभद्र मल्लों के शालवन में पहुंचकर आनंदथेर के निकट जाकर बोला, "भंते! मुझे पता चला है कि भगवान बुद्ध आज ही रात्रि के पिछले पहर में परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। मुझे धर्म के विषय में कुछ संदेह है। मैं भगवान बुद्ध के दर्शन करके उनसे अपना संदेह दूर करना चाहता



हूं।" यह सुनकर भिक्खु आनंद बोले, "नहीं सुभद्र अब नहीं, भगवान को अब कष्ट मत दो। वह परिनिर्वाण शय्या पर हैं और विश्राम कर रहे हैं।" सुभद्र ने दूसरी और तीसरी बार भी अपनी बात दोहराई। तीनों बार आनंद ने सुभद्र को एक ही उत्तर दिया।

भगवान लेटे-लेटे ही आनंद थेर और सुभद्र परिव्राजक के बीच की बातचीत को सुन रहे थे। जिस महापुरुष ने 45 वर्षों तक अखिन्न चित्त से लोगों के लिए धम्म-अमृत की वर्षा की हो, वह अन्तिम समय में अपनी महान करुणा को कैसे भूल सकते हैं। भगवान बुद्ध ने आनंद को बुलाकर कहा, "आनंद! सुभद्र को तथागत के पास आने से मत रोको। सुभद्र हमसे जो पूछेगा वह केवल सत्य को जानने की इच्छा से ही पूछेगा, हमें कष्ट देने के उद्देश्य से नहीं। उसके पूछने पर हम जो कुछ उसे समझा देंगे, वह बहुत जल्दी समझ जाएगा।" तब आनंद ने सुभद्र के पास जाकर कहा, 'सुभद्र! अब तुम भगवान बुद्ध के पास जा सकते हो। भगवान तुमको बुला रहे हैं।' तब सुभद्र परिव्राजक भगवान बुद्ध के निकट जाकर प्रणाम कर एक ओर बैठ गया। इस प्रकार बैठे हुए सुभद्र ने भगवान बुद्ध से हाथ जोड़कर प्रश्न किया, 'भगवान! ये जितने भी धर्म-गुरु हैं, जिनके पीछे समूह हैं, जो प्रसिद्ध हैं, जो धर्मों के संस्थापक के रूप में ज्ञात हैं, जिन्हें जनता संत मानती है। जैसे पूरणकस्सप, मक्खलिगोसाल, अजित केसकम्बली, पकुध कच्चायन, सञ्जयबेलट्ठीपुत्त तथा निगण्ठ-नाथपुत्त (महावीर) इन सब ने जैसा वे कहते हैं कि उन्होंने सत्य ज्ञान प्राप्त किया है। भगवान क्या ये सभी आचार्य सत्य ज्ञान के जानकार हैं। या इनमें से कोई जानकार है और कोई-कोई नहीं।'

भगवान बुद्ध बोले, 'सुभद्र! इस चक्कर में मत पड़ो कि किसी ने ज्ञान प्राप्त किया है या नहीं किया। मैं तुम्हें सच्चे धर्म का उपदेश देता हूं। इसे ध्यान से सुनो।"

'भगवान बहुत अच्छा'।

तब भगवान ने कहा, "सुभद्र! जिस धम्म विनय में आष्टांगिक मार्ग नहीं है; उसमें कोई सत्य ज्ञान प्राप्त आचार्य भी नहीं है। जिस धम्म

विनय में आष्टांगिक मार्ग है, उसी धम्म में सत्य ज्ञान प्राप्त आचार्य भी हैं। सुभद्र मेरे धर्म का मार्ग आष्टांगिक मार्ग है। इसलिए मेरे धर्म में श्रमण भी हैं, सोतापन्न भी हैं और अर्हत भी हैं। सुभद्र उन्तीस वर्ष की आयु में मैं कल्याण पथ का पथिक बना। अब पचास वर्ष से अधिक हो गए हैं, जब से मैं धम्म (सच्चे धर्म) का पक्ष ग्रहण किए हुए हूं।"

भगवान बुद्ध के उपदेश को सुनकर सुभद्र बोला, 'भगवान! आपके मुखारविन्द से धम्म उपदेश सुनकर मेरे ज्ञान-नेत्र खुल गए हैं। आपने मुझे सत्य का ज्ञान करा दिया। इसलिए मैं आपके धम्म की शरण ग्रहण करता हूं।' इसके बाद भगवान बुद्ध ने भिक्खुओं को संबोधित करते हुए कहा, "भिक्खुओ! हो सकता है कि तुम यह सोचने लगो कि अब हमारे गुरु चले गए। अब हमारा कोई मार्ग-दर्शक नहीं रहा। तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिए। मेरे बाद मेरा दिया हुआ धम्म ही तुम्हारा शास्ता होगा और वही मेरा उत्तराधिकारी होगा। भिक्खुओ! यदि तुम में से किसी को भी बुद्ध, धम्म, संघ इन तीनों के विषय में कोई शंका हो, तो अभी समय है, पूछ लो। बाद में न पछताना कि हमारा धर्मगुरु हमारे सम्मुख था, हमने पूछकर अपनी शंका न मिटाई।" ऐसा कहने पर भी भिक्खु चुप रहे। तब दूसरी बार और तीसरी बार भी भगवान बुद्ध ने अपनी बात दोहराई, फिर भी भिक्खु मौन ही रहे। तब भगवान बुद्ध ने कहा, "हो सकता है कि मेरे प्रति सम्मान होने के कारण तुम चुप हो। निडर होकर पूछो।" तब भी भिक्खु चुप ही रहे। तब भिक्खु आनंद ने भगवान बुद्ध को कहा, "भगवान यह कैसी अद्भुत और आश्चर्यजनक बात है कि आप अपने इस भिक्खुसंघ से ऐसी बात कहते हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इस भिक्खुसंघ में ऐसा कोई एक भी नहीं है, जिसे बुद्ध के बारे में शंका हो, धम्म के बारे में शंका हो और संघ के बारे में शंका हो।"

इसके बाद भगवान बुद्ध ने भिक्खु आनंद थेर को कहा, "आनंद! यदि मेरे जाने के बाद कोई छोटा-मोटा नियम जो बुद्ध धम्म और बुद्ध के अनुयायियों के लिए हानिकारक सिद्ध हो तो उसका सुधार भी किया जा सकता है और आनंद! चुन्द अथवा अन्य किसी को यह ख्याल न हो कि चुन्द का भोजन खाने के कारण भगवान बुद्ध का



परिनिर्वाण हो गया। तुम इस बात का पूरा ख्याल रखना कि जनता में यह बात न फैलने पाए। क्योंकि इससे चुन्द मुसीबत में पड़ सकता है। इसके बाद भगवान बुद्ध ने सभी को संबोधन करके अपने अंतिम वाक्य बोले, **"समस्त संयोग और संयोगों से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं का वियोग और विनाश अवश्य होता है। तुम लोग सचेत और एकाग्र-चित्त होकर अपने-अपने लक्ष्य की प्राप्ति करो।"** इस प्रकार संसार के सर्वोपरि महान धर्मगुरु अपनी अंतिम अवस्था में अपने शिष्यों को अंतिम उपदेश देकर इस संसार से अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर गए। इस प्रकार संसार का वह दीप (भुवन-प्रदीप) बुझ गया।

**सुरंगमसूत्र**—इसे सुरंगम-समाधि-सूत्र भी कहते हैं। यह महायान के सूत्रपिटक में सूत्र के अंतर्गत है।

**स्तूप**—एक घंटाकार भवन। यह दो प्रकार का होता है। एक वह जिसमें अवकाश खाली होता है और भीतर जाने का मार्ग होता है। इसे 'विमोक्ष स्तूप' कहते हैं। दूसरा वह जिसमें भीतर जाने का मार्ग नहीं होता यानी अंदर से ठोस होता है। दोनों के भीतर धातुगर्भ होता है। द्वितीय प्रकार का स्तूप भगवान बुद्ध व अर्हतों के परिनिर्वाण स्थान व उनके जीवन से संबंधित घटनास्थलों पर बनता है। परिनिर्वाण स्थान के स्तूप में प्रायः शरीर-धातु रखे होते हैं और शेष स्थानों में धातु नहीं होते। स्तूप भीतर गर्भ में धातुओं को रखकर उनके ऊपर स्तूप बनाया जाता है। इन्हें चैत्य भी कहते हैं।

**॥भवतु सब्बमंगलं॥**

## सम्यक प्रकाशन : एक परिचय

सम्यक प्रकाशन भगवान बुद्ध और उनके द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म, बोधिसत्व बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर, महान सम्राट अशोक तथा देश के अन्य सामाजिक क्रांतिकारियों, समाज सुधारकों व उन महान विभूतियों से सम्बंधित साहित्य के प्रकाशन एवं उनके मिशन के व्यापक प्रचार-प्रसार और पुनर्स्थापन को समर्पित है। यह प्रकाशन सस्ते और रियायती मूल्य पर मूल्यवान, दुर्लभ एवं सचित्र साहित्य उपलब्ध कराता है। अब तक सम्यक प्रकाशन द्वारा 14 भाषाओं में 2000 से अधिक छोटी-बड़ी महत्वपूर्ण पुस्तकें बौद्धाचार्य शांति स्वरूप बौद्ध प्रकाशित की जा चुकी हैं। समाज के प्रमुख क्रांतिकारियों एवं समाज-सुधारकों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दृष्टिगत रखते हुए सरल भाषा में सचित्र पुस्तकें तैयार करने में इस प्रकाशन का बहुत बड़ा योगदान है। इसकी स्थापना विश्व प्रसिद्ध चित्रकार बौद्धाचार्य शांति स्वरूप बौद्ध ने की है, जो सरकारी राजपत्रित पद को तिलांजलि देकर सांस्कृतिक, कलात्मक, साहित्यिक सामाजिक क्रांति की सफलता के लिए अपने जीवन और समस्त साधनों सहित पूर्णतः समर्पित हैं।

सम्यक प्रकाशन का संपादक मंडल प्रतिष्ठित एवं जनप्रिय विद्वानों से युक्त है, जो उचित जांच-परख और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर पुस्तकों का चयन व प्रकाशन का अनुमोदन करता है। सम्यक प्रकाशन की विगत वर्षों में बौद्ध तथा आंबेडकरी साहित्य के अनेक महत्वपूर्ण अमूल्य ग्रंथों के प्रकाशन में प्रमुख भूमिका उल्लेखनीय है। भविष्य में भी यह प्रकाशन अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित रहेगा। नारी कल्याण व समाज को अंधविश्वास, ढोंग और पाखंड के चंगुल से निकालने हेतु शीर्ष स्तरीय लोकोपयोगी साहित्य के प्रकाशन के लिए सम्यक प्रकाशन पूर्णतः कटिबद्ध है।

सम्यक प्रकाशन बौद्ध साहित्य, इतिहास एवं संस्कृति से सम्बद्ध साहित्य को गौरवशाली ढंग से प्रकाशित करने के लिए प्रयासरत है। वास्तव में इस प्रकाशन द्वारा प्रकाशित साहित्य इस देश के दलित, शोषित, प्रताड़ित, वंचित एवं महिला समाज के लिए एक वैकल्पिक मीडिया की भूमिका निभा रहा है। हर्ष का विषय यह है कि इस प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अनेक ग्रंथ राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा पुरस्कृत किए जा चुके हैं। बेरोजगार युवकों को साहित्य की बिक्री के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराना परम ध्येय है।

सम्यक प्रकाशन
32/3, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली—110063
मो. : 9810249452, 9818500161
Email : hellosamyak19650@gmail.com
Web : www.samyakprakashan.in

ISBN : 978-93-89285-07-9

सम्यक प्रकाशन द्वारा चीनी यात्रियों पर प्रकाशित अन्य पुस्तकें

₹ 350

₹ 200

₹ 475

₹ 375